# शिवाजी विश्वविद्‌यालय, कोल्हापुर
# महाराष्ट्र

## दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र

**बी. ए. भाग–1 हिंदी**

**सत्र–1 पेपर SEC-I**

# पत्रकारिता

**सत्र–2 पेपर SEC-II**

# समाचार लेखन

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नुसार पुनर्रचित पाठ्यक्रम
(शैक्षिक वर्ष 2024-25 से)

© **कुलसचिव,** शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
**प्रथम संस्करण :** 2025
बी. ए. भाग 1 (हिंदी)
सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रतियाँ :

■

**प्रकाशक :**
**डॉ. व्ही. एन. शिंदे**
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

**मुद्रक :**
**श्री. बी. पी. पाटील**
अधीक्षक,
शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

ISBN- 978-93-48427-56-4

★ दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी- शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर-416 004. (भारत)

## दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर


■ सलाहकार समिति ■

**प्रो. (डॉ.) डी. टी. शिर्के**
कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

**प्रो. (डॉ.) पी. एस. पाटील**
प्र-कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

**प्रो. (डॉ.) प्रकाश पवार**
राज्यशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

**प्रो. (डॉ.) एस. विद्याशंकर**
कुलगुरू, केएसओयू
मुक्तगंगोत्री, म्हैसूर, कर्नाटक-५७० ००६

**डॉ. राजेंद्र कांकरिया**
जी-२/१२१, इंदिरा पार्क,
चिंचवडगांव, पुणे-४११ ०३३

**प्रो. (डॉ.) सीमा येवले**
गीत-गोविंद, फ्लॅट नं. २, ११३९ साईक्स एक्स्टेंशन,
कोल्हापुर-४१६००१

**डॉ. संजय रत्नपारखी**
डी-१६, शिक्षक वसाहत, विद्यानगरी, मुंबई विश्वविद्यालय,
सांताक्रुझ (पु.) मुंबई-४०० ०९८

**प्रो. (डॉ.) कविता ओझा**
संगणकशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

**प्रो. (डॉ.) चेतन आवटी**
तंत्रज्ञान अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

**प्रो. (डॉ.) एम. एस. देशमुख**
अधिष्ठाता, मानव्य विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

**प्रो. (डॉ.) एस. एस. महाजन**
अधिष्ठाता, वाणिज्य व व्यवस्थापन विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

**प्रो. (डॉ.) श्रीमती एस. एच. ठकार**
प्रभारी अधिष्ठाता, विज्ञान व तंत्रज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

**प्राचार्या (डॉ.) श्रीमती एम. व्ही. गुळवणी**
प्रभारी अधिष्ठाता, आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास विद्याशाखा
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

**डॉ. व्ही. एन. शिंदे**
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

**डॉ. ए. एन. जाधव**
संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

**श्रीमती सुहासिनी सरदार पाटील**
वित्त व लेखा अधिकारी,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

**डॉ. के. बी. पाटील** (सदस्य सचिव)
प्र. संचालक, दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

## हिंदी अध्ययन मंडल


**अध्यक्ष**

**प्रो. डॉ. साताप्पा शामराव सावंत**
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली

**सदस्य**

- **प्रो. डॉ. नितीन चंद्रकांत धावडे**
  मुधोजी कॉलेज, फलटण, जि. सातारा

- **डॉ. श्रीमती मनिषा बाळासाहेब जाधव**
  आर्टस अ‍ॅण्ड कॉमर्स कॉलेज, ११७, शुक्रवार पेठ, सातारा-४१५ ००२.

- **प्रो. (डॉ.) श्रीमती वर्षाराणी निवृत्ती सहदेव**
  श्री विजयसिंह यादव कॉलेज, पेठ वडगाव, जि. कोल्हापुर

- **प्रो. डॉ. हणमंत महादेव सोहनी**
  सदाशिवराव मंडलीक महाविद्यालय, मुरगुड, ता. कागल, जि. कोल्हापुर

- **प्रो. (डॉ.) अशोक विठोबा बाचुळकर**
  आजरा महाविद्यालय, आजरा, जि. कोल्हापुर

- **डॉ. भास्कर उमराव भवर**
  कर्मवीर हिरे आर्टस, सायन्स, कॉमर्स अ‍ॅण्ड एज्युकेशन कॉलेज, गारगोटी, ता. भुदरगड, जि. कोल्हापुर

- **डॉ. संग्राम यशवंत शिंदे**
  आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा, ता. जावळी, जि. सातारा

- **प्रो. डॉ. अनिल मारुती साळुंखे**
  यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, करमाळा, जि. सोलापुर-४१३२०३

- **डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण**
  श्रीमती जी.के.जी. कन्या महाविद्यालय, जयसिंगपूर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर

- **प्रो. डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत**
  प्रा. डॉ. एन. डी. पाटील महाविद्यालय, मलकापुर, जि. कोल्हापुर

- **प्रो. डॉ. उत्तम लक्ष्मण थोरात**
  आदर्श कॉलेज, विटा, जि. सांगली

- **डॉ. परसराम रामजी रगडे**
  शंकरराव जगताप आर्टस अ‍ॅण्ड कॉमर्स कॉलेज, वाघोली, ता. कोरेगाव, जि. सातारा

# अपनी बात

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की दूरशिक्षा योजना के अंतर्गत बी. ए. भाग–1 हिंदी विषय के छात्रों के लिए निर्मित अध्ययन सामग्री नियमित रुप से प्रवेश न ले पाने वाले छात्रों की असुविधा को दूर करने के संकल्प का सुफल है। इसमें एक ओर विश्वविद्यालय की सामाजिक संवेदनशीलता दिखाई देती है, तो दूसरी ओर शिक्षा से वंचित छात्रों को अध्ययन सामग्री सुविधा प्रदान करने की प्रतिबद्धता। बी. ए. 1 के छात्र प्रस्तुत स्वयं–अध्ययन सामग्री से लाभान्वित होंगे, यह विश्वास है।

दूरशिक्षा के छात्रों का महाविद्यालयों तथा अध्यापकों से प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से कोई संबंध नहीं आता। उनकी इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए अध्ययन सामग्री को सरल और सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र का स्वरुप तथा अंक–वितरण को ध्यान में रखकर अध्ययन–सामग्री को आवश्यकतानुसार विस्तृत तथा सूक्ष्म रुप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हमें आशा ही नहीं, बल्कि विश्वास भी हैं कि प्रस्तुत अध्ययन सामग्री बी. ए. 1 के छात्रों के लिए उपादेय सिद्ध होगी।

प्रस्तुत सामग्री सामूहिक प्रयास का फल है। इकाई लेखकों ने अपनी–अपनी इकाईयों का लेखन समय पर पूरा कर इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिवाजी विश्वविद्यालय के मा. कुलगुरू, कुलसचिव, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय विकास मंडल के संचालक, दूरशिक्षा विभाग के संचालक एवं उनके सभी सहयोगी सदस्यों ने समय–समय पर आवश्यक सहयोग दिया। अतः इन सभी के प्रति आभार प्रकट करना हमारा कर्तव्य है।

धन्यवाद।

**– संपादक**

| | **सत्र** 1 | **सत्र** 2 |
|---|---|---|
| ★ **प्रो. (डॉ.) सिद्राम खोत**<br>प्रा. डॉ. एन. डी. पाटील महाविद्यालय, मलकापुर,<br>ता. शाहुवाडी, जि. कोल्हापुर | **1, 2** | **-** |
| ★ **डॉ. नरसिंग एकिले**<br>शिवराज कॉलेज ऑफ आर्टस ॲण्ड कॉमर्स, गडहिंग्लज,<br>ता. गडहिंग्लज, जि. कोल्हापुर | **-** | **1, 2** |

■ **सम्पादक** ■

**प्रो. (डॉ.) सिद्राम खोत**
प्रा. डॉ. एन. डी. पाटील महाविद्यालय,
मलकापुर, ता. शाहुवाडी, जि. कोल्हापुर

**प्रो. (डॉ.) साताप्पा सावंत**
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली,
जि. सांगली

## अनुक्रमणिका


| इकाई | पाठ्यविषय | पृष्ठ |
|---|---|---|
| | **सत्र-1 पेपर SEC-I पत्रकारिता** | |
| 1. | पत्रकारिता का स्वरूप, पत्रकारिता का उद्देश्य, पत्रकारिता की विशेषताएँ | 1 |
| 2. | हिंदी पत्रकारिता का कालविभाजन भारतेंदु युग की पत्रकारिता, द्विवेदी युग की पत्रकारिता, गांधी युग की पत्रकारिता | 16 |
| | **सत्र-2 पेपर SEC-II समाचार लेखन** | |
| 1. | समाचार लेखन समाचार का स्वरूप, समाचार के मूल तत्त्व, समाचार का महत्त्व, समाचार संकलन के स्त्रोत | 27 |
| 2. | समाचार लेखन महाविद्यालयीन समारोह, प्राकृतिक आपदा, सामाजिक समारोह, क्रीड़ा समाचार | 43 |

हर इकाई की शुरूआत उद्देश्य से होगी, जिससे दिशा और आगे के विषय सूचित होंगे-

(१) इकाई में क्या दिया गया है।

(२) आपसे क्या अपेक्षित है।

(३) विशेष इकाई के अध्ययन के उपरांत आपको किन बातों से अवगत होना अपेक्षित है।

स्वयं-अध्ययन के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं, जिनके अपेक्षित उत्तरों को भी दर्ज किया है। इससे इकाई का अध्ययन सही दिशा से होगा। आपके उत्तर लिखने के पश्चात् ही स्वयं-अध्ययन के अंतर्गत दिए हुए उत्तरों को देखें। आपके द्वारा लिखे गए उत्तर (स्वाध्याय) मूल्यांकन के लिए हमारे पास भेजने की आवश्यकता नहीं है। आपका अध्ययन सही दिशा से हो, इसलिए यह अध्ययन सामग्री (Study Tool) उपयुक्त सिद्ध होगी।

# इकाई –1 पत्रकारिता
## पत्रकारिता का स्वरूप, पत्रकारिता का उद्देश्य
## पत्रकारिता की विशेषताएँ

**अनुक्रम –**

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 पत्रकारिता का स्वरुप

1.3.2 पत्रकारिता का उद्देश्य

1.3.3 पत्रकारिता की विशेषताएँ

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

## 1.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप –

1) पत्रकारिता शब्द के अर्थ और स्वरुप से परिचित होंगे।

2) पत्रकारिता के उद्देश से परिचित हो जाएँगे।

3) पत्रकारिता की विशेषताओं को समझने में सक्षम होंगे।

4) पत्रकारिता में कार्य करने की रुचि विकसित करेंगे।

## 1.2 प्रस्तावना :

पत्रकारिता को आज के युग में अत्याधिक महत्त्व प्राप्त हुआ है। समाज की प्रगति तथा विकास में इस क्षेत्र का योगदान सराहनीय है। मनुष्य जिज्ञासु होने के कारण वह अपने चारों ओर घटनेवाली घटनाओं को जानना चाहता है, उसकी जानने की इच्छा आज अपने प्राप्त अथवा देश तक ही सीमित न रहकर दुनिया की

विभिन्न गतिविधियों तक बढ गई है। पत्रकाररिता के माध्यम से एक नई सोच, नई दृष्टि तथा नई आशा पल्लवित होती है। श्री. रामकृष्ण खाडिलकर के शब्दों में, ''ज्ञान और विचार शब्दों तथा चित्रों के रुप में दूसरों तक पहुँचना ही पत्रकारिता है।''

## 1.3 विषय विवेचन :

अब हम पत्रकारिता का स्वरुप, पत्रकारिता का उद्देश्य और पत्रकारिता की विशेषताओं का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

### 1.3.1 पत्रकारिता का स्वरुप

पत्रकारिता के लिए अंग्रेजी में 'जर्नालिज्म' (Journalism) शब्द प्रयोग किया जाता है। जर्नलिज्म शब्द जर्नल से बना है। जर्नल का शाब्दीक आशय है – दैनिक विवरण । यह शब्द फ्रेंच भाषा के जर्नी शब्द से निकला है। प्रारम्भ में दिन –प्रतिदिन के क्रियाकलापों, सरकारी बैठकों का विवरण जर्नल में रहता था। पत्रकारिता वस्तुतः समाचारो के संकलन, चयन, विश्लेषण तथा संप्रेषण की प्रक्रिया है। अभिव्यक्ति तथा जनसेवा का सशक्त माध्यम पत्रकारिता है। वह एक मनोरम कला है। इसका काम जनता एवं सत्ता के बीच एक संवादसेतु बनना भी है।

पत्रकारिता को वर्तमान युग का पाँचवा वेद कहा जाता है और प्रजातंत्र का चौथा स्तम्भ माना जाता है। इसे चोरनेत्र भी कहा जाता है। समाज को जोडने के साथ–साथ मनोरंजन और मूल्यों में बढोत्तरी करने का कार्य पत्रकारिता करती है। सूचनात्मक खुराक प्रदान करने का कार्य पत्रकार करता है। पत्रकारिता खबरों को लोगों तक पहुँचाने का नाम है। समाज में जो हुआ, जो हो रहा है और होगा उसका भी चित्रण होता है। असल में पत्रकारिता में अधिकांश साहित्यिक विधा शामिल है। गौरव की बात है कि पत्रकारिता शासक–शासित समाज–मनुष्य और मजूर–मालिक इनमें सामजंस्य पैदा करती है। प्रिंट मीडीया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का जन्म मानव के लिए एक महत्त्वपूर्ण एवं अदभूत घटना है। आज दुनिया के विभिन्न कोने में समाचार पहुँचता है। छापखाना शुरु होने के पूर्व मनुष्य पारस्पारिक संवाद और खबरे जानने की जरुरी रखता था। प्रारंभिक काल में समाचार का प्रसार सुनी सुनाई बातों से होता था। बादशाह तथा सामंत के काल में दूत थे। इसके भी पूर्व मनुष्य पशु–पक्षियों की आवाज निकालकर आवाज के माध्यम से अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने की कोशिश करता था। पशु–पक्षी भी आवाज के सहारे इकठठा आते थे। पहले से ही मनुष्य को भाव, विचार और जानकारी दूसरों तक पहुँचाने की ललक रही है। महाभारत का संजय समाचार वाचक था, जो युध्द का आँखों देखा हाल विशद करता था। नारद ऋषि स्वर्ग और पृथ्वी दोनों लोकों में समाचार पहुँचाने का कार्य करता था।

सरकार के कामकाज कानून और नागरिकों के विरुध्द की गयी कारवाई भी भारत वर्ष में खबरें बनती थी। आज भी ऐसा होता है। प्राचीन युग से आज तक नगाडे बजाकर शासन की नीतियों की घोषणा की जाती है।

मनुष्य को जीवनयापन करने केलिए वायु, पानी और भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मनुष्य को पत्र-पत्रिकाओं की आवश्यकता पड रही है। आज की पत्रकारिता का स्वरुप व्यापक एंव बहुआयामी हो गया है। पत्रकारों ने सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक गतिविधियों का चित्रण कर उनकी आलोचना तथा उनके स्वरुप का अकंन करना अपना धर्म माना है। पत्रकारिता में अच्छे कार्यो का गुणगान और बुराइयों की निंदा की जाती है। बुराइयों का सामना करने का भरसक कार्य पत्रकारिता करती है। पत्रकारिता के माध्यम से समाज की दुर्बलताओं, गलतियों और कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया जाता है।

पत्रकारिता का सही योगदान अंग्रेजी राज को हटाने में रहा है। सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए भारतीय पत्रकारिता का जन्म हुआ है। गलतियों को प्रकाश में लाना, विकृतियों को दूर करना, समाज की कमियों की और ध्यान देना पत्रकारिता का दायित्व है।

संगणक के विकास से पत्रकारिता में बडे पैमाने पर बदलाव हुआ है। खबरों के साथ दृश्यों को भी देखने का अवसर मिल रहा है। सही अर्थो में आज के युग में जनसंचार माध्यमों का योगदान सराहनीय है। दूरदर्शन, रेडिओ, इंटरनेट, विडियो, कम्प्यूटर, फिल्म, डाकतार प्रणाली, टेलेक्स, टेली प्रिंटर, इंटरकॉम, कार्डलेस, टेलीफोन, सेल्यलर फोन, फैक्स, एस.टी.डी और आई.एस.डी का जन्म मानव विकास में योगदान के लिए हुआ है। पत्रकारिता समाज की दिग्दर्शिका और नियमिका बनी है। समाचार साहित्यिक गतिविधियाँ, परीचर्चा, गोष्ठियाँ, खेलकूद और युध्दों के समाचार दृश्यों के साथ हम सुनते है।

आजादी के पूर्व पत्रकारिता विचारों से लबालब भरी थी।स्वतंत्रता, राष्ट्रीय एकता को बरकारर रखने का कार्य पत्रकारिता ने किया है। स्वाधीनता संग्राम को बढावा देकर आजादी प्राप्त करने के लिए पत्रकारिता का योगदान महत्त्वपूर्ण है। मिशनरी भाव लेकर जन्मी पत्रकारिता का एक ऐसा चेहरा था जो यर्थाथ तथा न्याय से जुडा था। दुर्भाग्य से कतिपय लोगों ने पत्रकारिता को मुनाफा कमाने का यंत्र बना डाला । आज उसमें व्यावसायिकता आयी है।

**1.3.1.1 पत्रकारिता की परिभाषा–**

स्पष्ट है कि पत्रकारिता का क्षेत्र विस्तृत और व्यापक है। उसे परिभाषा से बाँधना कठिन कर्म है। अनेक विद्वानों ने पत्रकारिता को परिभाषा में बध्द करने का प्रयास किया है।

**डॉ. अर्जुन तिवारी** – ''प्रकाशन चित्रों द्वारा प्रस्तुतीकरण तथा प्रसारण हेतु सामायिक और 'सरस' तथ्यों के संग्रह और संपादन को पत्रकारिता कहा जा सकता है। आज पत्रकारिता का क्षेत्र बहुआयामी है और मानव जीवन की समस्त गतिविधियाँ इनकी सीमा में आती है।''

**डॉ. शांति विश्वनाथन** –''पत्रकारिता जनभावना की अभिव्यक्ति सद्भावों की उद्भूति और नैतिकता की पीठिका है।''

**डॉ. संतोष गोयल** – 'पत्रकारिता तलवार की धार पर चलती है। इसका एक मात्र ध्येय लोकसेवा जनहित है। यह नवजागरण का प्रमुख हाथियार है।''

**डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र** – अपने युग तथा अपने संबंध में जो लिखा जाता है, उसे पत्रकारिता मानते है।

**अपूर्व कुलश्रेष्ठ 'प्रसून'**– ''वास्तव में पत्रकारिता भी साहित्य की भाँति समाज में चलनेवाली गतिविधियों एवं हलचलों का दर्पण है।''

तथापि यह कहना ही उचित होगा कि पत्रकारिता समाचारों को जनसाधारण तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है।

### 1.3.2 पत्रकारिता का उद्देश्य

भारत की स्वाधीनता संग्राम की लडाई में समाचार पत्रों का जो योगदान रहा है, वह निश्चित ही भारतीय जनता को निरंतर प्रेरित करता रहा। एक काल ऐसा था कि पत्रकारिता ने आजादी प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण तथा आवश्यक पृष्ठभूमि तैयार की थी, किन्तु आज हालात पूरी तरह बदली है। आज समाचार प्रसार के माध्यम सिर्फ प्रिंट मीडिया ही नहीं, अपितु इलेक्ट्रॉनिक मीडिया भी है, जो कि इतने तेज और प्रगत है कि पलक झपकते ही समाचार दुनिया में प्रसारित किए जा सकते हैं और जनमानस को प्रभावित किया जा सकता है। पत्रकारिता के माध्यम से ज्ञान, विचार, शब्दों तथा चित्रों के रुपों में दूसरों तक पहुँचाया जा सकता है। जिज्ञासा मनुष्यमात्र की मूल प्रवृत्ति है और उसे शांत करने का माध्यम पत्रकारिता है।

पत्रकारिता एक ऐसी विधा है, जिसका क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। पत्रकारिता के माध्यम से ही साहित्य, विज्ञान, शिक्षा, राजनीति, कला, जनकल्याण, संस्कृति और धर्मदर्शन आदि क्षेत्रों की गतिविधियाँ प्रसारित होती हैं। सांप्रदायिक सौहार्द्र तथा राष्ट्रीय एकता तथा समन्वय की दिशा में पत्रकारिता का महत्वपूर्ण स्थान है। आज के आधुनिक संचार माध्यम आकाशवाणी, दूरदर्शन, सेटेलाईट प्रसारण, इंटरनेट, वीडियो, टेलीफोन, फॅक्स आदि पत्रकारिता के ही आधुनिक रुप है। पत्रकारिता ने आज मनुष्य के दिल–दिमाग में अपना स्थान बना लिया है। पत्रकार को यह भूलना नहीं चाहिए कि अपने पत्र का सजीव रुप सबसे ज्यादा समाज के सम्मुख रहता है। पत्र–पत्रिकाएँ साहित्य के प्रकारों की जन्मदात्री रही हैं। पत्रकारिता एक ऐसी कला है, जो दूरियाँ कम करती हैं।

पत्रकारिता धीरे–धीरे लोकतंत्र की पहारेदार न रहकर बाजारवाद की प्रचारक बनती जा रही है। हमारी पत्रकारिता पर राजनीति बुरी तरह हावी होती जा रही है किन्तु अनिवार्य यह है कि विभिन्न विचार, गोष्ठियों, साहित्यकारों के सम्मेलन, पुस्तक विमोचन, बौध्दिक चर्चाओं, नृत्य, नाटक आदि कवि गोष्ठियों को ही प्रोत्साहित करना आवश्यक है साथ ही साथ भूकंप, बाढ और अकाल आदि प्राकृतिक आपदाओं के समाचार दिखाने चाहिए जिसे सहानुभूति प्राप्त हो और मानवीय संबंधों में बढोत्तरी हो जाए। एक तौर पर पत्रकारिता समाज सेवा करती है तो दूसरी ओर अन्याय तथा दमन का प्रतिरोध करती है। समाज सुधार, देशभक्ति तथा जनमत निर्माण करना महत्त्वपूर्ण कार्य पत्रकारिता का है।

हर काल में पत्रकारिता अपने निश्चित आदर्शों के साथ विश्वकल्याण हेतु अग्रसर है। पत्रकारिता के समस्त गुणों पर विचार करने पर इसके निम्नंकित उद्देश्य सर्वमान्य हुए है।

**सूचना का संप्रेषण**

पत्रकारिता का महत्त्वपूर्ण प्रतिपाद्य समष्टि को घटनाओं, मुद्दों और विचारों के बारे में सूचित करना है। समाचारों की दुनिया में माध्यमों का धमाकेदार प्रवेश हुआ है। पत्रकाारिता विश्व के मंच पर घटित होनेवाली घटनाओं से परिचित कराती है। इसके माध्यम से जनता को सरकारी नीतियों तथा गतिविधियों के बारे में तथा सरकार को जनता की जानकारी हासिल होती है।

**सत्य को उद्घटित करना**

पत्रकारिता का जोश और पत्रकारिता की सच्चाई सदैव सचेत रहनी चाहिए। आज हम देखते हैं कि जिस रफ्तार से विकास हो रहा है, उसी रफ्तार से समाज दूषित भी हो रहा है। आज जीवन का ऐसा कोई भी हिस्सा नही है, जहाँ मानवीय कमजोरियाँ काम, क्रोध, मोह आदि का स्थान नहीं है। आज की व्यवस्था में व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण संतो का वेश धारण कर समाज को ठगने का कार्य कर रहे हैं। डाकू, धूर्त, मक्कार और हत्यारे हँसी मजाक के साथ जेल से चुनाव लड रहे हैं। भोली जनता इसकी शिकार हो रही है। इस विषम परिस्थितियों में पत्रकारिता का उद्देश्य यह भी है कि वह जनसामान्य के सामने वास्तविकता का खुलासा करें।

**शिक्षित करना**

पत्रकारिता का प्रमुख कार्य सूचना देना है, साथ ही साथ लोंगों को शिक्षित करना भी है। प्रियंका वाधवा लिखती है, ''पत्रकार जनसाधारण का गुरु होता है, क्योंकि पत्रकारिता के पेशे में हमेशा ही ईमानदारी को सर्वोच्च स्थान दिया जाता है। जिस बात को पत्रकार देखता, सुनता और महसूस करता है, उसे मुद्रित, अथवा दृश्य-श्रव्य माध्यमों द्वारा आम जनता के बीच पहुँचाता है और आम जनता मीडिया द्वारा कही गई बातों को जल्दी ही मान लेती है।''

पत्रकार जो देखता तथा सुनता है उसे ही प्रिंट मीडिया तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा जनता तक पहुँचाता है। पत्रकारिता जनमत तैयार करने का और जनशिक्षण देने का कार्य करती है। परिचर्चा, साक्षात्कार, शोधकार्य की जानकारी, अग्रलेख, विविध स्तम्भ, राजनीति से संबंधित टिप्पणियाँ पत्रकारिता अच्छी तरह से करती है।

**मनोरंजन करना**

मनुष्य के जीवन में मनोरंजन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह सही है कि आज के युग में मनुष्य का सबसे अधिक समय मनोरंजन के कार्यक्रमों में व्यतीत होता है। नीरसता से दूर रहने के लिए मनुष्य का पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा मनोरंजन होता है।प्रेमनाथ राय के अनुसार, ''आकाशवाणी, दूरदर्शन, समाचार, पत्र-पत्रिकाओं में मनोरंजन सामग्री को प्रमुखता के साथ स्थान दिया जाता है। श्रव्य एवं दृश्य माध्यमों के माध्यम

से प्रसारित फिल्मी गाने, नाटक वार्ता, परिचर्चा, अलग-अलग विषयों पर आयोजित कवि सम्मेलन एवं संगोष्ठियाँ, गीत, गजल, अभिनेता-अभिनेत्रियों के साक्षात्कार जनता के बीच बहुत ही लोकप्रिय होते है। मुद्रण माध्यमों में भी पाठकों का मनोरंजन होता है। वही उनके ज्ञान में भी पाठकों का मनोरंजन होता है। वही उनके ज्ञान में भी वृध्दि होती है। आजकल फोटो-फीचर एवं व्यंग्य चित्रों का प्रकाशन समाचार-पत्र पत्रिकाओं में खूब किया जाता है। ऐसे चित्र विशेष तौर पर सरसरी नजर से देखने में सामान्य लगते हैं, जो व्यक्ति को हँसाने और गुदगुदाने का कार्य करते हैं, जबकि इन्हीं व्यंग्य-चित्रों को ध्यान से एक-दो बार देखें तो इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक या राजनीतिक व्यंग्य छिपा रहता है। ऐसे चित्रों में अधिकतर कोई मार्मिक संदेश छिपा रहता है।''

पत्रकारिता समाज को कुशलता के साथ शिक्षित करती है ओर लोंगों को सचेत भी करती है। पत्रकारिता जनमानस में अपना स्थान प्राप्त करती है। देश विदेश की खबरें देना, उनका विवरण इकठठा करना, बाद में विवेचन करना तथा पत्र के माध्यम से जनता तक पहुँचाना उसका प्रमुख कार्य हैं।

**पत्रकारिता का महत्व**

मनुष्य जीवन की सभी समस्याओं का सच्चाई से समाधान करने का सफल कार्य पत्रकारिता करती है। प्रभावशील, सशक्त तथा व्यापक इस विधा का मनुष्य के जीवन में विशेष महत्व है। प्राचीन काल में नारदमुनी के बाद दूत समाचार वाहक कार्य करते थे। उसके उपरांत स्वाधीनता संग्राम में पत्रकारिता का योगदान सराहनीय रहा। आज के युग में पत्रकारिता को प्रजातंत्र का चौथा स्तम्भ माना जाता है। पत्रकारिता में लोकमत, लोकहित होता है, वह ही जनशक्ति का महत्त्वपूर्ण आधार है।

पत्रकारिता में समाज का प्रतिबिंब होता है। पत्रकारिता समाज और सरकार के बीच संबंध स्थापित करती है। पत्रकारिता जनता के लिए होने के कारण जनता के सवाल सरकार तक और सरकार की बात जनता तक पहुँचाने का अच्छा कार्य पत्रकारिता करती है। डॉ. संतोष गोयल के मतानुसार, ''सभी पत्र-पत्रिकाएँ तथा अन्य संचार माध्यम जनता की आँख और कान दोनों होते हैं। 19 वीं शती के बाद जो संचार क्रांती हुई उसमें लिखित, श्रव्य, दृश्य-श्रव्य सभी माध्यम मुख्य हो गए। पत्रकारिता शब्द को केवल पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों से जोडा जाने लगा किन्तु जनसंचार के सभी माध्यम जनता के माध्यम है, जनता से जुडे हैं तथा जनकल्याण का कार्य करते है। खासतौर पर ये मनोरंजन का साधन भी है।''

केवल पत्रकारिता समाचार संकलन तथा प्रकाशन तक ही सीमित रही है ऐसी बिल्कुल बात नहीं, उसका दृष्टिकोण बहुआयामी होता है। पत्रकारिता जनजागरण का मुख्य हाथियार है। सेवा एवं आदर्श के कारण पत्रकारिता को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। समाज को ठिक मार्ग से चलने की प्रेरणा देना पत्रकारिता की बडी जिम्मेदारी होती है। अपूर्व कुलश्रेष्ठ 'प्रसून' के शब्दो में, ''वर्तमान परिवेश में जहाँ प्रेस का दायरा विस्तृत हुआ है, वही उसकी महत्ता भी बढी है। देश में जब तक लोकतंत्र रहेगा, उसकी प्राणवत्ता रहेगी, पत्रकारिता का भविष्य प्रतिस्पर्धा एवं तमाम दबाबों के बावजूद प्रेस का वजूद तो घटा है, न कम हुआ है। उसकी स्वीकार्यता निरंतर बढ रही है, पाठकीयता बढ रही है। विविध रुचि की सामग्री आ रही है और अखबारों की संख्या में भी वृध्दि हो रही है। इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता के क्षेत्र में तो क्रांति-सी हो गई है।''

पत्रकारिता के बढते महत्त्व को आज के इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की पत्रकारिता ने गौरव का स्थान निर्माण कर दिया है। श्रोताओं की मानसिक भूख शांत करने का कार्य पत्रकारिता ने किया है। डॉ. ठाकुर दत्त शर्मा आलोक के अनुसार, ''स्वाधीनता प्राप्ति के लिए जो ऊर्जा हमारे भीतर विद्‌यमान थी, स्वाधीनता प्राप्ति के बाद हमारी समस्त अस्मिता को जैसे लकवा सा मार गया है। देश-भक्ति की पावन भावना से हटकर हमारा सारा ध्यान, सारी सोच निजी स्वार्थो के हित चिंतन पर आश्रित हो गई है। सच्चाई, सफाई, ईमानदारी कर्तव्यनिष्ठा ये शब्द तो जैसे अपना अर्थ ही खो गए हैं। इस मोहभंग के परिवेश ने पत्रकारिता को भी प्रभावित किया है और पराधीनता काल की पत्रकारिता का आदर्श जैसे बिखरकर रह गया है।''

अंत में यह कहना ही उचित होगा की पत्रकारिता किसी भी हालत में सामाजिक दायित्व को भूल नहीं सकती है। दुनिया के सभी रिश्तों में आज टूटन महसूस हो रही है, किन्तु पत्रकारिता ने अपनी भूमिका को प्रभावित करने का बीडा उठाया है। जनजागृति का महत्वपूर्ण पहलू पत्रकारिता होती है। हाँ, कितना भी सही हो कि पत्रकारिता में कई गलतियाँ आ गई हैं, लेकिन सेवा रुप में भी उसकी महत्ता ने चार चाँद लगाए, यह नकारा नहीं जा सकता है।

### 1.3.3 पत्रकारिता की विशेषताएँ

पुरातन काल से लेकर आजतक पत्रकारिता को अपनी विशेषताओं के कारण समष्टीजगत् में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। जिस समाज में पत्रकारिता न हो ऐसा समाज पृथ्वी पर देखने को नहीं मिलता है। महर्षि नारद पौराणिक युग में एक कुशल पत्रकार की तरह देवलोक तथा मृत्यूलोक के बीच संप्रेषण का कार्य करते थे। उससे आगे जाकर राजा तथा मंत्रियो के दूत, पशुपक्षी, शिला, अभिलेख और सार्वजनिक स्थलों पर जोर के आवाज के माध्यम से संदेश देना यह प्रथा जारी रही। कुलमिलाकर ये प्रथाएँ व्यष्टी और समष्टी के कल्याण हेतु होती है। पत्रकारिता की शुरुआत सेवावृत्ति मिशन के रुप में हुई है, जिसकी निम्नलिखित विशेषताएँ है-

**समाज की गतिविधियों का दर्पण**

साहित्य या पत्रकारिता को समाज का दर्पण कहा जाता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण समाज में व्याप्त रहन-सहन, रिति-रिवाज और खानपान को अपनाता है। साथ ही साथ समाज की परंपरा और संस्कृति की अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु वह पत्र-पत्रिकाओं की भी पनाह लेता है। वर्तमान, भूत और भविष्य के बारे में जानकारी हासिल करने की जिज्ञासा हर मनुष्य में होती है, क्योंकी पत्रकारिता को समाज की गतिविधियों का दर्पण कहा जाता है।

यह कहना उचित होगा कि जिन बातों को हम कभी नहीं जान सकते ऐसी बातों को जानने का एक अच्छा मौका पत्रकारिता के माध्यम से मिलता है। पत्रकारिता के द्वारा ही समाज का विकास-विनाश, सही-गलत की स्थिति समाज से संमुख आ जाती है। समाज को सही दिशा दिखाने के लिए सत्य-असत्य, कुप्रथा तथा अंधविश्वास का विश्लेषण करने का सफल प्रयास पत्रकारिता ही करती है।

**सूक्ष्म–दृष्टि**

परिवर्तन सृष्टि का नियम है। स्पष्ट है कि मानव समाज में परिवर्तन, बदलाव होता रहता है।आदिकाल में जो परंपरा महत्त्वपूर्ण जानी जाती थी, वह आधुनिक काल में बेकार हो गयी है। आज के बाजारीकरण, वैज्ञानिक तथा भौतिकवादी युग में मानवजीवन में संकुचित भावना प्रबल हो रही है। समाज स्तब्ध हो जाए ऐसा हदय कॅपा देनेवाली घटनाओं की संख्या बढती जा रही है। कई दिनों के पूर्व संयुक्त परिवार था, आज उसकी जगह एकल परिवार ने ली है।

इस प्रकार की विषम घटनाओं का गहराई से अध्ययन पत्र–पत्रिकाओं के द्वारा होता है। डॉ. राजकुमारी रानी के शब्दों में, ''पत्रकारिता के पास ऐसी सूक्ष्म दिव्य–दृष्टि हो, जो समाज में घटनेवाली घटनाओं की गहराई में जाकर और बदलते हुए परिवेश में मानव संबंधों की जटिलता के कारणों, प्रतिक्रियाओं एवं परिणामों को विश्लेषित करती है, जिससे हमें समाज में चल रहे घटनाक्रम की जानकारी मिलती है तथा अपने जीवन में सतर्क रहने की प्रेरणा भी मिलती है।''

**सफल जासूस**

सफल पत्रकार एक सफल जासूस होता है। समाज में अनेकों ऐसी घटनाएँ घटती रहती है, जो ऊपर सहज, सरल दिखाई देती हैं, किन्तु उनमें रहस्य छुपा रहता है।इन घटनाओं का पर्दाफाश करने का कार्य सफल पत्रकार करता है।

**नवचेतना का स्त्रोत**

राष्ट्र के लिए प्रेरणास्त्रोत पत्रकारिता ही होती है। पत्रकारिता समाज में नवचेतना पैदा करने में सक्षम है। देश के प्रति सौहार्द्र, एकता तथा मातृत्व की भावना निर्माण करने में पत्रकारिता का स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है। पत्रकारिता एक ऐसा महत्त्वपूर्ण माध्यम है, जिसकी सहायता से स्वाधीनता संग्राम के राजनेताओं ने देश में अपने विचारों को पहुँचाकर जनजागृति का कार्य किया। आज पत्रकारिता को चौथा स्तंभ माना जाता है, क्योंकि वह न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका की याने विधियों की जाँच–पडताल करती है, वह इसके चरित्र सृजन में सहायता प्रदान करती है।

**वैविध्यपूर्ण विशाल क्षेत्र**

जाहिर है कि पत्रकारिता का क्षेत्र बहुत विशाल तथा वैविध्यपूर्ण है। समाज जीवन के सभी पक्षों को छुने का कार्य पत्रकारिता करती है। आकाश–पाताल, विभिन्न जीव–जन्तु, साथ ही साथ वन, पहाड आदि से संबंधित चित्र–विचित्र सभी प्रकार के घटनाचक्रों का समावेश इसमें होता है। सामाजिक स्थितियों के साथ–साथ राजनीति, धार्मिक, आर्थिक, साहित्यिक, शैक्षिक सांस्कृतिक स्थितियों का ही चित्रण पत्रकारिता करती है। कला, खेल, वाणिज्य, कृषि और मनोरंजन आदि क्षेत्र पत्रकारिता में समाएँ रहते है।

**शासन एवं जनता के बीच सेतु**

जगजाहिर है कि पत्रकारिता में एक विशेष प्रकार की शक्ति होती है, जिसका भय आम आदमी से लेकर सरकार तक होता है। पत्रकार को अपनी कलम का किस तरह इस्तेमाल करना चाहिए, इसका ज्ञान होता है। गाँव से महानगर तक के विकास पर पत्रकार की नजर होती है। यह जनता और शासन के बीच सेतु का कार्य करती है। लोगों की बात शासन तक और सरकार की गतिविधियों को जनता तक पहुँचाती है। शासन और जनता के मध्य एक सार्थक संपर्क विकसित करने का सफल कार्य पत्रकारिता करती है। डॉ. यू. सी. गुप्ता के शब्दों में, ''दरअसल एक लोकतांत्रिक समाज में पत्र-पत्रिकाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका को नजर अंदाज नही किया जा सकता। समाचार पत्र-पत्रिकाएँ ही जनता को बतलाती है कि सरकार देश, समाज और व्यक्ति के उत्थान के लिए कौन-कौन सा कार्य कर रही है, उसकी गतिविधियाँ क्या है? आगामी योजनाएँ क्या हैं? सदन के अधिवेशन में किन-किन विषयों पर बातचीत हुई, कौन-कौनसी योजनाएँ पारित हुई, किन्हें अस्वीकार कर दिया गया है आदि। इन सूचनाओं के आधार पर जनसामान्य अपनी धारण बनाते हैं। नेताओं की प्रशंसा की जाए अथवा निंदा, इस परिप्रेक्ष्य में पत्रकारिता का विशेष योगदान रहता है।'' पत्रकारिता सरकार की नीतियों को जनता के बीच और जनता की माँगों, इच्छाओं, संदेशों को सरकार के पास पहुँचाती है।

**सप्रेंषण का प्रभावशाली माध्यम**

वर्तमान युग सूचना क्रांति का युग है। एक काल ऐसा भी था कि उस काल में पत्रकारिता को मिशन माना जाता था। आज सूचनाएँ उनका प्रचार प्रसार समाज व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण अंग हो गई हैं। रेडियो, टी. वी. फैक्स, टेलेक्स, वायरलेस, इंटरनेट, टेलीफोन, टेलीप्रिंटर आदि द्वारा दुनिया भर में होनेवाली घटनाएँ शीघ्रता के साथ दुनिया के कोने-कोने तक पहुँचती हैं।

**मानवीय गुणों के विकास में योगदान**

अनेक अखबार और पत्रिकाओं में प्रकाशित समाचारों में यर्थाथता, स्पष्टता, तथा निर्भिकता जैसे तत्वों का समावेश रहता है। समाचार का प्रभाव व्यक्ति पर होता है। समाचार पढकर समाचार के विषय के अनुसार व्यक्ति रोमांचित हो जाती है, तो कभी आंदोलित हो उठती है, जिससे उसके मनोमस्तिष्क में निर्भीकता, साहस और स्वतंत्र निर्णय की क्षमता जागृत होती है। ऐसे ही समाचारों के कारण आत्मविकास के साथ-साथ आत्मविश्वास की भावना जागृत हो उठती है, जिसका परिणाम होता है कि वह अपनी जीवन दिशा का सृजन स्वयं करता है, जीवनगत् संघर्षो का जुझने की शक्ति उसके अंदर आ जाती है।

**कुशल चिकित्सक**

पत्रकारिता की एक विशेषता सफल जासूसी करना है। उसी तरह पत्रकार एक कुशल चिकित्सक भी होता है, जो समसाययिक परिस्थितियों एवं घटनाचक्र की नब्ज को थामकर उसके चालढाल एवं गति का अंदाजा लगाकर स्वास्थ्य को सुधारने का कार्य करती है। जिस प्रकार किसी रोग की जानकारी प्राप्त करने के

लिए डॉक्टर एक्स-रे निकालता है, उसी प्रकार कुशल पत्रकार भी फोटोग्राफ, चित्र, साक्षात्कार एवं घटनास्थल पर मौजूद लोगों से बातचीत करके घटना की सत्यता को प्रमाणित करता है। कई बार इन प्रविधियों के इस्तेमाल से घटना का कारण क्या है, इसे किस तरह दूर किया जा सकता है आदि तथ्य स्पष्ट हो जाते हैं। चित्र आदि प्रस्तुत करने से प्रत्येक घटना, स्थिति, स्पंदन, और विकृतियाँ उजागर हो जाती हैं। पत्रकारिता एक चिकित्सक की भाँति यह भी बतलाती है कि भविष्य में कौन-कौन सी सावधानियाँ बरती जाए, ताकि पुनःयह रोग(घटना) आक्रमण न कर पाए। स्पष्ट है कि पत्रकारिता मानव समाज के हो रहे उतार-चढाव को चित्रित करें और समस्याओं का निदान सुझाकर समाज को धष्ट-पुष्ट करें ।

**वर्तमान युग की मार्गदर्शिका**

हर मनुष्य के जीवन में पत्रकारिता के बारे में विशेष स्थान है, वह वर्तमान जीवन का आधार है। यह सच है कि आज के युग में संचार माध्यमों में बढोत्तरी हुई, किन्तु मनुष्य-मनुष्य में खाई बढती ही जा रही है। अंधी दौड में भागनेवाले व्यक्ति को इतना समय नहीं कि अपने मेहमान के पास जाए अपने संस्कृति को जाने किन्तु इस दिशा तें पत्रकारिता ने सराहनीय कार्य किया है। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख-फिचर जनता को उसकी संस्कृति और सभ्यता से साक्षात्कार कराते हैं।

पत्रकारिता का क्षेत्र बहुत विशाल और वैविध्यपूर्ण होता है। मनुष्य के जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नही, जो इससे अछूता हो। किसी को खेल की जानकारी जानने की जरुरत है, तो उन्हें खेल कूद की और किसी को फिल्म देखनी है, तो उसे तत्संबंधित थियेटर की जानकारी मिलती है।कृषक हो या जमींदार, विद्यार्थी हो या अध्यापक, नेता हो या अभिनेता सभी के विचारों, क्रियाकलापों को जनसाधारण तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम पत्रकारिता है।

**नीरक्षीर विवेक**

आलोचक जैसा तटस्थ होता है, उसी तरह पत्रकारिता में तटस्थता रखना महत्त्वपूर्ण होता है। पत्रकारिता तभी सार्थक सिद्ध होती है, जब वह सही-गलत की खाई स्पष्ट करें और समय के अनुसार निर्णय का कार्य करे। पत्रकार सदभाव स्थापित कर सकता है। वह मानव समाज की बुराइयों को भी भस्म कर सकता है। पत्रकारिता को राग, द्वेष से बाहर पडकर, पक्षपात धारणाओं का परित्याग कर नीरक्षीर विवेक का परिचय देना पडता है। पत्रकारिता के नीरक्षीर विवेक रुप में ही जनकल्याण निहित होता है। शोषक के प्रति घृणा, शोषितों के प्रति प्रेम की भावना ही संवेदनशीलता की परिचायक है।

**सांस्कृतिक मूल्यों का पोषण**

पत्रकारिता सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों का पोषण करती है। परिवार, समाज, राज्य तथा देश में उत्पन्न असंतोष, चाहे वह धर्म जाति, संस्कृति किसी से भी जुडा हो, पत्रकारिता उसका सही विश्लेषण कर देती है। कभी-कभी हिन्दू-मुस्लिम के बीच सांप्रदायिक दंगाफसाद हो जाता है, तो दोनों वर्ग एक-दुसरे के

खून के प्यासे होते है। अखबार इसका विवेचन विश्लेषण करता है और दंगाफसाद कम होने के लिए प्रयास करता है।

**ईमानदारी और सभ्यता**

सच्चा पत्रकार उनको माना जाता है, जो पाठकों के प्रति ईमानदार रहता है। सत्य को परखकर लिखना पत्रकार का दायित्व है। समाचार और लेखन सामग्री पर आधारित शीर्षक देना महत्त्वपूर्ण है।

**उत्तरदायित्व**

विशुद्ध सेवा से प्रेरित होकर पत्रकार को कार्य करना चाहिए। पत्रकारों ने समाज को केंद्रबिन्दु समझकर उनके प्रति उत्तरदायित्त्व के साथ कार्य करना चाहिए।

**शिष्टता**

लोकहित के लिए अपराध तथा बुराइयों के बारे में चित्रण करना शिष्ट नहीं समझा जाता है। बिना सामग्री से कुछ बातें प्रकाशित करना आदर्शों की अवमानना करने जैसा है।

**तटस्थता**

पत्रकार जब समाचार देता है, तब उसके पास तटस्थता का होना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। समाचार और वैयक्तिक मत की अभिव्यक्ति का फर्क ध्यान में रखना चाहिए।

**सत्यनिष्ठा**

पत्रकार को व्यक्तिगत स्वार्थ से हटकर लोकहित को महत्त्वपूर्ण स्थान देना चाहिए। निजी सूत्रों से प्राप्त समाचारों को स्रोत बनाए बिना समाचार प्रकाशित नहीं करना चाहिए। सत्य को तोड़-मरोड़ कर किसी भी हालत में पेश नहीं करना चाहिए।

**पत्रों की स्वतंत्रता :**

प्रजातंत्र में पत्रकारिता के लिए अभिव्यक्ति स्वतंत्रता अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। सभी विषयों पर अपनी आत्मा की आवाज को लिपिबद्ध करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए, जिनके लिए कानून का कोई रोक न हो।

**निष्पक्षता**

अनाधिकृत आरोप से किसी की प्रतिष्ठा या नैतिक चरित्र को ठेस पहुँचानेवाली घटनाओं का विवेचन- विश्लेषण नहीं करना चाहिए। समाचार देते समय निष्पक्ष दृष्टिकोण रखना महत्त्वपूर्ण है।

समग्रत: यह कहा जा सकता है कि मानव जीवन के सभी पक्षों पर पत्रकारिता ध्यान रखती है। सभी बातों का विवेचन-विश्लेषण कर घटना का सच्चा रुप बाहर निकालने का प्रयास पत्रकारिता करती है।

## 1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न:

**अ) नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

1) जर्नलिज्म शब्द.....से निकला है।

अ) जर्नल ब) जर्मन क) जापान ड) जनतंत्र

2) पत्रकारिता प्रजातंत्र का........स्तम्भ माना जाता है।

अ) पहला ब) दूसरा क) चौथा ड) पाँचवा

3) पत्र-पत्रिकाएँ साहित्य के प्रकारों की.......रही है।

अ) जन्मदात्री ब) बहन क) मौसी ड) दादी

4) पत्रकारिता का प्रमुख कार्य.......देना है।

अ) सूचना देना ब) कल्पना क) चिंता ड) दु:ख

5) सफल पत्रकार एक सफल.........होता है।

अ) डॉक्टर ब) जासूस क) शिक्षक ड) भवन

6) गाँव से महानगर तक........की नजर होती है।

अ) पत्रकार ब) शिक्षक क) पोस्टमैन ड) चोर

**ब) नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।**

1) जर्नल का शाब्दिक आशय.......है।

अ) मासिक विवरण ब) दैनिक विवरण क) वार्षिक विवरण ड) साप्ताहिक विवरण

2) पत्रकारिता को वर्तमान युग का........वेद कहा जाता है।

अ) पहला ब) चौथा क) पाँचवा ड) नौवा

3) पत्रकारिता मानव जीवन के .........पक्षों पर ध्यान रखती है।

अ) चौदह ब) बीस क) चालिस ड) सभी

4) पत्रकार........जैसा तटस्थ होता है।

अ) नाटककार ब) आलोचक क) निबंधकार ड) उपन्यासकार

5) पत्रकार एक कुशल.........भी होता है।

अ) चिकित्सक ब) सिपाही क) सैनिक ड) क्लर्क

6) मनुष्य नीरसता दूर करने के लिए माध्यमों से........देना पसंद करता है।

अ) मनोरंजन कर   ब) दु:ख   क) भय   ड) चिंता

## 1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

शैक्षिक–शिक्षा

संकलन–इकठठा करना

स्तम्भ–खंबा

खुराक–आहार

अधिकांश–अधिक मात्रा में

प्रिंट मीडिया–मुद्रण माध्यम

योगदान– कार्यो में सहयोग

अभिव्यक्त करना–किसी बात को व्यक्त करना

सृष्टि–पृथ्वी

वैविध्यपूर्ण–विविधता से पूर्ण

## 1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नो के उत्तर:

अ) 1) जर्नल 2) चौथा 3) जन्मदात्री 4) सूचना देना 5) जासूस 6) पत्रकार

ब) 1) जर्नल का शाब्दिक आशय दैनिक विवरण है।

2) पत्रकारिता को वर्तमान युग का पाँचवा वेद कहा जाता है।

3) पत्रकारिता मानव जीवन के सभी पक्षों पर ध्यान रखती है।

4) पत्रकार आलोचक जैसा तटस्थ होता है।

5) पत्रकार एक कुशल चिकित्सक भी होता है।

6) मनुष्य नीरसता दूर करने के लिए माध्यमों से मनोरंजन कर देना पसंद करता है।

## 1.7 सारांश

1) प्रजातंत्र में पत्रकारिता का विशेष महत्त्व है। लोगों में दायित्वबोध निर्माण करने का काम पत्रकारिता करती है। प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया बहुसंख्य पाठकों की अभिरुचि है।

2) पत्रकारिता धीरेधीरे लोकतंत्र की पहरेदार न रहकर बाजरवाद की प्रचारक बनती जा रही है। सूचना का संप्रेषण करना, सत्य को उद्घटित करना शिक्षित करना और मनोरंजन करना आदि उद्देश्य सर्वमान्य हुए है।

3) पत्रकारिता की शुरुआत मिशन के रुप में हुई है। जिसकी विशेषता है- समाज की गति विधियों का दर्पण, सूक्ष्म-दृष्टि, सफल जासूस, नवचेतना का स्त्रोत, वैविध्यपूर्ण, शासन एंव जनता के बीच सेतु, संप्रेषण का प्रभावशाली माध्यम, मानवीय गुणों के विकास में योगदान, कुशल चिकित्सक, वर्तमान युग की मार्गदर्शिका, नीरक्षीर विवेक, सांस्कृतिक मूल्यों का पोषण, इमानदारी और सभ्यता, उत्तरदायित्व, शिष्टता, तटस्थता, सत्यनिष्ठा, पत्रों की स्वतंत्रता और निष्पक्षता आदि।

## 1.8 स्वाध्याय

1) पत्रकारिता का स्वरुप समझाइए।

2) पत्रकारिता के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

3) पत्रकारिता की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

## 1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) पत्रकारिता के विभिन्न प्रकारों में से किसी एक को चुनकर उस क्षेत्र से संबंधित समाचार का प्रारुप तैयार किजिए।

2) भारतीय स्वातंत्र्यपूर्व तथा की स्वांतत्र्योत्तर काल में हिंदी समाचार पत्रों की सूची बनाइए।

3) पत्रकारिता की विभिन्न परिभाषाओं को संग्रहित कीजिए।

## 1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए


1) हिंदी पत्रकारिता, डॉ. श्रीपाल शर्मा

2) संचार माध्यम इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, ज्ञानेंद्र रावत

3) जनसंचार एवं पत्रकारिता, प्रो. रमेश जैन

4) व्यावसायिक पत्रकारिता, प्रो. रमेश जैन

5) पत्रकारिता इतिहास और प्रश्न, कृष्ण बिहारी मिश्र

6) हिंदी पत्रकारिता बृहत इतिहास, अर्जुन तिवारी

7) पत्रकारिता के नए परिपेक्ष्य राजकिशोर

8) पत्रकारिता की विभिन्न धाराएँ, डॉ निशांत सिंह

9) हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार, डॉ. ठाकुरदत्त 'आलोक'

10) हिंदी पत्रकारिता: स्वरुप और संदर्भ, डॉ. विनोद गोदरे

11) पत्रकारिता और साहित्य, डॉ. शांति विश्वनाथन

12) पत्रकारिता और समाज, डॉ. यू. सी. गुप्ता

13) पत्रकारिता के मूल सिध्दांत, नवीन चंद्र गुप्त

14) हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार माध्यम, डॉ. जितेंद्र वत्स

15) पत्रकारिता : विविध विधाएँ, डॉ. राजकुमारी रानी

16) जनसंचार एवं पत्रकारिता कल और आज, प्रो. (डॉ.) सिद्राम खोत

17) पत्रकारिता विविध विधाएँ, डॉ. राजकुमारी रानी

❑❑❑

# इकाई –2
# हिंदी पत्रकारिता का कालविभाजन
## भारतेंदु युग की पत्रकारिता, द्विवेदी युग की पत्रकारिता, गांधी युग की पत्रकारिता

**अनुक्रम –**

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवेचन

   2.3.1 भारतेंदु युग की पत्रकारिता

   2.3.3 द्विवेदी युग की पत्रकारिता

   2.3.3 गांधी युग की पत्रकारिता

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

### 2.2 उद्देश्य :

इस इकाई को पढने के बाद आप :-

1) हिंदी पत्रकारिता का कालविभाजन का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
2) नवजागरण के अग्रदूत युगप्रवर्तक भारतेंदु और तत्कालीन युग कि पत्रकारिता रुप को समझ सकेंगे।
3) द्विवेदी युग को पत्रकारिता से परिचित होंगे।
4) गांधी युग कि पत्रकारिता के विकास से परिचित होंगे।

### 2.2 प्रस्तावना :

असल में पत्रकारिता जनता की आवाज है। स्पष्ट है कि हिंदी पत्रकारिता प्रारंभ आजादी, सामाजिक सुधार, स्वभाषा प्रेम, शोषण और भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष के शस्त्र के रुप में हुआ था। सही मायने में हिंदी पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास विभिन्न कठिनाईयों, प्रहारों तथा संर्घर्षो की लंबी कहानी है।

कानपुर के रहनेवाले संपादक तथा बहुभाषाज्ञ पं. युगलकिशोर शुक्ल का नाम प्रथम पत्रकार के रुप में हिंदी पत्रकारिता में सम्मान से लिया जाता है। उन्होंने हिंदी का पहला पत्र उदंत मार्तण्ड का 18 मई 1826 को कलकत्ता से प्रकाशित किया। राजा शिप्रसाद सितारे हिंद ने 'बनारस' के नाम से पहला हिंदी साप्ताहिक प्रकाशित किया। पत्रकारिता का कालविभाजन अनेक विद्‌वानों ने अपने अपने मतानुसार किया है किंतु अधिकांश रुप में हिंदी पत्रकारिता का कालविभाजन निम्नचरणों में किया जा सकता है-

1) भारतेंदु पूर्व की हिंदी पत्रकारिता

2) भारतेंदु युग की पत्रकारिता

3) द्विवेदी युग की पत्रकारिता

4) गांधी युग की पत्रकारिता

5) स्वातंत्र्योत्तर युग की पत्रकारिता

## 2.3 विषय विवेचन :

अब हम भारतेंदु युग की पत्रकारिता, द्विवेदी युग की पत्रकारिता और गांधी युग पत्रकारिता का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

### 2.3.1 भारतेंदु युग की पत्रकारिता : (1867 से 1900)

गौरव कि बात है कि हिंदी साहित्य में नये युग के प्रवर्तक के रुप में स्थापित भारतेंदु हरिश्चंद्र ने पत्रकारिता को दैनिक साहित्य की तरह प्रयोग किया। यह कहना गलत न होगा कि भारतेंदु युग ने ही पत्रकारिता को समृध्द किया। बहुमुखी प्रतिभा के धनी भारतेंदु ने एक युग विशेष को इतना प्रभावित किया कि उस कालावधी को पत्रकारिता के इतिहास में भारतेंदु युग से जाना-पहचाना जाने लगा।

साहित्यिक पत्रकारिता के जन्मदाता भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म 9 सितंबर 1850 को काशी में हुआ। उन्होंने घर, स्कूल तथा राजा शिवप्रसाद से भी शिक्षा ग्रहण की। छोटी-सी आयु में उन्होंने संस्कृत और अंग्रेजी का अध्ययन किया।वे निर्भीक स्वभाव के थे। काशी से प्रतिभाशाली भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 15 अगस्त 1867 को 'कविवचन सुधा' का प्रकाशन करके हिंदी पत्रकारिता के नये युग का प्रारंभ कर दिया। 'कविवचन सुधा' जल्द ही मासिक से पक्षिक हुई। इसमें गद्य के साथ साथ पद्य का ही समावेश था। उसके बाद भारतेंदु ने 15 अक्टूबर 1873 को 'कोमादिक' पत्रिका, 'हरिश्चचंद्र मैंगजीन' का प्रकाशन किया। 'हरिश्चंद्र मैगजीन' का नाम आगे जाकर 1874 में 'हरिश्चंद्र चन्द्रिका' कर दिया गया। इस साहित्यिक पत्रिका में इतिहास, राजनीति, दर्शन, पुरातत्व आदि लेख के साथ-साथ समालोचन, कविता, नाटक, कहानियाँ और व्यंग्य का स्थान प्राप्त हुआ था। 1874 को 'बालबोधिनी' प्रकाशित की थी, जिसमें नारी जागृति का चित्रण देखने को मिलता है। भारतेंदु जी के लेखों ने राष्ट्रीय जागरण की नई दिशा दी। स्वदेशी आंदोलन के प्रवर्तन का श्रेय भारतेंदु को दिया जाता है। भारतेंदु जी ने एक ओर सामाजिक सुधारों के लिए

प्रयास किया तो दूसरी ओर देशभक्ति का उद्घोष किंया। भारतेंदु ने भारतेंदु मण्डल की स्थापना की जिसमें तत्कालीन समय के सभी विख्यात तथा वरिष्ठ लेखक थे। बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, बालमुकुंद गुप्त, प्रेमधन आदि निबंधकार थे।

पं. बालकृष्ण भट्ट ने 1877 में प्रयाग से 'हिंदी प्रदीप' मासिक पत्र प्रकाशित किया। यह मासिक पत्र राष्ट्रीय आंदोलन की धुरी बन गया था। इसमें कुठाराघात, प्रेस, अंग्रेज सरकार की भाषानीति और नीतियों पर लठमार शैली में धज्जियाँ उडाई। कानपुर से प्रतापनारायण मिश्र के संपादन में सन 1883 में 'ब्राम्हण' पत्रिका प्रकाशित हुई। राष्ट्रीय पत्रों की परम्परा का सूत्रपात 'ब्राम्हण' से हुआ। समाज को सही दिशा देने के हेतु प्रेरणात्मक, प्रंसगो का अंकन किया जाता था। 'हिंदी प्रदीप' और 'ब्राम्हण' दोनों पत्रों में व्यंग्य के साथ साथ राजनीति का यथावत  अंकन होता था। इस दो पत्रों में ही नाटक तथा जीवनियाँ छपने का कार्य किया जाता था।

कानपुर से 'हिंद प्रकाश' (1880) था। 1871 में प्रकाशन 'अल्मोडा अखबार' उत्तर प्रदेश की पत्रकारिता क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुके थे। भारतेंदु युग की पत्रकारिता हिंदी क्षेत्र में गौरवपूर्ण ढंग से विस्तृत लगी। प्रयाग से सदासुखलाल के संपादन में 'वृतांत दर्पण' का उदय हुआ। सन 1869 में आगरा से कृष्णचंद के संपादन में 'पापामोचन' और ठाकुरसिंह के संपादन में जगतानंद' का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। 1870 में 'अगरा' अखबार पत्र रुद्रदत्त शर्मा ने प्रकाशित किया। सन 1870 में बख्तार सिंह ने शाहजहाँपूर से 'आर्यदर्पण' साप्ताहिक और 1879 में 'आर्यभूषण' मासिक का प्रकाशन किया।

भारतेंदु युग कलकत्ता में हिंदी पत्रकारिता के विकास में योगदान देता रहा। केशवराम भट्ट ने 1873 में अपने संपादन में 'बिहारबंधु' का प्रकाशन किया जो बाद में 1874 से पटना से प्रकाशित होने लगा। पं. दुर्गाप्रसाद मिश्र को हिंदी पत्रकारिता के जन्मदाताओं में से एक माने जाते है। उनकी विशेषता यह थी कि वे तेजस्वी संपादक तथा सशक्त लेखक के रुप में मशहुर थे। 17 मई 1878 को दुर्गा प्रसाद मिश्र ने भारत मिश्र पाक्षिक का प्रारंभ किया जो दसवें अंक से साप्ताहिक हो गया। बाद में दैनिक बना और बाद में पुन: बंद हो गया। भारत मिश्र के संपादक प्रारंभ में छोटालाल मिश्र थे। इसके उपरांत क्रमश हरमुंकुद शास्त्री, जगन्नाथ चतुर्वेदी, अमृतलाल चक्रवर्ती, राधाकृष्ण चतुर्वेदी, रामदास वर्मा, दुर्गाप्रसाद मिश्र, रुद्रदत्त शर्मा, अंबिका प्रसाद वाजपेयी तथा लक्ष्मण नारायण गर्द के नाम आते है। सारसुधा निधि सदानंद मिश्र के संपादन में और दुर्गाप्रसाद के सहयोग से शुरु हुआ, किन्तु दुर्भाग्यवश अर्थाभाव के कारण 1560 में बंद हो गया। पं. दुर्गाप्रसाद मिश्र का 'उचित वक्ता' निजी पत्र था। 7 अगस्त, 1880 को यह साप्ताहिक प्रकाशित हुआ।

भारतेंदु युग की पत्रकारिता का विकास सही किन्तु कई दिशाओं में होता गया। जनजागृति तथा सामाजिक बदलाव के साथ-साथ राजनीतिक, साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं और आगे जाकर धर्म एवं जात से संबंध रखने वाली पत्रिकाओं की संख्या बढती गई। 1878 में हरिकृष्ण भट्टाचार्य ने काशी से 'आर्य मित्र' प्रकाशित किया। गजानन राय हाणों ने 1886 में प्रयाग से 'जीवन आर्य' निकाला। गौरीशंकर वैदृय ने 1886 में फरुखाबाद से धर्मरक्षा प्रकाशित किया। 1886 में ही काशी से कुलयशस्वी शास्त्री ने 'धर्मसुधाकर्षण'

प्रकाशित किया। 1878 का जाति आधारित पत्र 'कायस्थ समाचार' उपलब्ध है आगरा से बाबू कन्हैया सिंह ने 'जाट समाचार' सन 1886 में निकाला। बाबू कार्तिक प्रसाद ने 'हिंदी दीप्तिप्रकाश' 1872 में निकाला।

बूंदी से 1890 में 'सर्वाहित' निकला जिसे मेहता लज्जाराम जैसे संपादकों ने अपने ज्ञान से नई दिशा दी। 1890 में ही दैनिक 'सर्वाहितैषी' प्रकाशित हुआ, जो अल्पजीवी ही रहा। मुबंई से 1896 से आजतक 'व्यंकटेश्वर समाचार' विशेष स्थान प्राप्त कर चुका है। 'ब्राम्हण हितकारी' (1892), 'गौड हितकारी' (1898), जैन समाचार (1895), महेश्वरी (1895) आदि पत्रिकाएँ जातियों के विकास चिंता से संबंधित है।महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक की पत्रकारिता विशेष ख्याति प्राप्त रही। मराठा, केसरी, हिन्दू आदि पत्र से कुप्रथाओं पर तथा अंग्रेजों के विरुध्द आवाज उठाने में सफलता प्राप्त की। इन पत्रों के अलांवा इस युग में 'आनंद कादंबिनी', 'हिंन्दुस्तान', 'पीयूष प्रवाह', 'शुभचिंतक', 'काशी पत्रिका', 'बिहार बंधु', 'नागरी प्रकाश', 'नागरी पत्रिका', आदि पत्र महत्त्वपूर्ण रहे।

निष्कर्षत : भारतेंदु युग के बारे में कहा जा सकता है कि इस युग की पत्र पत्रिकाओं ने अंग्रेजो के खिलाफ आवाज उठाया था। साथ ही साथ बालविवाह, परदाप्रथा, विधवा विवाह, जातीय संकीर्णता, वृध्दविवाह, स्त्री शिक्षा तथा धर्मज्ञान आदि के बारे में लिखकर भारतीय समाज को जागृत किया। भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में हिंदी पत्रकारिता का जो योगदान रहा है, वह निसंदेह सराहनीय रहा है प्रा. रमेश जैन के शब्दों में, ''अंतः यह कहा जा सकता है कि 19 वीं शताब्दि की हिंदी पत्रकारिता का उद्‌भव एवं विकास बडी विषम परिस्थितियों में हुआ। समय-समय पर पत्र पत्रिकाएँ जन्म लेती रही, परन्तु परिस्थितियाँ उनके रास्ते में दीवार की तरह बाधा बनकर खडी होती रही। इसके बढते चरणों में उर्दू और अंग्रेजी आदि भाषाएँ तथा सरकारी मशीनरी मुख्यतः रुकावटें पैदा कर रही थी। ब्रिटिश सरकार आए दिन नए-नए प्रशासनिक तथा वैधानिक कानून बनाकर इसे पंगु बना रही थी, परन्तु हिंदी प्रेमी साहित्यकार एवं देशभक्त व्यक्तिगत तथा संस्थाओं के माध्यम से शनै:शनै इसे गति प्रदान कर रहे थे।''

### 2.3.2 द्विवेदी युग की पत्रकारिता (सन् 1900 से 1920)

सन 1900 का वर्ष हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में विशिष्ट स्थान रखता है। 19 वीं शती में भारत वर्ष के विभिन्न क्षेत्रों से दैनिक, साप्ताहिक एवं मासिक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई। इस युग में पत्रकारिता को अपनी यात्रा में अंग्रेज, उर्दु भाषाओं और सरकारी मशीनरी ने अवरोध निर्माण किया किंतु हिंदी पत्रकारिता की विजय यात्रा जारी रही।

द्विवेदी युग राजनैतिक उथल-पुथल का काल था। आजादी की लडाई पूरे यौवन पर थी। इस काल में जापान के हाथों रुस की पराजय ने विश्व समुदाय को झकझोर कर रख दिया था। इन विभिन्न घटनाओं से भारतीय बुध्दिजीवी वर्ग प्रभावित रहा। इन बुध्दिजीवी वर्ग ने समाज-सुधार तथा स्वाधीनता प्राप्ति हेतु पत्रकारिता का सहारा लिया। खास बात यह थी कि पत्रों ने खुलकर ब्रिटिशों का विरोध किया। अनेक पत्रकारों को ब्रिटिश हुकूमत का कोपभाजन भी बनना पडा। बीसवीं शती के प्रारंभ में अधिकांश मात्रा में पत्र-पत्रिकाओं ने जन्म ग्रहण किया। इस जागरण के युग में अनेक पत्रों का जन्म हुआ, जिन्होंने पत्रकारिता

के क्षेत्र में अपना स्थान बना लिया। प्रो. रमेश जैन के शब्दों में, ''हिंदी पत्रकारिता की दृष्टि से बीसवीं शताब्दि का श्रीगणेश गौरवपूर्ण ढंग से हुआ। एक ओर 'भारत-भारती' कलकत्ता से प्रकाशित होकर संपूर्ण जगत को सुर्य की भाँति आलोकित कर ही रहा था, दूसरी ओर प्रयाग में पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपादन में सरस्वती का उदय हुआ।'' हिंदी साहित्य जगत में एक विशेष स्थान पा चुकी 'सरस्वती' पत्रिका की उदय 1900 में हुआ। साहित्यकारों को जगत के सामने लाने का श्रेय इस पत्रिका को ही दिया जाता है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के साहित्य सेवा, भाषा संस्कार तथा पत्रिकाएँ हिंदी साहित्य जगत सदैव स्मरण में रखेगा।

इस युग में पत्रकारिता में प्रगतिशीलता के नए प्रयोग हुए। बडी संख्या में उस युग में पत्र-पत्रिकाएँ निकाली गयी किंतु अधिकांश पत्र-पत्रिका स्थायी रुप नहीं ले सकी। अधिकांश पत्र-पत्रिकाओं में तत्कालीन परिस्थितियाँ और परिवेश का समग्र प्रतिनिधित्व-दृष्टिगोचर होता है। कतिपय पत्र-पत्रिकाओं की छपाई और उनका एवजं उत्कृष्ट कोटी का था। इस काल में पत्रकारों का ध्यान व्यापारिक महत्त्व की पत्रिकाओं को निकालने की ओर पहली बार गया। अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकारोंने किया था। इस युग में संगीत, आयुर्वेद, जातीय, सांप्रदायिक तथा सार्वजनिक पत्रिकाओं का प्रकाशन सफलतापूर्वक हुआ था।

गुलामी की जंजीर तोडना और सामाजिक कुरीतियों पर लेखनी जमकर चलाने का कार्य द्विवेदी युग के पत्रकारिता ने किया। डॉ. सुजाता वर्मा के शब्दों में, ''द्विवेदी युग अथवा बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हिंदी पत्रकारिता में आशातीत उन्नति हुई। वस्तुत: यह काल राजनीतिक उथल-पुथल का काल था। भारत में स्वाधीनता की लडाई पूरे यौवन पर थी। उधर अंतर्राष्ट्रीय जगत् में जापान के हाथों रुस की पराजय ने विश्व समुदाय को झकझोर कर रख दिया। इन सभी घटनाओं से भारतीय बुध्दिजीवी वर्ग अप्रभावित नहीं रहा। उसने स्वाधीनता प्राप्ति तथा समाजसुधार हेतु पत्रकारिता का सहारा लिया।

द्विवेदी युग सिर्फ बीस वर्ष का रहा, इसलिए इस युग में पत्र-पत्रिकाओं की संख्या निसंदेह ही सीमित रही है। इस युग में कई दैनिक, तो कई साप्ताहिक निकले, तो कई दैनिकों के साप्ताहिक, तो कई साप्ताहिकों के दैनिक पत्र हो गए। 1901 में पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी के संपादन में 'समालोचक' पत्र निकला जो अपनी समीक्षात्मक दृष्टि के कारण मशहूर हुआ। काली प्रसन्न ने 1903 में 'हितवार्ता' का प्रकाशन किया लाला भगवानदीन ने 1903 में 'लक्ष्मी' नामक पत्रिका निकाली। यह एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक पत्रिका है। 'अभ्युदय' तथा 'हिंदी केसरी' के संपादक माधवराव सप्रे थे। उग्र राष्ट्रवाद का समर्थक तथा शुध्द राजनीतिक पत्र 'नृसिंह' मासिक पत्र 1907 में कलकत्ता से पं. अंबिका प्रसाद वाजपेयी ने निकाला। यह पत्र अल्पकाल तक ही चला पाया सन् 1906 में पं. सुन्दरलाल ने प्रयाग से 'कर्मयोगी' का प्रकाशन शुरु कियां 1906 ई. में ही प्रयाग से मदनमोहन मालवीय की प्रेरणा से 'मर्यादा' पत्र का प्रकाशन शुरु हुआ, जिसका संपादन डॉ. संपूर्णानंद ने किया। साप्ताहिक पत्रों में 'प्रताप' का ही सर्वप्रमुख स्थान था। इसका प्रकाशन 1910 में हुआ, जिसके संपादक गणेश शंकर विद्यार्थी थे। 'प्रताप' पत्रिका का प्रतिपाद्य स्वंतत्रता तथा स्वाभिमान के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर आदर्श कार्यकर्ता उत्पन्न करना था। 'संमेलन पत्रिका' हिंदी साहित्य संमेलन प्रयाग से

1913 में प्रकाशित हुई। इसके संपादक पं रामनरेश त्रिपाठी थे। दूसरी महत्त्वपूर्ण पत्रिका 'प्रभा' का प्रकाशन 1913 में खंडवा से श्रीकाल राम गंगराडे और पं. माखनलाल चतुर्वेदी ने शुरु किया। इस युग में अनेक पत्र निकले 'कलकत्ता समाचार' (1914), 'हिंदी बिहारी (1913), 'विश्वमित्र' (1919), 'वेंकटेश्वर समाचार' (1913) 'सूर्य' (1918), 'पाटलीपुत्र' (1914), 'गढवाली' (1905), 'विस्लवकर्मयोगी' (1907), 'भविष्य' (1918), 'अर्जुन' (1913), 'वसुंधरा' (1903), 'देवनागर' (1907), 'ज्ञानोदय' (1907), 'मनोरंजन' (1913), 'मनोरमा' (1915), 'अवध समाचार' (1901), 'दूध' (1902), 'मोहिनी' (1903), आदि हैं।

द्विवेदी युग के अनेक साहित्यकार विभिन्न विषयों पर अपनी कलम चलाते रहें। इस युग में समीक्षा का क्षेत्र विकसित हुआ। दर्जनों साहित्यकारों को यशस्विता प्राप्त हुई। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी भाषा के परिनिष्ठित रुप को पत्रकारिता के माध्यम से प्रसारित करने में महत्त्वपूर्ण तथा सफल कार्य करते रहें। सांस्कृतिक जागरण तथा राष्ट्रीय जागरण करना इस युग का प्रमुख अंग था। इस युग ने बहुत सा साहित्य हिंदी को दिया। इस युग के पत्र साहित्यिक चेतना के प्रचार में तत्पर थे।

### 2.2.3 गांधी युग (1920 से 1947)

असल में महात्मा गाँधीजी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। विभिन्न क्षेत्रों में उन्होंने कुछ न कुछ अपना मौलिक योगदान दिया है और अपनी अमिट छाप छोडी है। वे अहिंसा और सत्य के पक्षघर थे। लोकमान्य तिलक के पश्चात महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व उभर कर आया। म. गांधीजी ने पत्रकारिता को व्यवसाय के रुप में स्वीकार नहीं किया था। गांधीजी एक मिशनरी पत्रकार थे। उनको ज्ञात था कि अपनी मिशन की सफलता के लिए पत्रकारिता सशक्त माध्यम है। सही मायने कें भारत के लिए अहिंसा और स्वतंत्रता के अपने उद्देश्यों को आगे बढाने के लिए समाचार पत्रों और मीडिया का उपयोग किया।

गाँधी युग की खास विशेषता यह है कि हिंदी पत्रकारिता को स्वस्थ तथा पुष्ट परंपरा की भूमि तैयार हुई। इस युग में विदेशी दासता के प्रति विद्रोह का स्वर ऊँचा हुआ था। इस काल की पत्रकारिता ने भारतीय जीवन के विकास में अत्याधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साहित्य की तरह पत्रकारिता पर गांधीजी के दर्शनों का गहरा प्रभाव पडा। म. गांधी का प्रभाव बढने के साथ-साथ सत्याग्रह, अंहिसा तथा सांप्रदायिक उन्मूलन हरिजनोत्थान की प्रवृत्तियाँ विकसित हुई थी। इस काल की साहित्य पत्रकारिता का स्तर उँचा रहा। उच्च कोटी की साहित्य कृतियाँ निर्माण हुई। साहित्यकारों को पोषण एवं प्रोत्साहन मिलता रहा। गाँव तथा नगर में लघु पत्रिकाएँ प्रकाशित होने लगी। इस युग में धर्म, राजनीति, स्वास्थ और जातीय आदि पत्रों का अंकुरण और पल्लवल होता रहा।

म. गांधीजी सत्य की शोध एवं विजय के लिए पत्रकारिता महत्त्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने 4 जून 1903 में चार भाषाओं में 'इंडियन ओपिनियन'साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया। यह पत्र भारतीयों की सहाय्यता से दक्षिण आफ्रिका के नेवल में शुरु किया था। गांधी अपने विचारों से प्रेरित करने के लिए लिखते थे। गांधी जी के 'इंडियन ओपिनियन' का प्रकाशन अपने समुदाय के सेवार्थ था। इस साप्ताहिक प्रकाशन का व्यावसायिक लाभ से बिलकुल संबंध नहीं था। गांधी जी की भाषा पारदर्शी, प्रभावशाली और स्वच्छ थी।

गौरव की बात यह है कि दक्षिण आफ्रिका में गांधी थे तब भारतीय मूल के लोगों की समस्याओं को हमेशा से ही शिद्दत से उठाते थे। म.गांधी का जो सबसे बडा योगदान था वह समाज के निम्न जनजाति की चिंता करते थे। उन्होंने पीडित, दलित, शोषित समाज की आवाज उठाने के उद्देश्य से विविध लेख 'हरिजन' में लिखें। गांधी जी ने 'नवजीवन' और 'यंग इंडिया' दो समाचार पत्र 1921 में निकाले इनका प्रकाशन 1932 में गांधी जी की गिरफ्तारी के बाद बंद हो गया।नैतिक मूल्यों की स्थापना, अहिंसा और सत्याग्रह पर आदि रहकर साम्राज्य वार के खिलाफ संघर्ष करना गांधी जी के पत्रकारिता का उद्देश्य था।

गांधी युग में दैनिक पत्रों और साप्ताहिक पत्रों कि संख्या में बडे पैमाने पर बढोत्तरी हुई। स्वांतत्र्य आंदोलन में अनेक पत्र पत्रिकाओं ने योगदान किया जैसे 'हिंदी पंच' (1926) स्वतंत्र भारत (1928) 'जागरण' (1926), 'स्वराज्य' (1931), 'स्वदेश' (1931), 'नवयुग' (1932), 'विश्वबंधु' (1933), 'योगी' (1934), 'हिंदु' (1936), 'संघर्ष' (1938), 'संग्राम' (1940), 'जनयुग' (1942), 'रामराज्य' (1941) आदि।

गांधी प्रभाव और 'सरस्वती' के अनुसरण पर हिंदी साहित्य में श्रीवृध्दि में पर्याप्त योगदान दिया। खंडवा सं 1920 में 'कर्मवीर' का संपादन माखनलाल चतुर्वेदी ने किया। इस पत्र में साहित्य सामग्री एवं राजनीति संबंधी लेख भी रहे। सन 1920 में 'चाँद' का प्रकाशन प्रयाग से हुआ। शुरु में इसके संपादक श्री रामरख सिंह सहगल थे। 'चाँद' पत्र प्रथम साप्ताहिक बाद में मासिक बन गया। 1930 से चाँद का उर्दू संस्करण भी प्रकाशित होने लगा, जिसके संपादक मुंशी कन्हैयालाल थे। माधुरी का प्रकाशन सर्वप्रथम 1922 में पं. दुलारेलाल भार्गव तथा पं. सत्यनारायण पांडेय के संपादकत्व में हुआ। यह महत्वपूर्ण पत्रिका लखनऊ के नवलकिशोर प्रेस से प्रकाशित हुई। हास्य रस प्रधान 'मतवाला' पत्र का प्रकाशन 1923 में हुआ । सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जैसा साहित्यकार भारत वर्ष को देने में 'मतवाला' पत्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इसके साथ-साथ 'भाँड' (1926), 'सुधा' (1927), 'विशाल भारत' (1928), 'सुकवि' (1965), 'शारदा' (1920), 'समन्वय' (1922), 'रंगीला' (1932), 'हँस' (1930), 'विश्वभारती' (1930), 'रुपांभ' (1936) आदि साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ।

छायावाद काव्यधारा से संबंध रखने वाली अनेक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई। इनमें प्रमुख 'चाँद', 'प्रभा', 'माधुरी', 'शारदा और 'मोहिनी' आदि है। 'प्रभा ने आगे जाकर राजनीतिक रुप धारण किया। 'साहस', 'प्रताप' (1921), 'श्रध्दा' (1920), 'आदर्श' (1921), 'कवि' (1922), 'लोकमान्य' (1922), 'भविष्य' (1923), 'सैनिक' (1925), आदि राजनीतिक पत्रों का प्रकाशन हुआ।

छायावाद के बाद द्वितीय विश्वयुध्द, आजाद हिंद फौज की स्थापना, भारत छोडों आंदोलन, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता और कहानी जैसे आंदोलन हुए। उस काल में हिंदी पत्रकारिता को समृध्द करनेवाले अनेक पत्र-पत्रिकाएँ निकाले। इनमें 'नवजीवन' (1921), 'साप्ताहिक स्वराज्य' (1932), 'प्रजा प्रकाश' (1941), 'सारथी उत्थान' (1935), 'अग्रदूत मधुकर' (1930), 'प्रतिमा' (1944), 'भास्कर' (1946), 'जीवन' (1940), 'युगांतर' (1941), 'स्वाधीन' (1945), आदि हैं।

इस युग ने अनेक साहित्यकार को प्रतिष्ठित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। समकालीन वातावरण अंकन करने में उस काल के साहित्यकार सफल हुए हैं। गांधीवाद, छायावाद तथा राजनीति का समर्थन करनेवाले साहित्य की उपज याने यह युग है। हिंदी पत्रकारिता को समृध्द करने का महत्त्वपूर्ण कार्य गांधीयुग ने किया।

## 2.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

**अ) नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

1) हिंदी ........का नाम प्रथम पत्र के रुप में लिया जाता है।

अ) उदंत मार्तण्ड ब) हिंदी प्रदीप क) पापमोचन ड) कल्पद्रूम

2) बनारस अखबार के नाम से..........हिंदी साप्ताहिक प्रकाशित किया।

अ) पहला ब) नौवां क) पाँचवा ड) ग्यारहवाँ

3) .......ने भारतेंदु मण्डल की स्थापना की थी।

अ) बालकृष्ण भट्ट ब) केशवराम भट्ट क) दुर्गाप्रसाद मिश्र ड) भारतेंदु

4) हरिश्चंद्र मैंगजीन का नाम बदलकर.........कर दिया गया था।

अ) हरिश्चंद्र डायरी ब) हरिश्चंद्र चन्द्रिका क) हरिश्चंद्र ड) हरिश्चंद्र पत्र

5) साहित्यिक पत्रकारिता के जन्मदाता.........थे।

अ) भारतेंदु ब) महावीर प्रसाद द्विवेदी क) प्रेमचंद्र ड) बालकृष्णभट्ट

6) बाल गंगाधर तिलक का ............. पत्र की विशेष ख्याती रही है।

अ) केसरी ब) धर्मरक्षा क) प्रवाह ड) शुभचिंतक

7) द्विवेदी युग का प्रारम्भ.........से माना जाता है।

अ) 1900 ब) 1800 क) 1700 ड) 1600

8) द्विवेदी युग में अनेक पत्रकारों को ..........हुकुमत का कोपभाजन बनना पडा था।

अ) आफ्रिका ब) अमेरिका क) रुस ड) ब्रिटीश

9) गांधी अहिंसा और..........के पक्षधर थे।

अ) असत्य ब) सत्य क) व्यंग्य ड) अधर्म

**ब) नीचे दिए गए विकल्पों मे से सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।**

1) .........का नाम प्रथम पत्रकार के रुप में लिया जाता है।

अ) बालकृष्ण भट्ट ब) पं. युगलीकिशो शुक्ल क) प्रेमधन ड) राधाचरण गोस्वामी

2) .........युग ने ही पत्रकारिता को समृध्द किया।

अ) द्विवेदी	ब) प्रेमचंद	क) भारतेंदु	ड) प्रेमचंद पूर्व

3) हिंदी प्रदीप पत्र..........से प्रकाशित किया जाता था।

अ) मुबंई	ब) प्रयाग	क) बरेली	ड) कानपुर

4) द्विवेदी युग सिर्फ.........वर्ष का रहा।

अ) दस	ब) पाँच	क) पंद्रह	ड) बीस

5) गांधीवाद, छायावाद और राजनीति का समर्थन करनेवाले साहित्य की उपज याने.......युग है।

अ) प्रेमचंद	ब) द्विवेदी	क) प्रसाद	ड) गांधी

6) .........में बाल गंगाधर तिलक की पत्रकारिता विशेष ख्याति प्राप्त रही थी।

अ) महाराष्ट्र	ब) पंजाब	क) मध्यप्रदेश	ड) कर्नाटक

7) ............पत्रकारिता के जन्मदाता भारतेंदु को माने जाते है।

अ) धार्मिक	ब) अलौकिक	क) साहित्यिक	ड) शैक्षिक

8) 'कविवचन' मासिक से........हुई थी।

अ) दैनिक	ब) वार्षिक	क) अर्धवार्षिक	ड) पक्षिक

9) भारतेंदु युग की पत्र-पत्रिकाओं ने.........के खिलाफ आवाज उठाया था।

अ) अमेरिका	ब) जापान	क) जर्मनी	ड) अंग्रेजो

10) ..........भाषाओं में इंडियन ओपिनियन साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया था।

अ) एक	ब) दो	क) तीन	ड) चार

## 2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1) खिलाफ - विरुध्द
2) युगप्रवर्तक- युग को आरंभ करनेवाला
3) बहुमुखी - चौतरफा, निपुण, प्रतिभाशाली
4) निर्भीक - साहसी, निडर, हिम्मती
5) पाक्षिक - साप्ताहिक
6) शैली - चाल, ढंग, प्रणाली, तरीका
7) सूत्रपात - शुरुआत, नवीनीकरण
8) पुष्ट - दृढ, मजबूत, बलवान
9) न्योछावर- समर्पित, अर्पित
10) दृष्टिगोचर- पर्याप्त

11) योगदान- कार्यो में सहयोग

## 2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

अ) 1) उदंत मार्तण्ड 2) पहला 3) भारतेंदु 4) हरिश्चंद्र चन्द्रिका
5) भारतेंदु 6) केसरी 7) 1900 8) ब्रिटीश
9) सत्य

ब) 1) पं. युगलकिशोर शुक्ल का नाम प्रथम पत्रकार के रुप में लिया जाता है।
2) भारतेंदु युग ने ही पत्रकारिता की समृध्द किया।
3) 'हिंदी प्रदीप' पत्र प्रयाग से प्रकाशित किया जाता था।
4) द्विवेदी युग सिर्फ बीस वर्ष का रहा।
5) गांधीवाद, छायावाद और राजनीति का समर्पण करनेवाले साहित्य की उपज याने गांधी युग है।
6) महाराष्ट्र में बालगंगाधर तिलक की पत्रकारिता ख्याति प्राप्त रही थी।
7) साहित्यिक पत्रकारिता के जन्मदाता भारतेंदु को माना जाता है।
8) 'कविचनसुधा ' मासिक से पक्षिक हुई थी।
9) भारतेंदु युग की पत्र-पत्रिकाओं ने अंग्रेजो के खिलाफ आवाज उठाया था।
10) चार भाषओं मे 'इंडियन ओपिनियन' साप्ताहिक का प्रकाशन किया था।

## 2.7 सारांश

1) हिंदी पत्रकारिता का प्रारंभ आजादी, सामाजिक सुधार, स्वभाषा-प्रेम, शोषण और भ्रष्टाचार के खिलाफ संर्घष के शस्त्र के रुप में हुआ था।
2) भारतेंदु युग आधुनिक साहित्यिक पत्रकारिता का प्रवेश द्वार है। सही मायने में भारतीय पत्रकारिता को समृध्द करने का कार्य भारतेंदु युग ने ही किया है।
3) भारतेंदु युग की पत्रकारिता का विकास सही किंतु कई दिशाओं में होता गया। जनजागृति तथा सामाजिक बदलाव के साथ राजनीतिक पत्र-पत्रिकाओं और आगे जाकर धर्म एवं जात से संबंध रखनेवाली पत्रिकाओं संख्या बढती गयी।
4) द्विवेदी युग की पत्रकारिता का मूल स्वर साहित्यिक होते हुए भी राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण था।
5) द्विवेदी युग सिर्फ बीस वर्ष का रहा इसलिए इस युग में पत्र-पत्रिकाओं की संख्या सीमित रही है।
6) गांधी युग में पत्रकारिता की स्वस्थ तथा पृष्ट परंपरा की भूमि तैयार हुई। इस युग में साहित्यकार को प्रतिष्ठित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

## 2.8 स्वाध्याय

1) हिंदी पत्रकारिता की विकास – यात्रा को स्पष्ट कीजिए।
2) भारतेंदु युग की पत्रकारिता का विवेचन कीजिए।
3) द्विवेदी युग की पत्रकारिता का परिचय दीजिए।
4) गांधी युग की पत्रकारिता का परिचय दीजिए।

## 2.9 क्षेत्रीय कार्य

1) भारतेंदु युग, द्विवेदी युग और गांधी युग के पत्रकारों की सूची तैयार कीजिए।
2) भारतेंदु युग, द्विवेदी युग और गांधी युग के महत्त्वपूर्ण पत्रकारों के फोटो का संग्रह कीजिए
3) भारतेंदु द्विवेदी युग और गांधी युग के महत्त्वपूर्ण पत्रों के प्राप्त कर उनका अध्ययन करें।
4) किसी एक हिंदी पत्रकार का साक्षात्कार लीजिए।
5) भारतेंदु युग की विशेषताओं का संकलन कीजिए।
6) भारतेंदु युग, द्विवेदी युग और गांधी युग को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखिए।

## 2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए


1) जनसंचार माध्यम एवं पत्रकारिता, प्रेमनाथ राय
2) पत्रकारिता के विविध रुप एवं सिध्दांत, प्रियंका वाधवा
3) पत्रकारिता के विविधआयाम, डॉ. गोविंदप्रसाद, अनुपम पाण्डेय
4) पत्रकारिता प्रशिक्षण एवं प्रेसविधि, डॉ. सुजाता वर्मा
5) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, डॉ. ठाकुरदत्त शर्मा 'आलोक'
6) हिंदी पत्रकारिता इतिहास स्वरुप और सम्भावनाएँ, डॉ. अनिल सिन्हा
7) व्यावहारिक पत्रकारिता, डॉ. यू.सी. गुप्ता
8) हिंदी पत्रकारिता की ऐतिहासिक भूमिका, रीना भारद्वाज
9) जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता सर्वांग, डॉ. जितेंद्र वत्स, डॉ. किरणवाला
10) हिंदी पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास, प्रो. रमेश जैन
11) जनसंचार एवं पत्रकारिता कल और आज, प्रो. (डॉ.) सिद्राम खोत


❑❑❑

## इकाई –1 समाचार लेखन
## 1.1 समाचार का स्वरूप, 1.2 समाचार के मूल तत्त्व, 1.3 समाचार का महत्त्व, 1.4 समाचार संकलन के स्त्रोत

**अनुक्रम –**

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 समाचार का स्वरूप

1.3.2 समाचार के मूल तत्त्व

1.3.3 समाचार का महत्त्व

1.3.4 समाचार संकलन के स्रोत

1.4 स्वयं - अध्ययन हेतु प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयं - अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन हेतु संदर्भ।

### 1.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1. समाचार के स्वरूप को समझ सकेंगे।
2. समाचार के मूल तत्त्वों से परिचित होंगे।
3. समाचार के महत्त्व से परिचित होंगे।
4. समाचार संकलन के विभिन्न स्रोतों से परिचित होंगे।
5. समाचार निर्मिति की प्रक्रिया से अवगत होंगे।

## 1.2 प्रस्तावना :

बीसवीं सदी का अंतिम दशक हिंदी पत्रकारिता के लिए एक क्रांति-युग बनकर सामने प्रस्तुत हुआ है। देश के निर्माण में भूमिका, नित्य परिवर्तित हो रहें घटनाक्रम और समाज के विकास में समाचार पत्रों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। समाचार पत्र न केवल आम लोगों के लिए मनोरंजन का साधन है बल्कि यह उनके व्यक्तित्व के विकास में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। मूलतः जनसंचार का प्राण तत्व समाचार है। निष्पक्ष भाव से तथ्यों की सही सूचना का विवरण समाचार है। समाचार लेखन एक महत्त्वपूर्ण कार्य है, जिसके लिए कला की आवश्यकता होती है। घटना के महत्व एवं प्रस्तुतिकरण, क्षेत्र, विषय आदि के आधार पर बने समाचारों की एक संरचनात्मक विशेषता होती है। समाचारों की यह संरचना छः ककारों क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों तथा कैसे के सिद्धांत के अनुरूप होती है, जिसमें विविध बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है। विभिन्न घटनाओं, परिस्थितियों और सूचनाओं को कम-से-कम शब्दों में प्रभावशाली ढंग से पाठकों के सामने प्रस्तुत करना समाचार लेखन का मूल प्रयोजन है। समाचार पत्र के माध्यम से अपराधिक जगत का खुलासा कर पत्रकार समाज में सदाचार के प्रचार-प्रसार पर बल देता है।

समाचार पत्र एक ऐसा सशक्त माध्यम है, जो मानव जीवन की विविधताओं, नित्य-नवीन और दैनिक घटनाओं एवं प्रसंगों को शीघ्र प्रस्तुत करने की क्षमता रखता है। वर्तमान युग में समाचार पत्र विश्व का स्पंदन एवं मानव जीवन का अनिवार्य तत्व बन गया है। समाचार पत्र एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा विश्वराष्ट्र एवं समाज, समाज के विभिन्न वर्ग एक दूसरे को पहचानने में सफल हो रहें हैं। आज पत्रकारिता को लोकतांत्रिक प्रशासन का अभिन्न तथा अविभाज्य अंग माना जाता है। अख़बार की अहमियत एवं उपयुक्तता लोकतंत्र के लिए कितनी अहम है इसका जिक्र करते हुए प्रसिद्ध ऊर्दू शायर अकबर इलाहाबादी लिखते हैं-

''खींचो न कमानों को न तलवार निकालो
जब तोप मुक़ाबिल हो तो अख़बार निकालो।''

संक्षेप में अकबर इलाहाबादी ने समाचार पत्रों को तोप से भी अधिक शक्तिशाली बताया है। नेपोलियन बोनापार्ट जैसे तानाशाह का मानना है कि चार विरोधी अखबारों की ताकत चार हजार बंदूकों की ताकत से भी अधिक खतरनाक होती है। प्रस्तुत इकाई में समाचार का स्वरूप, समाचार के मूल तत्व, समाचार का महत्व और समाचार संकलन के विभिन्न स्रोतों का विवेचन निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया है।

## 1.3 विषय विवेचन :

### 1.3.1 समाचार का स्वरूप :

समाचार के स्वरूप को 'समाचार' शब्द के व्युत्पत्तिमूलक एवं कोशीय अर्थ से स्पष्ट किया जा सकता है। समाचार के अन्य पक्षों को जानने से पहले उसकी उत्पत्ति विषयक जानकारी को प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है।

### 1.3.1.1 समाचार का अर्थ एवं उत्पत्ति :

समाचार शब्द अंग्रेजी के NEWS का हिंदी रूपांतरण है। NEW का अर्थ नया, नूतन है। नूतन या नए सूचना को समाचार कहा जाता है। NEWS शब्द North, East, West, South के चारों आद्याक्षरों से बना हुआ है। इस रूप में चारों दिशाओं से प्राप्त सूचनाएं एवं घटनाएँ समाचार है। हिंदी शब्द समाचार सम्+आ+चर्+धञ् प्रत्यय के योग से बना है। जिसका अर्थ सम्यक आचरण के अनुरूप निष्पक्ष भाव से तथ्यों की प्रस्तुति। वृतांत, ख़बर, संवाद, विवरण और सूचना समाचार के पर्यायवाची शब्द हैं। उपर्युक्त सभी नामों से किसी घटना की पूरी जानकारी देने का भाव स्पष्ट होता है।

### 1.3.1.2 समाचार की परिभाषाएँ :

समाचार के व्युत्पत्तिमूलक अर्थ को जानने के बाद हमें समाचार के संबंध में पाश्चात्य और हिंदी विद्वानों के मतों को जानना आवश्यक है। जिसे निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया है–

1. **मानचेस्टर गार्जियन :**

मानचेस्टर गार्जियन समाचार को परिभाषित करते हुए लिखते हैं ''समाचार किसी अनोखी या असाधारण घटना की अविलंब सूचना को कहते हैं, जिसके बारे में लोग प्रायः पहले कुछ न जानते हों, लेकिन जिसे तुरंत ही जानने की अधिक–से–अधिक लोगों में रुचि हो।''

2. **टर्नर कॉलेज :**

टर्नर कॉलेज समाचार को परिभाषित करते हुए लिखते हैं ''वह सभी कुछ जिससे आप कल तक अनभिज्ञ थे समाचार है।''

3. **जॉर्ज एच. मौरिस :**

जॉर्ज एच. मौरिस समाचार को परिभाषित करते हुए लिखते हैं ''समाचार जल्दी में लिखा गया इतिहास है।''

4. **लैदर वुड :**

लैदर वुड समाचार को परिभाषित करते हुए लिखते हैं ''किसी घटना, स्थिति, अवस्था अथवा मत का सही–सही और समय पर किया गया विवरण समाचार है।''

5. **विलियम एल. रिवर्स :**

विलियम एल. रिवर्स समाचार को परिभाषित करते हुए लिखते हैं ''समाचार घटना का वर्णन है। घटना स्वयं समाचार नहीं। घटनाओं, तथ्यों और विचारों की सामयिक रिपोर्ट समाचार है, जिसमें पर्याप्त लोगों की रुचि भी हो।''

6. **विलियम एस. माल्सबाई :**

विलियम एस. माल्सबाई समाचार को परिभाषित करते हुए लिखते हैं ''किसी समय में होनेवाली उन महत्त्वपूर्ण घटनाओं के सही और पक्षपात रहित विवरण को, जिसमें उस माध्यम के पाठकों की रुचि हो, समाचार कहते हैं।''

7. **श्री. रा. र. खाडेलकर :**

श्री. रा. र. खाडेलकर समाचार को परिभाषित करते हुए लिखते हैं ''दिन में कहीं भी किसी समय कोई छोटी-मोटी घटना या परिवर्तन हो उसका शब्दों में जो वर्णन होगा, उसे समाचार या ख़बर कहते हैं।''

8. **अम्बिका प्रसाद वाजपेयी :**

अम्बिका प्रसाद वाजपेयी समाचार को परिभाषित करते हुए लिखते हैं ''हर घटना समाचार नहीं है। सिर्फ वही घटना समाचार बन सकती है जिसका कमोबेश सार्वजनिक हित हो।''

9. **मनुकोंडा चलपति राव :**

मनुकोंडा चलपति राव समाचार को परिभाषित करते हुए लिखते हैं ''समाचार की नवीनता इसी में है कि वह परिवर्तन की जानकारी हो, यह जानकारी चाहे राजनीतिक, आर्थिक अथवा सामाजिक ही क्यों न हो।''

10. **सामान्य परिभाषा :**

''समाचार यानी घटना, तथ्यों या मतों की ऐसी सामयिक सूचना, जिसके प्रति एक बड़े वर्ग को जानने की रुचि हो।''

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जिसमें नवीनता, सामायिकता, असाधारणता और लोगों से जुड़ी सूचनाएँ ही समाचार है। तभी तो यह कहा जाता है कि सभी समाचार सूचना हो सकती है, लेकिन सभी सूचनाएँ समाचार नहीं हो सकती है। क्योंकि समाचार में नवीनता का होना अनिवार्य है। जिसमें नवीनता नहीं होगी, उसे न कोई पढ़ना पसंद करेगा और न ही सुनना। इसीलिए समाचार के लिए नवीनता के अतिरिक्त सामयिकता, विशिष्टता, असाधारणता, परिवर्तन, सामाजिक मूल्यों और मर्यादाओं का उल्लंघन, अवमूल्यन का होना अनिवार्य है। इसके बगैर समाचार की संरचना नहीं हो सकती है।

'मानक हिंदी कोश' में समाचार का अर्थ एवं स्वरूप का विवेचन करते हुए लिखा है कि समाचार का अर्थ आगे बढ़ना, चलना, अच्छा आचरण या व्यवहार है। मध्य और परवर्ती काल में किसी कार्य या व्यापार की सूचना को समाचार मानते हैं। ऐसी ताज़ी या हाल की घटना की सूचना जिसके संबंध में पहले लोगों की जानकारी न हो। हेडन ने अपने कोश में समाचार के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखते है, ''सब दिशाओं की घटनाओं को समाचार कहते हैं।''

समाचार का उद्गम शायद तभी हुआ था जब नारदजी ने देवताओं के प्रमुख समाचार-सूचनाएँ एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचानी शुरू की थी। उस समय वायरलेस सेवा नहीं थी, ईमेल की सुविधा नहीं थी, तीव्र गति के विमान भी नहीं थे; पर किसी रोचक तथ्य की जड़ तक पहुंचने की वह आकांक्षा और दूर हुई किसी घटना को समझने का उत्साह वही था, जो आजकल की दुनिया में सुबह-सुबह ताजा अखबार पढ़नेवालों में देखा जाता है। आज तकनीकी अविष्कारों ने हमें उस मुकाम पर पहुंचा दिया है जहां हम चाहें या न चाहें समाचार हमें किसी-न-किसी रूप में मिल ही जाता है।

अंततः प्राचीन काल से वर्तमान समय तक मानव की जिज्ञासू वृत्ति में बढ़ोत्तरी हो चुकी है। वह हर घटनाओं के पीछे का कारण समझने के लिए लालायित नजर आने लगा है। यह भी कहा जा सकता है कि सचेत एवं जागरूक समाज के लिए समाचार एक संजीवनी का काम करते हैं। वस्तुतः समाचार आधुनिक जीवन की परम आवश्यकता भी है। इसी वजह से विविध समाचारों की सही ढंग से प्रस्तुति समाज के लिए आवश्यक बनी हुई है।

### 1.3.2 समाचार के मूल तत्त्व

किसी भी प्रकार का समाचार हो उसके लेखन में कुछ मौलिक तत्त्वों और सिद्धांतों का ध्यान रखना आवश्यक है। अमेरिकी पत्रकार जोसेफ पुलिजर ने समाचार लेखन में यथार्थता, संक्षिप्तता एवं रोचकता इन तीन तत्त्वों का निर्धारण किया है। इन तीन तत्त्वों के साथ समाचार लेखन में कुछ अन्य तत्त्वों को जोड़ना अनिवार्य है। समाचार को प्रभावी, सर्वग्राह्य, संतुलित, सुनियोजित तथा आकर्षक बनाने के लिए निम्न तत्त्वों पर ध्यान देना आवश्यक है।

**1. नवीनता :**

नवीनता समाचार का अनिवार्य तत्त्व है। प्राचीन काल से ही मनुष्य की जिज्ञासू वृत्ति रही है। वह हर समय प्राकृतिक और अप्राकृतिक घटनाओं के पीछे के कारणों की जानकारी हासिल करने के लिए लालायित नजर आता है। हर घटना की जानकारी वह पहले प्राप्त करना चाहता है। नई बात एवं घटना को पाठक अत्यंत चाव से पढ़ता है। इसलिए समाचार लेखक को नई-नई घटनाओं को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने की कोशिश करनी चाहिए। 'प्रकृति के यौवन का श्रृंगार करेंगे कभी न बांसी फूल' प्रसाद की इस उक्ति के अनुसार बांसी समाचार पत्रों को गौरवान्वित नहीं कर सकते। दैनिक समाचार पत्रों में चौबीस घण्टे एवं साप्ताहिक पत्रों में एक सप्ताह के बाद समाचार छापने पर समाचार तत्त्व नहीं रह जाता। मंतव्य यही है कि ताजा-से-ताजा समाचार पाठकों को आकर्षित करता है, विलंब होने पर वह निस्तेज एवं निरर्थक बन जाता है।

**2. यथार्थता :**

समाचार लेखन में यथार्थता को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। समाचार को बिना किसी लाग-लपेट के बेबाकी के साथ सीधे-साधे ढंग से लिखना चाहिए। इसमें बनावटीपन और काल्पनिकता के लिए कोई स्थान

नहीं है। कोई भी घटना जैसे भी घटी हो उसका वर्णन यथावत जैसे-के-वैसे करना चाहिए। ऐसा न होने पर समाचार की विश्वसनीयता में गिरावट आ सकती है, जो समाचार पत्र के लिए हानिकारक है।

### 3. जनरुचि :

समाचार के गुणों में जनरुचि का अपना विशिष्ट महत्त्व है। पत्रकारिता से जुड़े अनेक विद्वानों ने सबसे अधिक इसी बात पर जोर दिया है कि प्रत्येक समाचार को लिखते समय इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि यह जनरुचि से जुड़ा हुआ है या नहीं। यह सर्वविदित है कि जिस घटना, तथ्य, विचार के प्रति जनरुचि रहती है उस पर तैयार किया हुआ समाचार न केवल संचार माध्यम को श्रेय दिलाता है बल्कि उसे लिखने दृश्य-श्रव्य माध्यम के अंतर्गत गढ़ने वाले को भी पर्याप्त यश का भागीदार बनाता है। जनरुचि के साथ सम्पादक को इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि उसमें नैतिक मूल्यों का कही ह्रास न हो। समाचार के कर्तव्य के संबंध में काशीनाथ गोविंद जोगलेकर लिखते हैं- ''फिल्म अपने आप में बहुत प्रभावशाली माध्यम है, संभवतः समाचार पत्रों से भी अधिक। पर उसने कभी भी प्रेस की तरह लोकतंत्र के प्रहरी, जनता के अधिकारों के रक्षक या राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्रांति के अग्रदूत होने का दावा नहीं किया और न ही समाज ने उससे यह अपेक्षा ही की है।'' इस प्रकार फिल्म या अन्य माध्यम के मुकाबले प्रेस की जिम्मेदारी अधिक है। अतः जनरुचि के साथ प्रत्येक समाचार में सामाजिक दायित्व बोध का होना अत्यंत आवश्यक है।

### 4. संक्षिप्तता :

समाचार पत्रों में अनावश्यक जानकारी नहीं होनी चाहिए। समाचार को हमेशा संक्षिप्त होना चाहिए। इसमें समाचार लेखक की अभिव्यक्ति एवं भाषाई क्षमता काम में आती है। समाचार लेखन में अनावश्यक शब्दों, विशेषणों और क्रियाओं से बचना चाहिए। संक्षिप्त समाचार समाचार पत्र में प्रभावशाली साबित होते हैं।

### 5. सत्यता और प्रामाणिकता :

समाचार का यह महत्त्वपूर्ण तत्त्व है कि उसमें सत्यता और प्रामाणिकता का गुण विद्यमान हो, किसी विषय पर समाचार लिखते समय उसकी सत्यता प्रमाणित होनी चाहिए। समाचार अफवाहों या कही-सुनी बातों पर आधारित नहीं, बल्कि ठोस एवं प्रमाणित होते हैं। इसलिए जरूरी है कि समाचार लिखते समय वे सत्य घटनाओं के साथ तथ्यात्मक जानकारी से परिपूर्ण होने चाहिए। नाम और आंकड़ों को शुद्धता के साथ लिखना चाहिए। समाचार में बिना किसी लाग-लपेट के कठिन-से-कठिन गोपनीय-से-गोपनीय बातों को निष्पक्षता के साथ व्यक्त करना आवश्यक है। सत्य घटनाओं के आधार पर लिखें गए समाचार ही विश्वसनीय माने जाते हैं।

### 6. असाधारणता :

हर नई सूचना समाचार नहीं होती। असाधारण घटना ही समाचार की श्रेणी में आती है, यदि कोई कुत्ता आदमी को काटें तो वह समाचार नहीं होगा क्योंकि किसी भी कुत्ते द्वारा काटा जाना उसका स्वभाव है।

लेकिन किसी मनुष्य द्वारा कुत्ते को काटा जाना समाचार बनेगा, क्योंकि किसी जानवर या कुत्ते को काटना मनुष्य का स्वभाव नहीं है। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक नई सूचना में समाचार बनने की क्षमता होनी चाहिए, तभी वह समाचार बनेगी। विस्मयकारी और अद्‌भुत घटनाएँ पाठकों का ध्यान आकर्षित करती है। संक्षेप में नई सूचना में कुछ ऐसी असाधारणता होनी चाहिए जो उसे समाचार बनने की श्रेणी में लाकर खड़ा करने की क्षमता रखें।

### 7. लोकहित की भावना :

समाचार लेखन में लोकहित की भावना को सबसे अधिक महत्त्व देना चाहिए। समाज के हर वर्ग की भावनाओं की कद्र करके समाचार लिखे जाने चाहिए। समाचार में किसी भी धर्म, जाति, वर्ग, वर्ण, संप्रदाय के प्रति किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं दिखना चाहिए। समाचार में सभी के प्रति सम्मान और आदर की भावना होनी चाहिए।

### 8. परिवर्तन बोध :

नेशनल हेराल्ड के प्रमुख संपादक एम. चेलापति राव ने परिवर्तनशीलता को समाचार का विशेष गुण माना हैं। वे लिखते हैं- ''समाचार की नवीनता इसी में है कि वह परिवर्तनशीलता की जानकारी दे। यह परिवर्तन चाहे सामाजिक, राजनीतिक अथवा आर्थिक हो। आज भारत तेजी से बदल रहा है। भारत में इस परिवर्तन की जानकारी देनेवाले समाचार महत्वपूर्ण है।'' आज मानवीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन हो रहा है। जिससे समाचार भी प्रभावित होने लगे हैं।

### 9. स्पष्टता :

समाचार लिखते समय भाषा की सहजता, सरलता और स्पष्टता को ध्यान रखना आवश्यक है, जिससे साधारण से साधारण व्यक्ति भी उसे समझ सके। किसी समाचार में दी गयी सूचना कितनी ही असाधारण, नई और प्रभावशाली क्यों न हो अगर वह सूचना सहज, सरल और स्पष्ट भाषा में नहीं होगी तो वह सूचना ज्यादातर लोगों की समझ से बाहर हो जाएगी। अतः समाचार के वाक्य छोटे होने चाहिए। तीन से चार पंक्तियों के बाद अनुच्छेद बदल देना उचित है।

### 10. प्रभावशीलता :

समाचार लिखते समय अपनी रुचि का नहीं बल्कि पाठक की रुचि का ध्यान रखने के साथ यह भी देखना जरूरी है कि उसमें प्रभावशीलता उत्पन्न हो रही है या नहीं। प्रत्येक सूचना जो लोगों तक समाचार के रूप में पहुँचाई जाती है वह कहीं-न-कहीं, किसी-न-किसी रूप में बहुत बड़े वर्ग को सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। यदि किसी घटना की सूचना या उस पर तैयार समाचार समाज के किसी समूह या वर्ग को प्रभावित नहीं करेगा तो उसके बनने का कोई मतलब नहीं है। इसलिए प्रत्येक समाचार में प्रभावशीलता का गुण होना अत्यंत आवश्यक है। वस्तुत: यह प्रभावशीलता या सम्प्रेषण की सशक्त क्षमता इसीलिए भी जरूरी है क्योंकि वर्तमान उत्तर आधुनिकतावादी वैज्ञानिक युग में मनुष्य एवं प्रकृति के बीच में

परिवर्तन पल-प्रतिपल हो रहे हैं। प्रत्येक घटना मनुष्य को कम-अधिक मात्रा में प्रभावित करने की क्षमता रखती है। इस परिवर्तन का सही आकलन कर जनता को सचेत करना पत्रकारिता का प्रमुख धर्म है।

**11. समानता :**

समाचार लिखते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि उसमें समानता के नियम का पालन करना चाहिए। यदि आप किसी विवादित, संवेदनशील या अतिमहत्वपूर्ण विषय पर समाचार लिख रहे हैं तो यह आवश्यक है कि आप उस पक्ष से जुड़े दोनों पहलुओं पक्ष और विपक्ष का सूक्ष्म अध्ययन करना अपेक्षित है। दोनों पक्षों से जुड़े लोगों से बात कर इस विषय में जानना और उनकी बातों को मुख्य समाचार के साथ जोड़कर प्रकाशित करना आवश्यक है। ऐसा न करने पर समाचार में निष्पक्षता नहीं दिखेंगी ऐसे में पाठकों का विश्वास अर्जित करना असंभव होगा।

**12. परिपूर्णता :**

समाचार में घटना से संबंधित हर एक पहलू की प्रस्तुति होनी चाहिए। समाचार को संक्षिप्त करने के मोह में घटना से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य छूट जाते हैं। आधे-अधूरे समाचार पाठक को भ्रम में डाल सकते हैं। इसी कारण समाचार में घटना के हर एक हिस्से का वर्णन किया जाना चाहिए।

**13. भाषा शैली :**

भाषा शैली समाचार लेखन का अभिन्न अंग है। समाचार लेखन करते समय भाषा की सरलता, प्रवाहमयता और सुबोधता की और ध्यान देना आवश्यक है। कठिन शब्दों के प्रयोग से पाठक असहजता महसूस कर सकते हैं। समाचार लेखन के लिए मानक भाषा का प्रयोग करना चाहिए। इसमें अलंकारिकता, लाक्षणिकता, काव्यात्मकता और चमत्कारिकता के लिए कोई स्थान नहीं है।

उपर्युक्त तत्त्वों को ध्यान में रखकर बनाये गए समाचार-पत्र एवं पत्रकार दोनों की सफलता की गारंटी बन जाते हैं। अतः समाचार लिखते समय पाठकों की जिज्ञासा एवं रुचि का ध्यान रखने के बाद भी अपनी ओर से सर्वोत्तम और सही करके दिखाने का प्रयास समाचार की गुणवत्ता को कई गुना बढ़ा देता है।

### 1.3.3 समाचार का महत्त्व :

वर्तमान युग के लोकतांत्रिक शासन में जन-जागरण एवं लोक-शिक्षण की दृष्टि से समाचार का विशेष महत्त्व है। आज आधुनिक युग में समाचार पत्र 'टी-टेबल' का मुख्य विषय बन चुका है। 'समाचार पत्र' के थोड़े विलंब होने पर मनुष्य व्याकुल हो उठता है, इससे पता चलता है कि वर्तमान युग में मनुष्य के दैनिक जीवन में समाचार का महत्त्व कितना बढ़ चुका है। समाचार पत्र की उपयुक्तता और महत्त्व के संबंध में डॉ. रमेशकुमार जैन लिखते हैं- ''लोकतंत्र में समाचार पत्रों का महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि जनता को देश-विदेश की गतिविधियों से परिचित कराने के लिए वही एकमात्र साधन है। इसके अतिरिक्त जनमत और जन-

दृष्टिकोण को प्रकट करने का भी वह सर्वोत्कृष्ट स्रोत है।'' स्पष्ट है कि भारत जैसे लोकतांत्रिक राष्ट्र में समाचार पत्रों का महत्त्व और अधिक बढ़ चुका है।

समाचार पत्र समाज के सामने कई समस्याओं को प्रस्तुत करते हुए उसके समाधान के लिए रास्ता भी खोज निकालते हैं। इससे लोगों को निर्णय करने और अपना रास्ता चुनने में आसानी होती है। समाचार पत्र का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य यह है कि वह सारे विश्व की घटनाओं का संग्रह कर उन घटनाओं का दर्पण मनुष्य के हाथ में सौंप देता है। इससे लोगों में ज्ञानवृद्धि तो होती ही है लेकिन 'वैश्विक एकता' की दृष्टि से समाचार पत्र का यह कार्य महत्त्वपूर्ण माना जाता है। संप्रेषण के माध्यमों के विकास ने समाचार पत्रों को इतना व्यापक बना दिया है कि आज हम घर बैठे विश्व में घटनेवाली घटनाओं को देख एवं सुन सकते हैं। इसी के माध्यम से बच्चे, बुढ़े, पढ़ें, लिखें सभी में ज्ञानवृद्धि होती है।

समाचार पत्र लोक भावनाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। यह एक सामाजिक परिवर्तन तथा क्रांति की अग्रदूत है। समाचार पत्र राजनीति के मदोन्मत्त गजराजों को अंकुश में रखकर चींटी के कण की भी चिंता करती है। यह निराधार और लाचार की सहायता प्रदान करती है तो दूसरी और यह सामाजिक परिवर्तन तथा राजकीय उथल-पुथल के लिए शंखनाद भी है। नेपोलियन बोनापार्ट जैसा तानाशाह भी यही कहता था कि चार विरोधी अखबारों की ताकत चार हजार बंदूकों की ताकत से भी खतरनाक होती है। इससे पता चलता है कि समाचार पत्रों का भविष्य कितना उज्ज्वल है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर समाचार पत्र के महत्त्व को द्विगुणित करते हुए लिखते हैं-

''कलम देश की बड़ी शक्ति है भाव जगाने वाली,
दिल में नहीं दिमागों में भी आग लगाने वाली।''

वर्तमान युग में पिछड़ी हुई जातियों के उत्थान में समाचार पत्र का कार्य महत्त्वपूर्ण रहा है। समाचार का उद्देश्य सामान्य जनता की समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करना तथा समाज क्रांति की दिशा में चेतना जागृत करना है। समाज में व्याप्त अंधविश्वास के विरुद्ध पत्रकारिता युद्ध छेड़ सकती है। जाति-पांति, बाल-विवाह, छुआछूत, बेमेल विवाह आदि का विरोध तथा विधवा विवाह का समर्थन करते हुए जन-जागरण की दृष्टि से समाचारों का विशेष महत्त्व है।

पत्रकारिता सजग प्रहरी की भांति समाज पर कड़ी नजर रखती है। समाज में हर कोने में घटित घटनाओं, रहस्यों को लोगों के सामने लाने का काम समाचार पत्र करते हैं। वर्तमान में चल रहे 'स्टींग ऑपरेशन' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाले भ्रष्टाचार एवं घोटालों को समाज के सामने रखने का काम समाचार पत्र करते हैं। उदा. तेलगी घोटाला, कर्णिक घोटाला आदि।

समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारों, अग्रलेखों और संपादकीय टिप्पणियों द्वारा जनता में वैचारिक जागरण की दृष्टि से भी समाचार का विशेष महत्त्व है। सामाजिक बुराईयाँ, राजनीति के छल, आर्थिक दुरावस्था, एड्स, कॅन्सर, कोरोना जैसे भयावह रोग आदि से बचने तथा सचेत रहने की शिक्षा देते हुए

नागरिकों में दायित्व बोध जागृत करने का काम समाचार पत्र करते हैं। वर्तमान नवोदित लेखकों, कवि-कवियित्रियों को प्रकाश में लाने का श्रेय समाचार पत्र को ही है। समाचार पत्र वर्तमान युग में करोड़ों लोगों की आजीविका का साधन बन चुके हैं। अतः समाचारों को लेकर कहा जा सकता है कि यह समाज के लिए वरदान है।

### 1.3.4 समाचार संकलन के स्रोत :

समाचार का क्षेत्र पर्याप्त विस्तृत है। मनुष्य की पहुँच जल, थल, और आकाश तक हो गई है। कभी भी कोई समाचार निश्चित समय या स्थान पर नहीं मिलते हैं। समाचार संकलन के लिए संवाददाताओं को विविध क्षेत्रों में जाना पड़ता है। क्योंकि कहीं भी कोई ऐसी घटना घट सकती है, जो एक महत्त्वपूर्ण समाचार बन सकती है। संवाददाता अपने समाचार पत्रों के लिए विभिन्न स्रोतों से समाचारों को प्राप्त करते हैं। संवाददाताओं को सभी तरह के समाचार कहाँ से प्राप्त होते हैं, उसके स्रोत कौन-कौन से हैं इसके संदर्भ में विस्तृत जानकारी निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत की गई हैं-

**1. प्रत्यशित स्त्रोत :**

समाचार के प्रत्याशित स्रोतों को ज्ञात स्रोत भी कहा जाता है। वास्तव में देखा जाए तो प्रत्येक संवाददाता को यह ज्ञात होता है कि संबंधित विषय के समाचार कहाँ पर प्राप्त होंगे। समाचार प्राप्ति के ऐसे सभी स्रोत जिनके बारे में पत्रकार को पहले से ज्ञात और अनुमान होता है। इस प्रकार के सूचना माध्यम प्रत्याशित या ज्ञात स्रोत के अंतर्गत आते हैं। यह स्रोत हैं- विभिन्न विभागों के जनसंपर्क कार्यालय, केंद्र और राज्य सरकारों के प्रमुख सूचना कार्यालय, अस्पताल, पुलिस थाना, नगरपालिका, नगर निगम, ग्राम पालिकाएँ, राजनीतिक दल, संसद, विधानसभा, विधानपरिषद, न्यायालय, सरकारी घोषणाएं, सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं के सम्मेलन, विविध समितियों की बैठकें, सार्वजनिक वक्तव्य, पत्रकार सम्मेलन, सभा स्थल जहाँ निरंतर विविध कार्यक्रम होते हैं आदि सभी समाचार प्राप्ति के प्रत्याशित या ज्ञात स्रोत के अंतर्गत आते हैं, जिसका क्षेत्र विस्तृत है।

**2. पूर्वानुमानित स्त्रोत :**

जिससे यह उम्मीद रहती है तथा जिनके बारे में पूर्व से अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ से महत्त्वपूर्ण समाचार प्राप्त हो जाएंगे उसे पूर्वानुमानित स्रोत कहा जाता है। उदाहरण के लिए किसी मोहल्ले में अक्सर गंदगी रहती है तो वहाँ यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उस क्षेत्र में पिछले दिनों जो बिमारी का प्रकोप था, उसका कारण यह गंदगी रही है, इसके आधार पर रिपोर्टर भविष्य का खाका खींच सकता है। इसके अलावा वह उस मौहल्ले का तुलनात्मक अध्ययन शहर के अन्य मोहल्लों के साथ करके समाचार तैयार कर सकता है कि यहाँ के लोग ही इतने अधिक बीमार क्यों रहते हैं या हो रहे हैं। इसी प्रकार हम मौसम का पुर्वानुमान लगा सकते हैं। इस संबंध में मौसम विभाग से बात करके पुर्वानुमान के आधार पर मौसम की विश्लेषणात्मक खबर बना सकते हैं। इसके अलावा रेलवे स्टेशन, धरना स्थान, प्रदर्शन रैली, विद्यालय,

महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय, चिकित्सा स्थल, गंदी बस्तियाँ, विभिन्न शासकीय और अशासकीय कार्यालय, यातायात दुर्घटना, वाहन बाजार आदि स्थान सूचना प्राप्ति के पूर्वानुमानित स्रोत के महत्त्वपूर्ण स्थल होते हैं।

### 3. अप्रत्याशित स्त्रोत :

अप्रत्याशित स्रोत में विशेषकर हम उन घटनाओं या सूचनाओं का जिक्र कर सकते हैं जिनके बारे में हमें पहले से कुछ भी अनुमानित नहीं होता है। पत्रकार कहा जाता है और वहां एकाएक कोई घटना घट जाती है अथवा कोई ऐसा व्यक्ति उसे टकरा जाता है कि वह अनायास ही बिना किसी प्रयास के बहुत बड़ा समाचार प्राप्त कर लेता है। जैसे सड़क पर चलते वक्त सामने कोई हादसा हो जाना, सिनेमा देखते समय वहां दो पक्षों के बीच झगड़ा होना अथवा सिनेमा हॉल में आग लगना, आँखों के सामने किसी का खून होना, बाजार में भीड़ के बीच कुछ अलग व्यवहार अथवा बात करते हुए लोगों की एकाएक से कुछ बात सुनते ही कोई बड़े हादसे या योजना के बारे में पता चलना आदि को अप्रत्याशित स्रोत माना जाता है।

### 4. समाचार समितियाँ :

न्यूज एजेंसी या समाचार समितियाँ वह होती हैं, जिनकी पहुँच को लेकर कहा जाता है कि इनके संवाददाता सर्वत्र पाए जाते हैं। पत्रकारिता जगत् में इन्हें लेकर यह कहावत विख्यात है कि 'जहाँ पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे संवाद समिति।' अर्थात् जहां तक सूर्य की रोशनी और मानव बस्तियाँ इस पृथ्वी पर मौजूद हैं वहाँ किसी सूचना माध्यम की पहुँच भले ही न हो किन्तु संवाद समिति से जुड़ा व्यक्ति वहाँ अवश्य पहुँचता है। संवाद समितियाँ समाचार प्राप्ति की प्रामाणिक और त्वरित स्रोत है। भारत सहित विश्व के तमाम देशों में प्रेस की स्थापना के बाद से ही इन समाचार समितियों का सूचनाओं के आदान-प्रदान में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। देश में आज हिंदुस्तान समाचार संवाद समिति, युनीवार्ता, प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया, आईएएनएस, नेशनल न्यूज सर्विस, नेशनल प्रेस एजेंसी, संवाद परिक्रमा, सिंडीकेटिक जर्नलिस्ट आदि महत्त्वपूर्ण संवाद समितियाँ कार्यरत हैं। यह समितियाँ देश, विदेश के विभिन्न विषयों पर केंद्रित समाचारों को बहुतायत में उपलब्ध कराती हैं। वहीं कुछ संवाद समितियाँ ऐसी भी हैं जो विषय विशेष पर केंद्रित होकर समाचार अपने ग्राहकों को उपलब्ध कराती है।

### 5. प्रेस रिलीज :

विज्ञप्तियाँ समाचारों की बहुत बड़ी स्रोत मानी जाती है। कई बार समाचार पत्र के पृष्ठों को भरने के लिए ताजा समाचार उपलब्ध नहीं होते हैं। ऐसे में विज्ञप्तियाँ यानी प्रेस नोट महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वस्तुत: प्रेस रिलीज अथवा समाचार विज्ञप्ति को खबरों का एक व्यापक स्रोत माना जाता है। इन विज्ञप्तियों के माध्यम से अनेक नवीनतम समाचार स्वयं चलकर मीडिया माध्यमों के दफ्तरों तक पहुँचते हैं। प्रेस रिलीज को स्पष्ट करते हुए डॉ. राम प्रकाश लिखते हैं- ''विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों, संस्थाओं और संस्थानों आदि द्वारा समय-समय पर अपनी नीतियों, गतिविधियों, अपने उद्देश्यों, कार्य कलापों, कार्यक्रमों

आदि की जानकारी देने के लिए जारी की गई सूचनाएं आदि प्रेस रिलीज कहलाती है।'' अर्थात् सरकारी संस्थान, निजी संगठन या स्वयं व्यक्ति अपनी उपलब्धियों से परिचित कराने के लिए स्वयं से संबंधित समाचार को सरल और स्पष्ट भाषा में लिखकर पत्र-पत्रिकाओं, समाचार चैनल्स, न्यूज एजेंसियों एवं अन्य संवाद माध्यमों तक प्रचार-प्रसार तथा प्रसारण के लिए भिजवाते हैं। इन्हें प्रेस विज्ञप्ति या प्रेस रिलीज कहा जाता है। यह शासन स्तर पर चार प्रकार से प्रेषित होती है- 1) प्रेस नोट 2) प्रेस कम्युनिक्स 3) हैण्ड आउट 4) गैर-कार्यालय हैण्ड आउट आदि।

**6. साक्षात्कार अथवा भेंटवार्ता :**

किसी विशेष व्यक्तित्व से आमने-सामने बैठकर बातचीत के द्वारा सूचना एकत्र करने की प्रक्रिया को साक्षात्कार कहा जाता है। साक्षात्कार अथवा भेंटवार्ता व्यक्तिगत समाचार संकलन का ही एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। वर्तमान समय में ज्यादातर समाचार पत्र और पत्रिकाएँ किसी-न-किसी क्षेत्र के प्रसिद्ध व्यक्ति का साक्षात्कार लेती है और उसे प्रकाशित करती है। साक्षात्कार की लोकप्रियता आज शीर्ष पर है, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। आधुनिक युग में विशिष्ट साक्षात्कार से नये समाचार निकल आते हैं। जब किसी महत्त्वपूर्ण नेता का साक्षात्कार लिया जाता है और वह अपनी भविष्य की कार्य योजना को बताता है तो ऐसे साक्षात्कार का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है। इसे दो भागों में विभाजित किया जाता है- प्रथम, महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों का साक्षात्कार जो समाचार की दृष्टि में महत्त्वपूर्ण होते हैं और प्रथम पृष्ठ की सामग्री बन जाते हैं। द्वितीय, कम महत्त्वपूर्ण मनुष्यों के साथ भेंटवार्ता, जो किसी नई घटना या कार्य की वजह से समाचार पत्र की शोभा बढ़ाते हैं। प्रथम श्रेणी में अंतरराष्ट्रीय अथवा राष्ट्रीय नेताओं, राजनीतिज्ञों और सरकारी अफसरों के साक्षात्कार आते हैं। दूसरे में किसी घटना खास का वर्णन होता है। हिंदी पत्रकारिता में साक्षात्कार के लिए एक निश्चित प्रक्रिया अपनाई जाती है। सर्वप्रथम व्यक्ति विशेष का चयन किया जाता है। तत्पश्चात विषय, फिर योजना को अंतिम रूप दिया जाता है। इस प्रकार प्रस्तुतिकरण संभव होता है।

**7. पत्रकार सम्मेलन अथवा प्रेस कॉन्फ्रेंस :**

सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थान अक्सर अपनी उपलब्धियों को प्रकाशित करने के लिए पत्रकारवार्ता का आयोजन करते हैं। उनके द्वारा दिए गए वक्तव्य समृद्ध समाचारों को जन्म देते हैं। वस्तुतः पत्रकार सम्मेलन या प्रेस कॉन्फ्रेंस से तात्पर्य है कि ''विशिष्ट व्यक्तियों, दलों, संस्थाओं द्वारा विशिष्ट अवसर पर विषय विशेष के संबंध में अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के उद्देश्य से आमंत्रित पत्रकारों का सम्मेलन।'' यह सम्मेलन समाचार प्राप्त करने का महत्त्वपूर्ण स्रोत है। राष्ट्राध्यक्ष, प्रधानमंत्री, मंत्री, नेता, उच्च अधिकारी, किसी संस्था के पदाधिकारी आदि कोई भी व्यक्ति अपना पक्ष मीडिया में प्रस्तुत करने के लिए पत्रकार सम्मेलन आयोजित कर सकता है, जिसमें वह अपने पक्ष की जानकारियों का क्रमशः बिंदुवार विस्तार से वर्णन संवाददाताओं या मीडिया कर्मियों को उपलब्ध करवाते हैं। पत्रकार सम्मेलन में पत्रकार किसी भी प्रकार का सवाल पूछ सकते हैं किंतु प्रमुख वक्ता प्रत्येक सवाल का जवाब देने के लिए बाध्य नहीं होता है। प्रश्न

को वह हास्य विनोद की शैली में टाल भी सकता है, या कोई उत्तर नहीं कहकर प्रश्नकर्ता को शांत कर सकता है। पूछे जानेवाले प्रश्न संक्षिप्त होने चाहिए।

**8. अनुवर्तन (फॉलोअप) :**

पिछले दिन के समाचार के बाद नए समाचार प्राप्त करने को 'फॉलोअप' या 'समाचारों का अनुवर्तन' कहा जाता है। अनुवर्तन से तात्पर्य है– ''समाचार का पीछा करना, सिलसिलेवार चलने वाले समाचार की निरंतर आगामी दिवसों में खोज एवं प्रस्तुति।'' संसदीय कार्यवाही, कई दिन चलने वाले अधिवेशन, आकस्मिक दुर्घटना, दैवी प्रकोप, खेल प्रतियोगिता, भीषण डकैत, राजनीतिक अथवा सत्ता परिवर्तन आदि से संबंधित समाचारों की रिपोर्ट एक से अधिक दिनों में क्रमशः छपती रहने के कारण ऐसे समाचारों का अनुवर्तन स्वाभाविक होता है। खोजपूर्ण, रोमांचक समाचारों का अनुवर्तन भी आवश्यक होता है। षड्यंत्र, जालसाजी, जासूसी आदि से संबंधित समाचार भी अनुवर्तनीय होते हैं। वास्तव में देखा जाए तो महत्त्वपूर्ण घटनाओं की विस्तृत रिपोर्ट संवाददाता के पास हो तभी समाचार अधिक रुचिकर बनते हैं। दर्शक चाहते हैं कि बड़ी घटनाओं के संबंध में उन्हें विस्तार से जानकारी मिलती रहे। इसके लिए संवाददाताओं को जितना अधिक संभव हो, न्यूज से संबंधित घटनाओं की तहतक जाना पड़ता है। तब जाकर उसे बार–बार उस घटना से जुड़ी नई–नई जानकारियाँ प्राप्त होती है।

संक्षेप में समाचार संकलनकर्ता के संदर्भ में यह कहना उचित होगा कि वह समाज और समाचार पत्र का महत्त्वपूर्ण व्यक्ति होता है। उसके ऊपर महत्त्वपूर्ण दायित्व रहता है। अगर एक पत्रकार अपने सूचना स्रोत के प्रति वफादार एवं विश्वसनीय है तो वह सदा नवीनतम सूचनाएं समाचार पत्र के लिए अर्जित करता रहेगा।

## 1.4 स्वयं–अध्ययन हेतु प्रश्न

**अ) नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

1. समाचार पत्र को तोप से भी अधिक शक्तिशाली............. ने कहा हैं।

   अ) अकबर इलाहाबादी ब) नेपोलियन बोनापार्ट

   क) अब्राहम लिंकन ड) प्लेटो

2. समाचार शब्द अंग्रेजी के .............. का हिंदी रूपांतरण है।

   अ) NEW ब) NEWLY क) NEWS ड) NORTH

3. अख़बार की ताकत बंदूक से भी खतरनाक होती है यह कथन ................ का है।

   अ) अकबर इलाहाबादी ब) नेपोलियन बोनापार्ट

   क) रूसो ड) अब्राहम लिंकन

4. समाचार का पर्यायवाची शब्द .............. है।

   अ) वृत्तांत ब) सूचना क) ख़बर ड) उपर्युक्त सभी

5. 'समाचार जल्दी में लिखा गया इतिहास है' यह परिभाषा.......... की है।

अ) लैदर वुड  ब) टर्नन कॉलेज  क) जॉर्ज एच. मौरिस ड) रा. र. खाडेलकर

**ब) नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।**

1. समाचार के मूल तत्त्व................. है।

   अ) नवीनता  ब) जनरुचि  क) लोकहित की भावना  ड) उपर्युक्त सभी

2. नवीनता ........... का अनिवार्य तत्त्व है।

   अ) समाचार  ब) कविता  क) उपन्यास  ड) रिपोर्ताज

3. समाचार के प्रत्याशित स्रोत को............ भी कहा जाता है।

   अ) विद्या  ब) ज्ञात  क) पूर्वानुमानित  ड) अप्रत्याशित

4. प्रेस रिलीज के ................... प्रकार है।

   अ) चार  ब) पांच  क) छः  ड) सात

5. साक्षात्कार को................... भी कहा जाता है।

   अ) सम्मेलन  ब) भेंटवार्ता  क) कॉन्फ्रेंस  ड) अनुवर्तन

## 1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

- संरचनात्मकता - गठनात्मक, रचनात्मक
- सम्यक - समस्त, उचित, उपयुक्त
- विवरण - स्पष्ट करना, व्याख्या, ब्यौरा
- असाधारण - विशेष
- सामयिक - समयानुसार, समयबद्ध
- परवर्ती - बाद में होनेवाला, घटनाक्रम के अनुसार बाद का।
- तकनीकी - प्राविधिक, शिल्पक
- वृत्तांत - समाचार
- अग्रदूत - अग्रगामी, आगमन की सूचना देना
- प्रेस - मुद्रणालय
- अख़बार - समाचार पत्र
- भेंटवार्ता - साक्षात्कार, बातचीत
- अनुवर्तन - फॉलोअप
- संकलनकर्ता - एकत्र या जमा करनेवाला व्यक्ति

- संवाददाता - अखबारों में स्थानिक घटनाओं का विवरण भेजनेवाला व्यक्ति।
- प्रत्याशित - पूर्वानुमानित

## 1.6 स्वयं – अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

अ) 1. (अ) अकबर इलाहाबादी | 2. (ब) नेपोलियन बोनापार्ट

3. (क) NEWS | 4. (ड) उपर्युक्त सभी

5. (क) जॉर्ज एच. मौरिस

ब) 1. समाचार के मूल तत्त्व उपर्युक्त सभी है।

2. नवीनता समाचार का अनिवार्य तत्त्व है।

3. समाचार के प्रत्याशित स्रोत को ज्ञात भी कहा जाता है।

4. प्रेस रिलीज के चार प्रकार है।

5. साक्षात्कार को भेंटवार्ता भी कहा जाता है।

## 1.7 सारांश

समाचार पत्र एक ऐसा सशक्त माध्यम है, जो मानव जीवन की विविधताओं, नित्य-नवीन और दैनिक घटनाओं एवं प्रसंगों को शीघ्र प्रस्तुत करने की क्षमता रखता है। वर्तमान युग में समाचार पत्र विश्व का स्पंदन एवं मानव जीवन का अनिवार्य तत्व बन चुका है।

समाचार के लिए नवीनता के अतिरिक्त सामयिकता, विशिष्टता, असाधारणता, परिवर्तन, सामाजिक मूल्यों और मर्यादाओं का उल्लंघन, अवमूल्यन का होना अनिवार्य है। इसके बगैर समाचार की संरचना नहीं हो सकती है।

समाचार को प्रभावी, सर्वग्राह्य, संतुलित, सुनियोजित तथा आकर्षक बनाने का महत्त्वपूर्ण कार्य समाचार लेखन के तत्त्वों ने किया है।

लोकतंत्र में समाचार पत्रों का महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि जनता को देश-विदेश की गतिविधियों से परिचित कराने के लिए वही एकमात्र साधन है। इसके अतिरिक्त जनमत और जन-दृष्टिकोण को प्रकट करने का भी वह सर्वोत्कृष्ट साधन है।

समाचार प्राप्ति के स्रोत विभिन्न विभागों के जनसंपर्क कार्यालय, केंद्र और राज्य सरकारों के प्रमुख सूचना कार्यालय, अस्पताल, पुलिस थाना, नगरपालिका, नगर निगम, ग्राम पालिकाएँ, राजनीतिक दल, संसद, विधानसभा, विधानपरिषद, न्यायालय, सरकारी घोषणाएं, सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं के सम्मेलन, विविध समितियों की बैठकें, सार्वजनिक वक्तव्य, पत्रकार सम्मेलन, सभा स्थल आदि हैं।

## 1.8 स्वाध्याय :

**अ) निम्नलिखित लघुत्तरी प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।**

1. समाचार का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
2. समाचार के मूल तत्त्वों का संक्षेप में विवेचन कीजिए।
3. समाचार का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।
4. प्रत्याशित स्रोत का विवेचन कीजिए।
5. पूर्वानुमानित स्रोत को स्पष्ट कीजिए।

**आ) निम्नलिखित दीर्घोत्तरी प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

1. समाचार के स्वरूप को विस्तार से लिखिए।
2. समाचार के मूल तत्वों का विवेचन कीजिए।
3. समाचार के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उसके महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
4. समाचार के स्रोतों का विवेचन कीजिए।

## 1.9 क्षेत्रीय कार्य

1. पत्रकारिता के प्रकारों का अध्ययन कीजिए।
2. समाचार समितियों का अध्ययन कीजिए।
3. समाचार गठन प्रक्रिया का अध्ययन कीजिए।

## 1.10 अतिरिक्त अध्ययन हेतु संदर्भ


1. मीडिया कालीन हिंदी - डॉ. अर्जुन चव्हाण
2. मीडिया लेखन - डॉ. चंद्रप्रकाश मिश्र
3. मीडिया और प्रसारण - डॉ. रमेश मेहरा
4. समाचार पत्रों की भाषा - डॉ. माणिक मृगेश
5. हिंदी पत्रकारिता का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. रमेशकुमार जैन
6. पत्रकारिता के विविध आयाम - डॉ. गोविंद प्रसाद, अनुपम पांडेय
7. जन पत्रकारिता, जनसंचार एवं जनसंपर्क - प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित
8. पत्रकारिता जनसंचार और विज्ञापन - गुलाब कोठारी


❑❑❑

# इकाई –2 समाचार लेखन
## 2.1 महाविद्यालयीन समारोह, 2.2 प्राकृतिक आपदा, 2.3 सामाजिक समारोह, 2.4 क्रिड़ा समाचार

**अनुक्रम –**


2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवेचन

  2.3.1 महाविद्यालयीन समारोह

  2.3.2 प्राकृतिक आपदा

  2.3.3 सामाजिक समारोह

  2.3.4 क्रीड़ा समाचार

2.4 स्वयं – अध्ययन हेतु प्रश्न

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.6 स्वयं – अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन हेतु संदर्भ।


### 2.1 उद्देश :

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप –

1. समाज में घटित होनेवाली घटनाओं की जानकारी से परिचित होंगे।
2. समाचार लेखन की उपयोगिता से परिचित होंगे।
3. महाविद्यालयों में आयोजित समारोहों से परिचित होंगे।
4. सामाजिक समारोहों से परिचित होंगे।
5. प्राकृतिक आपदा और क्रीड़ा से संबंधित घटनाओं से अवगत होंगे।

## 1.2 प्रस्तावना :

आधुनिक युग में जनसंचार माध्यमों की अत्यधिक गतिशीलता है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की विभिन्न सेवा एवं सुविधाओं के कारण इनकी संख्या में निरंतर बढ़ोत्तरी हो रही है। इसके बावजूद मुद्रित माध्यमों का असर एवं महत्त्व रत्तीभर भी कम नहीं हुआ है। विश्व के हर कोने में घटित घटनाओं एवं समाचारों के संबंध में जानने एवं पढ़ने के लिए सभी में उत्सुकता दिखाई देती है। समाचार लेखन की अपनी विशिष्ट प्रविधि होती है। मानव हमेशा से जिज्ञासू प्रवृत्ति का रहा है। वह जानकारी देने तथा प्राप्त करने की सहज मानवीय प्रवृत्ति से युक्त है। जानकारी उपलब्ध करवानें की प्रणाली को आज समाचार अथवा वृत्तांत लेखन भी कहा जाता है। आज के संगणकीय युग में 'समाचार लेखन' की कला काफी विकसित हुई है। समाचार लेखन करते समय पत्रकार को अनेक बातों के संबंध में सावधानी बरतनी पड़ती है। विभिन्न जानकारियों, विषयों, गतिविधियों, सूचनाओं एवं विज्ञापनों को कम से कम शब्दों में प्रभावशाली ढंग से पाठकों तक पहुंचाना 'समाचार लेखन' का प्रमुख उद्देश्य है।

समाचार लेखन एक विशिष्ट कला हैं। श्रेष्ठ समाचार वहीं है, जो सूचनात्मक हो और उसमें तथ्यों को इस प्रकार संकलित किया गया हो कि पाठक घटित घटना का वृत्तांत सही परिप्रेक्ष्य में समझ सके। समाचारों में रोचकता, ज्ञान, जिज्ञासा, सत्यता, प्रामाणिकता, असाधारणता आदि महत्त्वपूर्ण बातों का मिलाप रहता है। प्रस्तुत इकाई में महाविद्यालयीन समारोह, प्राकृतिक आपदा, सामाजिक समारोह और क्रीड़ा समाचार का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है।

## 2.3 विषय विवेचन :

### 2.3.1 महाविद्यालयीन समारोह का स्वरूप :

महाविद्यालयीन स्तर पर विभिन्न समारोहों का आयोजन किया जाता है, जिसका मूल उद्देश्य छात्रों का व्यक्तित्व विकास और उनके अंदर छिपे विभिन्न कला गुणों को बाहर निकालना होता है। जिससे छात्रों को अपने भविष्य को योग्य दिशा देने में सहायता मिलती है।

महाविद्यालयीन समारोह का समाचार लेखन अत्यंत क्रमबद्ध पद्धति से होना चाहिए। निश्चित क्रम ही समारोह के समाचार को योग्य आकार देता है। महाविद्यालयीन समारोह का प्रारंभ स्वागत गीत, प्रतिमा पूजन तथा दीप प्रज्वलन या पौधे को पानी डालकर होना चाहिए। समारोह के प्रमुख अतिथि या समारोह के अध्यक्ष के हाथों दीप प्रज्वलन होता है। प्रास्ताविक में समारोह का संयोजक समारोह का उद्देश्य और महाविद्यालय की भूमिका को स्पष्ट करता है। बाद में छात्रों और अध्यापकों के मंतव्य होते हैं। इन मंतव्यों के बाद प्रमुख अतिथि अपना मंतव्य प्रस्तुत करते हैं। अंत में अध्यक्षीय मंतव्य और आभार ज्ञापन होता है। इसके बाद राष्टगान के साथ समारोह संपन्न होता है।

महाविद्यालयीन स्तर पर समारोह की जिम्मेदारी अध्यापक अपने छात्रों को देते हैं। जिससे छात्रों में धैर्य और निर्भीकता का गुण विकसित होता है। छात्र समारोह की जिम्मेदारी अपने कंधों पर लेकर समारोह को

सफल एवं सुचारू ढंग से संपन्न करते हैं। इस प्रक्रिया में अध्यापक भी छात्रों को बड़ी मात्रा में प्रोत्साहित करते हैं।

समारोह आयोजन की तैयारी एक दिन पहले ही शुरू करनी चाहिए। समारोह के दिन केवल समारोह की संपन्नता पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। समारोह में किस अतिथि को आमंत्रित करना है, इसकी तैयारी एक सप्ताह पहले से ही करनी चाहिए। तब कहीं जाकर समारोह सुचारू एवं सुनियोजित रूप में संपन्न हो सकता है।

### 2.3.1.1 महाविद्यालयीन समारोह की विविधता :

छात्रों का सर्वांगीण विकास करने के उद्देश्य से प्रत्येक महाविद्यालय विविध समारोह का आयोजन करके छात्रों को मंच प्रदान करते हैं। छात्रों के व्यक्तित्व विकास में इन समारोहों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। महाविद्यालय में निबंध, काव्यवाचन, रंगोली, भाषण, चित्रकला और गीत गायन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। ऐसी प्रतियोगिताओं का आयोजन एक प्रकार से समारोह ही माना जा सकता है।

महाविद्यालय में वार्षिक पारितोषिक वितरण, नवागत छात्रों का स्वागत, शिक्षक दिवस, स्वाधीनता दिवस, गणतंत्र दिवस, कवि सम्मेलन, हिंदी दिवस, काव्यगोष्ठी, वार्षिक क्रीड़ा महोत्सव, वृक्षारोपण, जनसंख्या दिवस, महिला दिवस, पर्यावरण दिवस, योगा दिवस, क्रांति दिवस, छत्रपति शिवाजी महाराज जयंती, महात्मा गांधी जयंती, सावित्रीबाई फुले जयंती, राजर्षि छत्रपति शाहू महाराज जयंती, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जयंती, राष्ट्रीय सेवा योजना संबंधी समारोह आदि विभिन्न प्रकार के समारोहों का आयोजन छात्रों के लिए किया जाता है।

उपर्युक्त समारोहों का आयोजन छात्रों में राष्ट्रप्रेम एवं सामाजिक कर्तव्यों की जागृति करने में सहायता प्रदान करते हैं। महान महानुभावों के जन्मदिवस का आयोजन कर छात्रों को उनके विचारों से परिचित कराने का प्रयास किया जाता है। अतः महाविद्यालयीन समारोहों की सफलता इसी में विहित होती है।

### 2.3.1.2 महाविद्यालयीन समारोह का प्रारूप लेखन :

**मुंबई विश्वविद्यालय में 'विश्व पर्यावरण दिवस'**

मुंबई, तिथि 06 : मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई के पर्यावरणशास्त्र विभाग में तिथि 5 जून, 2023 को सुबह 10.30 बजे 'विश्व पर्यावरण दिवस' समारोह का आयोजन किया गया था। इस समारोह के सुअवसर पर वन प्रमंडल के पदाधिकारी मा. सचिन जगताप प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह के अध्यक्ष विभाग प्रमुख प्रो. डॉ. एस. पी. वांजरवाडे थे। विभाग के अध्यापक डॉ. अमोल पालेकर ने समारोह का प्रास्ताविक किया।

समारोह की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई। तत्पश्चात विभाग के सहयोगी प्राध्यापक डॉ. अभय तिवारी ने अतिथि का संक्षिप्त परिचय छात्रों के सामने प्रस्तुत किया। विभाग के प्रमुख प्रो. डॉ. एस. पी.

वांजरवाडे जी ने प्रमुख अतिथि का स्वागत फुलों का गुलदस्ता एवं किताब देकर किया। समारोह के अध्यक्ष का स्वागत विभाग के अध्यापक डॉ. अमोल पालेकर जी ने फुलों का गुलदस्ता देकर किया।

स्वागत एवं प्रस्ताविक के पश्चात् विभाग के छात्रों ने पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के संबंध में अपने विचार प्रकट किए। इसके उपरांत प्रमुख अतिथि मा. सचिन जगताप जी ने अपना मंतव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि, ''आनेवाले समय में मनुष्य एवं प्राणी जगत को सुरक्षित रखने के लिए जल, वायु, भूमि और वन का संरक्षण एवं संवर्धन करना अत्यंत आवश्यक है।'' इसके साथ ही उन्होंने पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन संबंधी अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किए है।

समारोह के अध्यक्ष तथा विभाग के प्रमुख प्रो. डॉ. एस. पी. वांजरवाडे जी ने मानवीय जीवन में पारिस्थितिकी तंत्र की महत्ता को स्पष्ट किया, साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि पर्यावरण में मनुष्य का हस्तक्षेप मानवी जीवन को तबाह कर सकता है। विभाग की छात्रा अनुप्रिया पाटील ने आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया। समारोह का सूत्रसंचालन विराट मोहिते ने किया। राष्टगान के साथ समारोह संपन्न हुआ।

**2.3.1.3 महाविद्यालयीन समारोह : समाचार लेखन की विशेषताएँ :**

महाविद्यालयीन समारोह के माध्यम से छात्रों को विविध प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त होती है। जैसे –

- महाविद्यालय में होनेवाली गतिविधियों की विस्तृत जानकारी मिलती है।
- छात्रों के व्यक्तित्व विकास में महाविद्यालयीन समारोह अत्यंत उपयुक्त साबित होते हैं।
- महाविद्यालयीन समारोह के समाचार लेखन में सत्यता और प्रामाणिकता होती है।
- महाविद्यालयीन समारोह का समाचार लेखन एक निश्चित पद्धति के अनुसार होता है।
- इस समाचार लेखन में प्रमुख अतिथि के महत्त्वपूर्ण विचारों को प्रस्तुत करना जरूरी होता है।
- शीर्षक में आकर्षकता आवश्यक है।
- महाविद्यालयीन समारोह के समाचार लेखन में सजीवता और आकर्षकता के गुण होना जरूरी है।
- पाठकों की जिज्ञासा जागृत करनेवाला समाचार लेखन हो।
- छात्रों को विभिन्न गतिविधियों में प्रतिभागी होने की प्रेरणा मिलती है।

**2.3.1.4 महाविद्यालयीन समारोह : समाचार लेखन की समस्याएँ :**

महाविद्यालयीन समारोह का समाचार लेखन करते समय निम्नांकित समस्याएँ आती हैं। जैसे –

- समाचार लेखन करते समय समारोह का वर्णन लंबा चौड़ा किया जाता है।
- समाचार लेखन करते समय अतिशयोक्तिपूर्ण कथन किया जाता है।
- समाचार लेखन में कभी–कभी दीप प्रज्वलन करनेवालों की लंबी सूची दी जाती है।
- आलंकारिक भाषा का प्रयोग किया जाता है।
- समाचार लेखन में क्रमबद्धता की ओर ध्यान नहीं दिया जाता।

- नाट्यपूर्ण बाते लिखी जाने की संभावना होती है।

### 2.3.1.5 महाविद्यालयीन समारोह : समाचार लेखन

**1. 'छत्रपती राजर्षि शाहू महाविद्यालय में 'हिंदी दिवस'**

कोल्हापूर, तिथि 15 : रयत शिक्षण संस्था द्वारा संचालित छत्रपति राजर्षि शाहू महाविद्यालय, कोल्हापुर में तिथि 14 सितंबर, 2023 को सुबह ठीक 9.30 बजे हिंदी दिवस समारोह का आयोजन बड़े धूमधाम के साथ किया गया। सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे के वरिष्ठ अध्यापक प्रो. डॉ. एस. के. भोसले जी समारोह के प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे। महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. जे. जे. जाधव जी ने समारोह की अध्यक्षता निभाई।

समारोह के प्रारंभ में प्रमुख अतिथि, समारोह के अध्यक्ष तथा सभी विद्वज्जन आदि महानुभावों के करकमलों से दीप प्रज्वलन किया। इस अवसर पर हिंदी विभाग की छात्राओं ने स्वागत गीत का मधुर गान प्रस्तुत किया। समारोह का प्रस्ताविक हिंदी विभाग के प्रमुख डॉ. रेवन चव्हाण जी ने किया। उसके बाद अतिथि का परिचय डॉ. सचिन पाटील ने किया।

समारोह के प्रमुख प्रो. डॉ. एस. के. भोसले जी का स्वागत हिंदी विभाग के प्रमुख डॉ. रेवन चव्हाण जी ने फुलों का गुलदस्ता देकर किया। समारोह के अध्यक्ष का स्वागत डॉ. संतोष कुमार त्रिपाठी ने किया तथा हिंदी विभाग के छात्र सागर त्रिपाठी ने सभी महानुभावों का गुलाब पुष्प देकर स्वागत किया। प्रमुख अतिथि के करकमलों से निबंध प्रतियोगिता में अव्वल आएं छात्र एवं छात्राओं का सम्मान किया।

हिंदी दिवस के सुअवसर पर विभाग के छात्र-छात्राओं ने अपना मंतव्य प्रस्तुत करते हुए हिंदी भाषा की उपयुक्तता और महत्ता पर प्रकाश डाला। इसमें सागर त्रिपाठी, प्रथमेश यादव, रमेश कुमार, काजल देशमुख, प्रणाली कांबले आदि छात्र शामिल थे। तत्पश्चात् प्रमुख अतिथि प्रो. डॉ. एस. के. भोसले जी ने अपना मंतव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि, ''हिंदी आज केवल किताब एवं पत्र-पत्रिकाओं तक सीमित नहीं है बल्कि वह जनसंचार माध्यमों की प्रमुख भाषा के रूप में उभरती हुई नजर आ रही है।'' इसके साथ ही हिंदी के प्रचार-प्रसार में संचार माध्यमों की उपयुक्तता को भी स्पष्ट किया। समारोह के अध्यक्ष डॉ. जे. जे. जाधव जी ने विश्व में हिंदी भाषा के बढ़ते महत्त्व को स्पष्ट करते हुए हिंदी में उपलब्ध रोजगार के विभिन्न अवसरों पर प्रकाश डाला। विभाग के छात्र सुयश कुंभार ने आभार ज्ञापन किया। उसके बाद राष्ट्रगान के साथ समारोह संपन्न हुआ। समारोह का सूत्रसंचालन नितिन धनवडे और सुप्रिया पाठक ने सुचारू ढंग से किया।

**2. वारणा महाविद्यालय में 'शिक्षक दिवस'**

वारणा, तिथि 06 : वारणा महाविद्यालय, वारणा में 05 सितंबर, 2023 को 'शिक्षक दिवस' समारोह का आयोजन बड़े धूमधाम के साथ किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के छात्र-छात्राएँ बड़ी संख्या में उपस्थित थे। शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के वरिष्ठ अध्यापक प्रो. डॉ. गजानन राशिनकर जी समारोह के प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे। महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. ए. एम. कोरवी जी ने समारोह की अध्यक्षता निभाई।

समारोह के प्रारंभ में प्रमुख अतिथि, समारोह के अध्यक्ष तथा सभी विद्वज्जन आदि महानुभावों के करकमलों से दीप प्रज्वलन किया। इसके बाद प्रमुख अतिथि और समारोह के अध्यक्ष ने मिलकर भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की प्रतिमा पर पुष्पमाला चढ़ाई। इस अवसर पर महाविद्यालय की छात्राओं ने 'गुरू महिमा' का महत्त्व विशद करने वाले मधुर गान को प्रस्तुत किया। समारोह का प्रास्ताविक सांस्कृतिक विभाग के प्रमुख डॉ. डी. यु. जगताप जी ने किया। उसके बाद अतिथि का परिचय डॉ. सचिन जगताप ने किया।

समारोह के प्रमुख प्रो. डॉ. गजानन राशिनकर जी का स्वागत सांस्कृतिक विभाग के प्रमुख डॉ. डी. यु. जगताप जी ने फुलों का गुलदस्ता देकर किया। समारोह के अध्यक्ष का स्वागत डॉ. पंकज श्रीवास्तव जी ने किया तथा हिंदी विभाग के छात्र अनिल गाड़े ने सभी महानुभावों का गुलाब पुष्प देकर स्वागत किया।

शिक्षक दिवस के सुअवसर पर महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने अपना मंतव्य प्रस्तुत करते हुए छात्रजीवन में शिक्षकों के महत्त्व को विशद किया। मराठी विभाग के प्रमुख प्रो. डॉ. तुकाराम जाधव जी ने वर्तमान समय में शिक्षकों की बदली हुई भूमिका पर अपने विचार प्रकट किए। तत्पश्चात् प्रमुख अतिथि प्रो. डॉ. गजानन राशिनकर जी ने अपना मंतव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि, ''सामाजिक जीवन को स्वस्थ एवं सुंदर बनाने के लिए शिक्षकों को हर समय जागरूक रहना बहुत जरूरी है।'' समारोह के अध्यक्ष डॉ. ए. एम. कोरवी जी ने ''छात्रों को संस्कारशील एवं कर्तव्य दक्ष बनाने में शिक्षक अहम् भूमिका निभाते हैं।'' राज्यशास्त्र विभाग के अध्यापक डॉ. मनोज कुंभार ने आभार ज्ञापन किया। उसके बाद राष्ट्रगान के साथ समारोह संपन्न हुआ। समारोह का सूत्रसंचालन की भूमिका डॉ. तेजस्विनी पाटील और डॉ. सुप्रिया शिंदे ने सुचारू ढंग से किया।

### 3. कन्या महाविद्यालय में 'काव्य गोष्ठी'

सांगली, तिथि 10 : कन्या महाविद्यालय, सांगली में 09 दिसंबर, 2023 को काव्य गोष्ठी समारोह का आयोजन बड़े धूमधाम के साथ किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के छात्र-छात्राएँ बड़ी संख्या में उपस्थित थे। मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई के वरिष्ठ अध्यापक तथा हिंदी के प्रख्यात साहित्यकार प्रो. डॉ. केशव प्रथमवीर जी समारोह के प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे। महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. ए. एम. कोरवी जी ने समारोह की अध्यक्षता निभाई।

समारोह के प्रारंभ में प्रमुख अतिथि, समारोह के अध्यक्ष तथा सभी विद्वज्जन आदि महानुभावों के करकमलों से दीप प्रज्वलन किया। इसके बाद प्रमुख अतिथि और समारोह के अध्यक्ष ने मिलकर कवयित्री महादेवी वर्मा की प्रतिमा पर पुष्पमाला चढ़ाई। इस अवसर पर महाविद्यालय की छात्राओं ने 'गुरू महिमा' का महत्त्व विशद करने वाले मधुर गान को प्रस्तुत किया। समारोह का प्रास्ताविक सांस्कृतिक विभाग के प्रमुख डॉ. एन. आर. सावंत जी ने किया। उसके बाद अतिथि का परिचय डॉ. मनोज बाजपेई ने किया।

समारोह के इस सुअवसर पर छात्र-छात्राओं ने अपनी काव्य रचनाएं प्रस्तुत की। इसमें राष्ट्रप्रेम एवं सामाजिक समस्याओं पर आधारित कविताओं का प्रस्तुतीकरण सबसे अधिक मात्रा में हुआ था। हिंदी विभाग के सहयोगी प्राध्यापक डॉ. सतिश तेलगुटे जी ने अपने मंतव्य को प्रस्तुत करते हुए कहा कि ''काव्य और मानवीय जीवन का अटूट संबंध है। कविताओं के माध्यम से मानवीय जीवन को चित्रित किया जाता है।'' इसके बाद प्रमुख अतिथि प्रो. डॉ. केशव प्रथमवीर जी ने अपनी काव्य रचनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि, ''सामाजिक समस्याओं, परिस्थितियों और उलझनों को वाणी देने का सशक्त माध्यम काव्य है।'' इसके साथ ही उन्होंने काव्य लेखन संबंधी कुछ मौलिक तथ्यों को भी प्रस्तुत किया।

समारोह के अध्यक्ष प्रधानाचार्य डॉ. ए. एम. कोरवी जी ने मनुष्य जीवन में काव्य के महत्त्व के संबंध में छात्रों को अवगत कराया। समारोह का आभार ज्ञापन विभाग की छात्रा सुमित्रा कोल्हापूरे ने किया। राष्ट्रगीत के साथ समारोह का समापन हुआ। सूत्रसंचालन की भूमिका प्रतिक्षा पाटील और मनिषा कांबले ने निभाई।

### 2.3.2 प्राकृतिक आपदाएँ : स्वरूप और प्रकार

मानव जीवन के विकास में प्रकृति का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रकृति और मनुष्य के बीच गहरा संबंध है। प्रकृति मनुष्य की विभिन्न गतिविधियों में सहायक होती है। प्रकृति अपने आसपास के चीजों का स्वयं उपयोग नहीं करती है बल्कि वह मानव के बेहतर जीवन में सहायता करती है। प्रकृति से अलग मानवीय जीवन की कल्पना करना असंभव है।

आधुनिक युग में मनुष्य अपने ज्ञान और बुद्धि के बलबूते प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की कोशिश करता है। लेकिन आज भी प्रकृति के विभिन्न घटनाओं और स्थितियों से वह अंजान ही है। कुछ बातें उसकी वैचारिकता से भी परे हैं। मनुष्य जीवन में सहायक प्रकृति कभी-कभी रौद्र रूप भी धारण कर लेती है। जिससे अनेक प्राकृतिक आपदाओं का मनुष्य को सामना करना पड़ता है। जैसे- बाढ़, भूचाल, भूस्खलन, त्सुनामी, सूखा और अकाल, बिजली गिरना, ज्वालामुखी आदि प्राकृतिक आपदाएं मानवीय जीवन को तहस-नहस कर देती है।

#### 2.3.2.1 प्राकृतिक आपदाओं के प्रकार

प्राकृतिक आपदाओं को दो भागों में विभाजित किया है -

1. **प्राकृतिक आपदाएँ :**

प्रकृति कभी-कभी विनाशकारी रूप धारण कर तांडव करती हुई नजर आती है। जिसपर मनुष्य का अधिकार नहीं होता। जैसे- बाढ़, सूखा और अकाल, भूकंप, त्सुनामी, तूफान, ज्वालामुखी, भूस्खलन आदि मनुष्य जीवन की गतिविधियों को काफी प्रभावित करते हैं।

2. **मानव–निर्मित प्राकृतिक आपदाएँ :**

मनुष्य प्रकृति के प्रति लालची हुआ है। वह अपनी विभिन्न लालसाओं की पूर्ति के लिए प्रकृति से खिलवाड़ करता रहता है, जिसका परिणाम उसे भुगतान ही पड़ता है। जैसे पेड़–पोधों को काटने से सूखा और अकाल, जलवायु परिवर्तन, भूस्खलन आदि समस्याओं का सामना मनुष्य को करना पड़ रहा है।

**2.3.2.2 प्राकृतिक आपदाएँ : प्रारूप लेखन :**

1. **'इंडोनेशिया में भूकंप** 1000 **हजार लोगों की मृत्यु'**

जकार्ता, तिथि 25 : इंडोनेशिया के सुंबा द्वीप के दक्षिणी तट पर मंगलवार सुबह 6.5 रिक्टर स्केल तीव्रता का भूकंप आया था। इस भूचाल के कारण इंडोनेशिया में भारी संख्या में तबाही मची हुई है और बड़ी मात्रा में जान–माल का भी नुकसान हुआ है। इस भूचाल की वजह से लगभग 1000 लोगों की मृत्यु हो चुकी है। इस भयावह भूचाल से इमारतें मलबे में तब्दील हो चुकी है। मलबे के नीचे कई लोगों के दबे होने की आशंका जताई जा रही है। कितने सारे घायल लोग इधर–उधर पड़े हुए हैं। प्रशासन और कुछ सेवाभावी संस्थाओं के माध्यम से मलबे के नीचे दबे हुए घायलों को बाहर निकालकर उन्हें अस्पताल में पहुंचाने का राहत कार्य किया जा रहा है। मलबे में दबने के बाद भी कुछ लोगों को सही सलामत बाहर निकाल दिया गया है।

इंडोनेशिया में पिछले 60 सालों में हुए भूचाल में से यह भूचाल सबसे अधिक भयावह है। अमेरिकी भूगर्भीय सर्वेक्षण के अनुसार भूकंप का मुख्य केंद्र सुंबा से करीब 40 किलोमीटर की दूरी पर ज़मीन से लगभग 15 किलोमीटर नीचे गहराई में केंद्रित है। इंडोनेशिया में आए इस भूचाल के झटकों से पूर्वी तिमोर, मलेशिया, सिंगापुर और फिलीपींस में 20 लोगों की मृत्यु हो चुकी है। इसके साथ ही 50 से अधिक लोग गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। अंदमान और निकोबार द्वीपसमूह पर भी कई लोगों के मौत और घायल होने की खबरें जताई जा रही है। इंडोनेशिया के सिगी बिरोमारू जिले में भूकंप के झटकों से अनेक मकान गिर गये हैं। उसमें भी लगभग 50 से अधिक लोग मलबे के नीचे दबे होने की आशंका है। वहां भी बचावकर्मियों द्वारा उनको बाहर निकालने का कार्य युद्धस्तर पर जारी है।

भूकंप का पहला झटका लगने पर इंडोनेशिया प्रशासन ने रेडियो के द्वारा लोगों को अपने घरों से बाहर निकलने की सूचना दी गई थी। कुल मिलाकर भूकंप के 10 झटके लगे थे। मरनेवालों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। इंडोनेशिया का भारी आर्थिक नुकसान हो चुका है। इंडोनेशिया की सेना भी बचाव कार्य में जुट गई है। देश के राष्ट्रपति ने अंतरराष्ट्रीय मदद की गुहार भी लगाई है। भारत ने इंडोनेशिया की इस मुश्किल घड़ी में उनके साथ खड़ा रहने की अनुमति दर्शायी है और एक करोड़ रूपए की आर्थिक सहायता प्रदान की है। कई ऐसे क्षेत्र अब भी हैं, जो सरकार के बचाव प्रयासों के केंद्र में नहीं है। भूचाल के बाद हवाई जहाज और रेल सुविधा पर भी अस्थाई रूप से रोक लगाई गई है। कई रास्तों पर दरारें भी पड़ चुकी है। इस आपदा को राष्ट्रीय आपदा के रूप में घोषित किया गया है।

**2.3.2.3 प्राकृतिक आपदाएँ : समाचार लेखन की विशेषताएँ :**

प्राकृतिक आपदाओं के कहर के कारण मानवीय जीवन में इसका भारी नुकसान होता है। मनुष्य को कई दिनों तक इसके परिणाम भुगतने पड़ते हैं। इस कारण मनुष्य का दैनंदिन जीवन भी प्रभावित हो जाता है। प्राकृतिक आपदाओं के समाचार लेखन की विशेषताएँ निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है –

1. समाचार लेखन में रोचकता, उत्कंठा एवं जिज्ञासा का होना अत्यंत आवश्यक है।
2. इसमें काल्पनिक बातों के लिए कोई स्थान नहीं होता है।
3. मुख्य घटना से संबंधित अन्य घटनाओं का वर्णन आवश्यक है।
4. समाचार लेखन से संवेदनात्मक जागृति होना आवश्यक है।
5. समाचार लेखन हृदयस्पर्शी होना चाहिए।
6. घटना का पूरा विवरण होना आवश्यक है।
7. प्रसंगों के अनुरूप भाषा का प्रयोग होना चाहिए।
8. घटना के वर्णन में सत्यता और प्रामाणिकता होनी चाहिए।
9. समाचार लेखन में एकसूत्रता और क्रमिकता होनी चाहिए।
10. प्रभावित या पीड़ित व्यक्तियों का उल्लेख होना आवश्यक है।
11. प्राकृतिक आपदाओं से होनेवाले दूरगामी परिणामों का वर्णन आवश्यक है।

**2.3.2.4 प्राकृतिक आपदाएँ : समाचार लेखन की समस्याएँ :**

प्राकृतिक आपदाओं के समाचार लेखन में निम्नलिखित समस्याएं आती है–

1. समाचार लेखन का विवरण आधा–अधुरा नहीं होना चाहिए।
2. समाचार लेखन कृत्रिम नहीं होना चाहिए।
3. समाचार लेखन में नकारात्मकता नहीं होनी चाहिए।
4. समाचार लेखन में कभी–कभार पदक्रम की ओर अनदेखा किया जाता है, उसे टालना चाहिए।
5. समाचार लेखन में गलतफहमियाँ पैदा होने की गुंजाइश न हो।
6. व्यक्तिगत विचारों का वर्णन आवश्यक नहीं है।
7. अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन नहीं होना चाहिए।
8. तथ्यों से किसी प्रकार की कोई छेड़छाड़ नहीं होनी चाहिए।
9. घटना का अध्ययन करके ही उसका वर्णन करना चाहिए।
10. भाषा द्विअर्थी न हो।

11. प्राकृतिक आपदाओं के स्थल एवं तिथि में एकसूत्रता होनी चाहिए।

12. विषयों की रचना प्रक्रिया को समझकर अलग-अलग शैली को अपनाना चाहिए।

13. प्राकृतिक आपदाओं के प्रसंगों में कोई छोटा-सा अंश भी न छूटे, इसका ध्यान रखना चाहिए।

**2.3.2.5 प्राकृतिक आपदा : समाचार लेखन :**

1. **'सांगली में बाढ़ से भीषण तबाही'**

सांगली, तिथि 15 : सांगली में 10 जुलाई, 2019 से लगातार हो रही बारिश के चलते बाढ़ की भीषण समस्या निर्माण हो चुकी थी। पूरा सांगली शहर बाढ़ की चपेट में आ चुका था। मूसलाधार बारिश के कारण सांगली शहर के पास से बहनेवाली कृष्णा नदी ने विकराल रूप धारण किया था। भारी बारिश के कारण कृष्णा नदी का जलस्तर 45 फुट तक पहुँच चुका था। सांगली शहर पर एक ओर संकट ने कहर ढाया था, वह यह कि कोयना नहर से 80 हजार क्यूसेक पानी प्रति सेकंड छोड़ा जाने के कारण पानी के स्तर में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही थी। पहली बार इतनी अधिक मात्रा में पानी छोड़ने के कारण चारों ओर केवल पानी ही पानी दिखाई दे रहा था। शहर के आसपास के सभी गांव भी बाढ़ की चपेट में आ चुके थे। सरकारी दफ्तरों, दुकानों, मॉल एवं घरों में पानी घूसने की वजह से लोगों का भारी मात्रा में नुकसान हो चुका था। पानी के चपेट में आने के कारण कई लोग पानी में बह गए थे। कुछ लोगों के शव भी मिल नहीं पा रहे थे। लोग अपनी घरों की छतों पर बड़ी संख्या में फँस चुके थे। पानी के तेज बहाव के कारण घरों का अधिकतम सामान पानी के ऊपर तैरने लगा था।

सांगली शहर के रास्तों ने नदी-नालों का रूप धारण कर लिया था। पिछले चार दिनों से बारिश भी थमनें का नाम नहीं ले रही थी। सांगली शहर से अन्य गांवों और जिलों का संपर्क पूरी तरह से टूट चुका था। एनडीआरएफ के जवान लोगों को घरों से सुरक्षित बाहर निकालने का राहत कार्य पूरी मेहनत के साथ कर रहे थे। मनुष्य और पशुओं को बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों से बाहर निकालने में जवानों को काफी हद्द तक सफलता प्राप्त हो रही थी। बहुत सारे युवा मंडल, सेवाभावी संस्थाएं और स्थानीय लोग बचाव कार्य में जवानों की मदद कर रहे थे। प्रशासन ने 3000 हजार से अधिक बाढ़ पीड़ित परिवारों को सुरक्षित स्थानों पर स्थानांतरित कर दिया था। बचाव कार्य के दौरान भ्रम या अफवाहों से बचने के लिए जिला प्रशासन के द्वारा सभी को सूचित किया गया था। सांगली जिले में आनेवाली सभी ट्रेनों और यातायात के सभी साधनों पर रोक लगाई गई है। बाढ़ पीड़ित इलाकों का जायजा लेते हुए महाराष्ट्र सरकार ने लोगों को आर्थिक सहायता देने का आश्वासन भी दिया है। बाढ़ के कारण मृत व्यक्ति के परिवार को दो लाख और गंभीर रूप से घायलों का मुफ्त में इलाज करने का आश्वासन भी दिया था। बाढ़ का प्रकोप कम होने के बाद गंदगी के कारण अनेक बिमारियाँ फैलने की आशंका डॉक्टरों के द्वारा जताईं जा रही थी।

2. **'लातूर में विनाशकारी भूकंप'**

लातूर, तिथि 02 : लातूर और उस्मानाबाद जिले में 30 सितम्बर, 1993 ई. को सुबह ठीक 3.56 मिनट को 6.04 तीव्रता का विनाशकारी भूकंप आया था। इस विनाशकारी भूचाल के कारण पूरे लातूर और

उस्मानाबाद जिले में बहुत बड़ा नुकसान हो गया था। लोग घबराकर इधर-उधर भागने लगे थे। जब सारा देश गहरी नींद में था उस समय लातूर भूकंप से पूरी तरह हिल चुका था। इस भूकंप के कारण 7928 लोगों की मौत और 15854 जानवरों को अपनी जान गंवानी पड़ी थी। इस घटना में 16000 हजार लोग घायल हो गए थे। लातूर और उस्मानाबाद जिले के कई इलाकों में 20000 हजार से अधिक मकान गिर गए थे। बहुत सारे बच्चे, बुढ़े, युवा और महिलाएं मलबे के नीचे दबे हुए थे। चारों ओर केवल भय और आक्रोश का माहौल बना हुआ था। भूचाल सुबह आने के कारण कई लोगों की मृत्यु नींद में ही हो चुकी थी। 6.04 तीव्रता के इस भूकंप ने लातूर और उस्मानाबाद में तबाही मचा दी थी। इस भूकंप के कारण 52 गाँव पूरी तरह से तहस-नहस हो गए थे। भूकंप का मुख्य केंद्र किल्लारी नामक स्थान में जमीन से 12 किलोमीटर नीचे था।

भूकंप की सूचना मिलने के तत्काल महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री तीन घंटे के अंदर राहत कार्य का जायजा लेने के लिए भूकंप स्थित स्थान पर पहुंच चुके थे। प्रशासन ने बड़े साहस और धैर्य के साथ किल्लारी भूकंप पीड़ितों के पूनर्वास का महत्त्वपूर्ण कार्य शुरू किया। तत्काल सोलापुर, परभणी, जालना, बीड़, औरंगाबाद, नांदेड़ के जिला कलेक्टर और उप-जिला कलेक्टर को बुलाकर उन सभी को एक-एक गांव की जिम्मेदारी सौंपी गई। शेल्टर होम का निर्माण शुरू कर दिया गया। कई एनजीओ भी मदद कार्य के लिए आगे आने लगें। एक हजार मेडिकल प्रोफेशनल्स की टीमें बुलाईं गई। अलग-अलग गांवों में उपचार व्यवस्था शुरू की गई। राहत एवं बचाव कार्य के दौरान सेना के जवानों ने हजारों लोगों को मलबे के नीचे से सही सलामत बाहर निकाल दिया था। इस दौरान कुछ स्थानीय लोग भी इस कार्य में सहायता कर रहे थे। मृतकों की संख्या इतनी अधिक थी कि उनकी पहचान करना और उनके रिश्तेदारों का पता लगाना और स्थानीय लोगों की सहमति से अंतिम संस्कार करना एक बड़ी चुनौती बन चुकी थी। शवों के दाह संस्कार के लिए मिट्टी का तेल और लकड़ी मिलने में भी दिक्कते आने लगी थी। प्रशासन ने क्षेत्र में स्वास्थ्य को खतरा बनने से रोकने के लिए युद्धस्तर पर टीकाकरण और दवाओं का वितरण शुरू किया था।

बचाव कार्य के लिए विश्व की विभिन्न संस्थाओं के द्वारा आवश्यक सामग्री भेजी जा रही थी। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री और विधायक दलों ने घटनास्थल पर पहुंचते हुए लातूर और उस्मानाबाद जिले को आर्थिक सहायता की घोषणा कर दी थी। संयुक्त राज्य अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति ने भूकंप पीड़ितों के लिए 950 तंबू, 2.6 मिलियन वर्ग फुट प्लास्टिक कवर जिसमें 20 हजार लोग रह सकते हैं। 2000 डिब्बे, दवाओं के 22 कंटेनर जैसी सामग्री भेजी थी।

### 2.3.3 सामाजिक समारोह का स्वरूप :

मनुष्य समाजशील प्राणी हैं। मनुष्य और समाज दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। मनुष्य के बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। समाज में पारस्परिक सहानुभूति, उदारता, त्याग और सेवा भाव का होना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए समाज में पारस्परिक सद्भावना बढ़ानेवाले समारोहों का आयोजन होना आवश्यक है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए विविध सामाजिक संस्थाओं द्वारा अनेक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इसके साथ नगर निगम, ग्राम पंचायत, जिला परिषद, नगर परिषद, विभिन्न प्रकार

के क्लब, आश्रम, मंदिर, धर्मशाला आदि संस्थाओं द्वारा सामाजिक सुधार संबंधी समारोहों का आयोजन किया जाता है। जिसमें समाज सुधारकों के जन्मदिवस, स्मृति दिवस जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

विभिन्न युवा मंडलों की ओर से भी विविध सामाजिक समारोह संपन्न किए जाते हैं। छत्रपति शिवाजी महाराज, महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, शाहू महाराज, महात्मा गांधी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आदि महान व्यक्तियों के स्मरण में विभिन्न समारोहों का आयोजन किया जाता है। जिससे मनुष्य इन महान महानुभावों के आदर्शों को अपने जीवन में धारण करें। इसके साथ ही रंगोली, भाषण, नृत्य एवं गायन आदि प्रतियोगिताओं का गठन भी किया जाता है।

साहित्य सम्मेलन, सांस्कृतिक सम्मेलन, धार्मिक सम्मेलन आदि से संबंधित विविध समारोह सामाजिक समारोह का हिस्सा बन चुके हैं। संक्षेप में समाज में घटित होनेवाली विभिन्न गतिविधियों और कार्यक्रमों को सामाजिक समारोह के अंतर्गत रखा जाता है।

### 2.3.3.1 सामाजिक समारोह की विवरण शैली :

आधुनिक काल में समाज में अनेक सामाजिक समारोहों का आयोजन होता रहा है। विभिन्न सामाजिक संस्थाएं इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके साथ ही विभिन्न सामाजिक उपक्रमों का गठन भी इसके माध्यम से किया जाता है। इन उपक्रमों का समापन विशिष्ट कार्यक्रम के माध्यम से संपन्न होता है। सामाजिक जीवन में हो रहे बदलावों का चित्रण सामाजिक समारोह में किया जाता है।

समाचार लेखन में सामाजिक समारोहों के प्रस्तुतीकरण और उद्देश्य का समावेश होना अनिवार्य है। समारोह के समाचार लेखन में समारोह स्थान, तिथि, स्थल, समय, समारोह में शामिल हुए व्यक्तियों के नाम, महत्त्वपूर्ण विचार, प्रयोजन आदि बातों के साथ प्रसिद्ध व्यक्तियों के विचारों का समावेश होना आवश्यक है। समारोह के आयोजन के अनुसार प्रस्तुतीकरण होना चाहिए।

समारोह की प्रत्येक गतिविधि का क्रमबद्धता से समाचार लेखन में वर्णन अपेक्षित होता है। समाचार लेखन में सभी महत्त्वपूर्ण बातों और घटनाओं का यथार्थ वर्णन होना चाहिए। अगर किसी सांस्कृतिक समारोह का समाचार लेखन करना हो तो समारोह कहां संपन्न हुआ, प्रमुख अतिथि और अध्यक्ष कौन थे, कार्यपद्धति किस प्रकार की थी आदि बातों का वस्तुनिष्ठ एवं उचित ढंग से वर्णन करना चाहिए। जिससे पाठक समाचार को तन्मयता से पढ़ सकें।

### 2.3.3.2 सामाजिक समारोह का प्रारूप लेखन :

**'राही सरनोबत का सत्कार'**

कोल्हापुर, तिथि 25 : अभिनव सामाजिक संस्था, कोल्हापूर की ओर से कामनवेल्थ गेम्स में गोल्ड मेडल प्राप्त करनेवाली राही सरनोबत को 24 अक्तूबर, 2023 को सम्मानपूर्वक गौरवान्वित किया गया।

कोल्हापुर के अभिनव सामाजिक संस्था के द्वारा प्रति वर्ष विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा शक्ति एवं हुनर का परिचय देनेवाले लोगों को सम्मानित किया जाता है। कोल्हापुर की राही सरनोबत ने निशानेबाजी में अनेक विश्वविक्रम स्थापित किए हैं। वह विश्व कप में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय पिस्टल निशानेबाज है। हाल ही में उन्हें भारत सरकार की ओर से 'अर्जुन पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया है।

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पिस्टल निशानेबाजी के क्षेत्र में उन्होंने किए हुए अनेक विश्वविक्रमों को ध्यान में रखते हुए अभिनव सामाजिक संस्था की ओर से उन्हें गौरवान्वित किया गया है।

इस अवसर पर राही सरनोबत ने बचपन से लेकर अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी बनने तक के सफर में उन्हें किन-किन संघर्षों का सामना करना पड़ा उसका वर्णन किया। साथ ही साहस और निड़रता के साथ महिलाओं को अपने जीवन स्तर में सुधार लाने का संदेश भी दिया। उनके साहस, श्रम प्रवृत्ति और निड़रता जैसे गुणों से श्रोतागण भावविभोर हो गए।

अभिनव सामाजिक संस्था के अध्यक्ष सुशांत जाधव ने कहा कि, ''जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए परिश्रम और साहस के सिवाय दूसरा पर्याय नहीं है।'' इसके साथ ही उन्होंने राही सरनोबत के आदर्शों को सामने रखकर कार्य करने का आवाहन किया। आभार ज्ञापन का कार्य सुनिल कुमार ने किया। राष्ट्रगान के साथ समारोह संपन्न हुआ। सूत्रसंचालन मनिषा जगताप ने किया।

**2.3.3.3 सामाजिक समारोह : समाचार लेखन की विशेषताएँ :**

समाज में एकता, समता और भाईचारे को ध्यान में रखते हुए सामाजिक समारोहों का आयोजन किया जाता है। इन समारोहों के विषयों को पाठक वर्ग तक पहुंचाना समाचार लेखन का प्रधान उद्देश्य होता है। सामाजिक समारोह समाचार लेखन की विशेषताएँ निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है -

1. समाज के बौद्धिक विकास में सामाजिक समारोहों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।
2. समाज की विभिन्न समस्याओं को सुलझाने का प्रयास ऐसे समारोह के समाचार लेखन से किया जाता है।
3. समाज की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ऐसे समारोह का आयोजन किया जाता है।
4. महान विभूतियों के स्मरण के लिए, उनके वंदन के लिए तथा समाज के सामने उनका आदर्श प्रस्तुत करने के लिए ऐसे समारोह का आयोजन किया जाता है।
5. लोगों की छिपीं प्रतिभाशक्ति, हुनर और कुशलता आदि के परिचय के लिए ऐसे समारोह का गठन किया जाता है।
6. शैक्षिक एवं वैचारिक क्षमता का विकास करने के लिए सामाजिक समारोहों का आयोजन होता हैं।
7. विभिन्न क्षेत्रों में कुशलता प्राप्त करने की ऊर्जा ऐसे समारोह देते हैं।
8. स्वस्थ जीवन के सूत्र समाज के सामने रखने के उद्देश्य से सामाजिक समारोह गठित किए जाते हैं।

9. सामाजिक चेतना को जागृत करने के लिए इस प्रकार के समारोह आयोजित किए जाते हैं।

10. समाज में विवेकशील एवं विज्ञानवादी दृष्टिकोण निर्माण करने में ऐसे सामाजिक समारोह सहायक होते हैं।

### 2.3.3.4 सामाजिक समारोह : समाचार लेखन की समस्याएँ :

सामाजिक समारोह के समाचार लेखन में निम्नलिखित समस्याएं आती है–

1. समाचार लेखन में सत्यता का अभाव होता है।
2. कभी–कभी समाचार लेखन में अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया जाता है।
3. दीप प्रज्वलन एवं प्रतिमा पूजन करनेवाले अतिथियों की लंबी सूची दी जाती है।
4. बिना वजह नाट्यपूर्ण बातें लिखी जाती है।
5. समाचार लेखन में कभी–कभी काल्पनिक घटनाओं का वर्णन भी किया जाता है।
6. समाचार लेखन में घटनाओं के क्रम को हर हाल में बनाएं रखना आवश्यक है।
7. कभी–कभी व्यक्तियों के नाम भी बदल दिए जाते हैं।
8. घटनाओं का वर्णन कभी–कभी क्लिष्ट भाषा में किया जाता है।

### 2.3.3.5 सामाजिक समारोह : समाचार लेखन

1. **'कोल्हापूर में धूमधाम से मनाई गई शिव जयंती**

कोल्हापूर, तिथि 20 : कोल्हापूर के शिवप्रेमी युवा मंडल की ओर से 19 फरवरी, 2024 को शाम ठीक 5.00 बजे छत्रपति शिवाजी महाराज जयंती समारोह उत्साह के साथ मनाई गई। इस समारोह के लिए महाराष्ट्र विधानसभा के सदस्य प्रकाश आबिटकर प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह के अध्यक्ष राजर्षि छत्रपति शाहू महाराज के वंशज श्री. संभाजी राजे उपस्थित थे।

समारोह के प्रमुख अतिथि, अध्यक्ष और शिवप्रेमी युवा मंडल के अध्यक्ष सभी ने मिलकर दीप प्रज्वलन किया। साथ ही छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा को पुष्पमाला अर्पण कर पूजन किया गया। समारोह का प्रारंभ कन्या विद्यालय, कोल्हापुर की छात्राओं के मधुर स्वागत गीत से हुआ। शिवप्रेमी युवा मंडल के अध्यक्ष प्रकाश पाटील ने प्रास्ताविक किया। समारोह के अध्यक्ष श्री. संभाजी महाराज जी ने प्रमुख अतिथि प्रकाश आबिटकर जी का स्वागत फुलों का गुलदस्ता देकर किया। श्री. संभाजी महाराज जी का स्वागत युवा मंडल के उपाध्यक्ष राहुल देसाई ने किया। युवा मंडल के सदस्य राज मोहिते ने प्रमुख अतिथि का परिचय करवाया।

समारोह के सुअवसर पर शिव चरित्र के ऊपर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त युवाओं को प्रमुख अतिथियों के हाथों प्रशस्ति पत्र देकर गौरवान्वित किया।

समारोह के प्रमुख अतिथि प्रकाश आबिटकर जी ने अपना मंतव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि, ''शिवाजी महाराज हम सबके ह्रदय में बसे हुए हैं, शिवाजी महाराज की नीतियों पर हमें आगे बढ़ना चाहिए। उनके विचारों का अनुसरण करना चाहिए। साथ ही उन्होंने शिवाजी महाराज के संघर्षशील जीवन के कई उदाहरणों से लोगों को अवगत कराया। श्री. संभाजी महाराज जी ने अपना मंतव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि, ''शिवाजी महाराज के द्वारा स्थापित किल्लों की सुरक्षा करना युवा पीढ़ी का परम कर्तव्य है।'' अतुल देशमुख ने आभार ज्ञापन किया। राष्ट्रगीत से समारोह संपन्न हुआ। समारोह का सूत्रसंचालन लंकेश दर्शन ने सुचारू ढंग से किया।

2. **'गडहिंग्लज में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जयंती समारोह संपन्न'**

गडहिंग्लज, तिथि 15 : गडहिंग्लज नगरपालिका के सभागृह में 14 अप्रैल, 2024 को सुबह ठीक 10.00 बजे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जयंती समारोह का आयोजन बड़े धूमधाम के साथ किया गया था। आंबेडकर विचार मंच, गडहिंग्लज की ओर से यह समारोह आयोजित किया गया था। इस समारोह के लिए रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष मा. रामदास आठवले जी उपस्थित थे। समारोह के अध्यक्ष के रूप में डॉ. जयकुमार सरतापे जी उपस्थित थे। आंबेडकर विचार मंच के सभी पदाधिकारी सदस्य बड़ी संख्या में समारोह के लिए उपस्थित थे।

समारोह के प्रारंभ में प्रमुख अतिथि और समारोह के अध्यक्ष ने मिलकर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी की प्रतिमा का पूजन करके पुष्पमाला चढ़ाई। प्रास्ताविक अविनाश गायकवाड ने किया। अतिथि परिचय का दायित्व पंकज भोसले ने निभाया। प्रमुख अतिथि और समारोह के अध्यक्ष का स्वागत आंबेडकर विचार मंच के सचिव संजय जगदाले ने किया।

इस समारोह के अवसर पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त युवाओं को प्रमुख अतिथियों के हाथों प्रशस्तिपत्र देकर गौरवान्वित किया गया।

प्रमुख अतिथि मा. रामदास आठवले जी ने अपने मंतव्य में कहा कि, ''सदियों से शोषित, दलित पीड़ित वर्ग के जीवन के उद्धार के लिए डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी ने जीवन भर संघर्ष किया है। वे हमेशा लोगों को शिक्षा, संगठन और संघर्ष के लिए प्रेरित करते हैं।'' आज भी उनके विचार हमारे लिए दिशा दर्शक के रूप में कार्य करते हैं। समारोह के अध्यक्ष श्री. जयकुमार सरतापे जी ने अपने मंतव्य में कहा कि, ''समाज में समता और भाईचारे के बीज बोने के लिए डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के विचार अनुकरणीय है।'' संकेत कांबले ने आभार ज्ञापन किया। राष्ट्रगीत से समारोह संपन्न हुआ। समारोह का सूत्रसंचालन ज्योति काळगे ने किया।

3. **'सातारा में महात्मा फुले जयंती समारोह संपन्न'**

कोल्हापुर, तिथि 12 : कोल्हापूर के छत्रपति राजर्षि शाहू सांस्कृतिक भवन में 11 अप्रैल, 2024 को सुबह ठीक 11.00 बजे फुले, शाहू, आंबेडकर प्रतिष्ठान कोल्हापूर की ओर से महात्मा ज्योतिबा फुले जयंती

का आयोजन बड़े धूमधाम के साथ किया गया था। शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापूर के कुलसचिव डॉ. व्ही. एन. शिंदे जी इस समारोह के प्रमुख अतिथि थे। समारोह के अध्यक्ष रोटरी क्लब ऑफ गडहिंग्लज के अध्यक्ष श्री. दीपक मांगले जी उपस्थित थे।

प्रमुख अतिथि और समारोह के अध्यक्ष ने मिलकर दीप प्रज्वलन करके महात्मा ज्योतिबा फुले जी की प्रतिमा को पुष्पमाला अर्पण कर उन्हें नमन किया। इसके पश्चात् विवेकानंद महाविद्यालय, कोल्हापुर की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। समारोह का प्रास्ताविक एवं अतिथि परिचय फुले, शाहू, आंबेडकर प्रतिष्ठान के अध्यक्ष संजीव मोहिते ने किया। प्रतिष्ठान के सदस्य सुनिल पाटील और सचिन गुप्ता ने अपने मंतव्य प्रस्तुत किए।

डॉ. व्ही. एन. शिंदे जी ने अपने मंतव्य में कहा कि, ''महात्मा ज्योतिबा फुले जी ने अपना समग्र जीवन महिलाओं और दलितों के उत्थान में लगाया। उन्होंने जातिगत भेदभाव, छुआछूत, अस्पृश्यता को समाप्त करने का संकल्प किया था।'' साथ ही उन्होंने महात्मा ज्योतिबा फुले के समग्र जीवन चरित्र पर भी प्रकाश डाला। समारोह के अध्यक्ष श्री. दीपक मांगले जी ने अपने मंतव्य में कहा कि, ''आज सभी वर्गों के लोगों को जो शिक्षा का अधिकार मिला है उसके पीछे महात्मा ज्योतिबा फुले जी का योगदान अतुलनीय रहा है। समारोह का आभार ज्ञापन जावेद पटेल ने किया। राष्ट्रगीत के पश्चात् समारोह संपन्न हुआ। श्री. दिगम्बर देसाई ने सूत्रसंचालन किया।

### 2.3.4 क्रीड़ा समाचार लेखन का स्वरूप :

आधुनिक युग में क्रीड़ा क्षेत्र विश्व के सबसे अधिक ध्यान खींचने वाले क्षेत्रों में से एक है। विश्व में प्रतिवर्ष लगातार एक से बढ़कर एक खेलों के आयोजन किए जाते हैं। जिसका पूरी दुनिया को इंतजार रहता है। वर्तमान समय में लोग किसी-न-किसी रूप में खेलों से जुड़े हुए हैं। कई लोग मनोरंजन, स्वास्थ या शौकिया तौर पर खेलों में भाग लेते हैं। इसके पहले खेल केवल मैदानों तक ही सीमित था जिनमें खिलाड़ियों और निर्णायकों के अलावा कुछ दर्शक होते थे और खेलों का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन होता था। परंतु कालांतर में खेलों की वैश्विक लोकप्रियता बढ़ने के साथ खेलों का स्वरूप विस्तृत होता गया है।

समाचार लेखन में क्रीड़ा समाचारों का प्रस्तुतीकरण और उद्देश्य का समावेश होना अनिवार्य है। क्रीड़ा समाचार लेखन में क्रीड़ा स्थान, तिथि, आँकडे, समय, खेल में शामिल प्रमुख खिलाड़ियों के नाम आदि बातों का समावेश होना आवश्यक है। क्रीड़ा समाचार खेलों की दुनिया से जुड़े विषयों और घटनाओं पर केंद्रित होते हैं। खेल समाचार लेखन में खेलों की समग्र जानकारी प्रदान की जाती है। खेल किसने जीता या हारा, टीम और व्यक्तिगत स्कोर और प्रमुख खिलाड़ी आदि का विवरण दिया जाता है। क्रीड़ा के आयोजन के अनुसार प्रस्तुतीकरण होना आवश्यक है।

खेल के प्रत्येक गतिविधि का क्रमबद्धता से समाचार लेखन में वर्णन अपेक्षित होता है। समाचार लेखन में सभी महत्त्वपूर्ण बातों और घटनाओं का यथार्थ वर्णन होना चाहिए। खेल से संबंधित सभी बातों का

वस्तुनिष्ठ एवं उचित ढंग से वर्णन करना आवश्यक है। जिससे पाठक क्रीड़ा समाचार को तन्मयता से पढ़ सकें।

### 2.3.4.1 क्रीड़ा समाचार लेखन की विशेषताएँ :

क्रीड़ा से मनुष्य की मनोवैज्ञानिक जरूरतें पूरी होती हैं। खेल बच्चों की मानसिक क्षमताओं के विकास के साथ-साथ स्वस्थ्य शरीर, शुद्ध बौद्धिक विकास तथा सुदृढ़ शरीर बनाने में एक बड़ी भूमिका निभाते हैं। क्रीड़ा समाचार लेखन की विशेषताएँ निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है –

1. क्रीड़ा समाचार लेखन में क्रमबद्धता होनी चाहिए।
2. क्रीड़ा समाचार का शीर्षक संक्षिप्त और सारगर्भित होना चाहिए।
3. क्रीड़ा समाचार में स्थल, समय वर्णन के साथ प्रभावित व्यक्तियों के नामों का उल्लेख किया जाता है।
4. क्रीड़ा समाचार लेखन में आंकड़ों का सही वर्णन होना चाहिए।
5. क्रीड़ा समाचार में सत्यता और प्रामाणिकता का होना आवश्यक है।
6. क्रीड़ा समाचार लेखन में कल्पना शक्ति के लिए कोई स्थान नहीं है।
7. मन मुताबिक खेल का वर्णन करने से बचना चाहिए।
8. क्रीड़ा समाचार में प्रभावित घटकों की जानकारी विस्तार से देनी चाहिए।

### 2.3.4.2 क्रीड़ा समाचार लेखन की समस्याएँ :

क्रीड़ा समाचार लेखन को प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित समस्याओं से बचना चाहिए।

1. क्रीड़ा समाचार लेखन में अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन करने से बचना चाहिए।
2. क्रीड़ा समाचार लेखन में नकारात्मक भाषा का प्रयोग करने की संभावना होती है।
3. क्रीड़ा समाचार लेखन में कृत्रिम भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
4. क्रीड़ा क्रम का ध्यान रखना चाहिए।
5. क्रीड़ा समाचार लेखन में स्थल, स्थिति एवं खिलाड़ियों के नाम आदि में एकसूत्रता होनी चाहिए।
6. खेल से संबंधित सभी तथ्यों का वर्णन होना आवश्यक है।

### 2.3.4.3 क्रीड़ा समाचार लेखन :

1. **'सावित्रीबाई फुले महाविद्यालय में वार्षिक क्रीड़ा महोत्सव'**

पुणे, तिथि 15 : पुणे के सावित्रीबाई फुले महाविद्यालय में 13, 14 और 15 जनवरी, 2023 को वार्षिक क्रीड़ा महोत्सव का आयोजन महाविद्यालय के मैदान में बड़े धूमधाम के साथ संपन्न हुआ। क्रीड़ा महोत्सव समापन के अवसर पर प्रमुख अतिथि के रूप में प्रसिद्ध क्रिकेटर विनोद कांबली उपस्थित थे। समारोह के अध्यक्ष के रूप में हॉकी के महान खिलाड़ी महेश कुमार सिंह उपस्थित थे।

प्रमुख अतिथि, समारोह के अध्यक्ष और पुणे क्रिकेट प्रिमियर लिग के प्रमुख सुब्रतो रॉय ने मिलकर दीप प्रज्वलन किया। उसके बाद क्रीड़ा महोत्सव की शुरुआत की गई। क्रिकेट, कबड्डी, बास्केटबॉल, फुटबॉल, लंबी छलांग, उँची छलांग, भाला फेंक ऐसे विभिन्न स्पर्धाओं का आयोजन किया गया था। क्रिकेट, कबड्डी, बास्केटबॉल, फुटबॉल आदि क्रीड़ा प्रकार कक्षा-कक्षाओं के बीच में संपन्न हुए। छात्र और शिक्षकों के बीच में भी क्रिकेट का एक रोमांचक मुकाबला संपन्न हुआ। यह मुकाबला महाविद्यालय के सभी पदाधिकारी, कर्मचारी और विद्यार्थी बड़ी उत्सुकता के साथ देख रहे थे।

खेल समाप्त होने के बाद प्रमुख अतिथि विनोद कांबली ने सभी खिलाड़ियों की प्रशंसा की। विजेता दल को प्रमुख अतिथि के हाथों सम्मानित किया गया। अतः में संस्था सचिव डॉ. अनिल जोशी जी ने उपस्थित सभी मान्यवरों, अध्यापकों, खिलाड़ियों तथा उपस्थितों का आभार ज्ञापन किया। राष्ट्रगीत से समारोह संपन्न हुआ। क्रीड़ा महोत्सव का सूत्रसंचालन डॉ. निलेश जाधव ने किया।

## 2. **विश्व कप में भारत की पाकिस्तान पर रोमांचक जीत'**

न्यूयॉर्क, तिथि 11: भारतीय क्रिकेट टीम के गोल्डन आर्म कहे जाने वाले जसप्रीत बुमराह की घातक गेंदबाजी और ऋषभ पंत की जुझारू पारी से भारत ने टी विश्व कप 2024 में पाकिस्तान को 6 रन से हरा दिया। भारत और पाकिस्तान के बीच खेला गया इस विश्व कप का सबसे रोमांचक मुकाबला था। न्यूयॉर्क के नासाउ क्रिकेट स्टेडियम में खेला गया मैच बारिश के कारण 50 मिनट विलंब से शुरू हुआ था। पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम ने टॉस जीतने के बाद पहले भारत को बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किया था। बल्लेबाजी  में टीम इंडिया की शुरुआत बहुत ही खराब रही। तेज गेंदबाज नसीम शहा और हारिस रउफ की अगुवाई में गेंदबाजों के उम्दा प्रदर्शन से पाकिस्तान ने भारत को सिर्फ 119 रन के स्कोर पर समेट दिया। भारतीय टीम में सबसे अधिक 44 रण विकेटकीपर ऋषभ पंत ने बनाए थे। नसीम शहा और हारिस रउफ दोनों ने 21-21 रन देकर तीन -तीन विकेट चटकाए।

इसके जवाब में जब पाकिस्तानी टीम लक्ष्य का पीछा करते हुए उतरी तो बाबर आज़म और मोहम्मद रिजवान ने सधी हुई शुरुआत की। हालांकि, बाबर जल्दी आउट हो गए, लेकिन रिजवान टीम इंडिया की जीत में दीवार बनकर खड़े हुए थे और इस दीवार को तोड़ने का काम जसप्रीत बुमराह ने किया। लक्ष्य का पीछा करते हुए 12 वें ओवर तक पाकिस्तान की टीम अच्छी स्थिति में थी। तीन विकेट के नुकसान पर 80 रन बना लिए थे। यहां से टीम इंडिया की तरफ सिर्फ आठ प्रतिशत जीत दिख रही थी। तभी कप्तान रोहित शर्मा ने 14 वां ओवर बुमराह को थमा दिया। इस ओवर की पहली ही गेंद पर बुमराह ने मोहम्मद रिजवान को बोल्ड कर दिया। रिजवान के विकेट के साथ ही मैच भारत के पक्ष में पलट गया। रिजवान 44 गेंदों में 31 रन बनाकर आउट हुए। रिजवान के इस विकेट के बाद टीम इंडिया के खिलाड़ी पूरे जोश में आ गए। पाकिस्तान को अंतिम पांच ओवर में जीत के लिए 37 रनों की दरकार थी। 18 वें ओवर में हार्दिक पांड्या की गेंद पर पाकिस्तान के उपकप्तान शादाब खान 4 रन बनाकर आउट हुए। 19 वें ओवर में इफ्तिखार खान को बुमराह ने चलता किया। पाकिस्तान के रनों का शतक 19 वें ओवर में पूरा हुआ। पाकिस्तान को अंतिम

ओवर में जीत के लिए 18 रनों की आवश्यकता थी लेकिन अर्शदीप सिंह की सटीक गेंदबाजी के कारण पाकिस्तान इस लक्ष्य को पार नहीं कर सका। इस रोमांचक मुकाबले में पाकिस्तान की 6 रनों से हार हुई। मॅन ऑफ द मैच तीन महत्त्वपूर्ण विकेट चटकाने वाले तेज गेंदबाज बुमराह को चुना गया।

3. **'भारतीय हॉकी टीम की विशाल जीत, सिंगापुर को 16-1 से रौंदा'**

चीन, तिथि 1 : एशियन गेम्स, 2023 में भारतीय हॉकी टीम ने ग्रुप स्टेज के दूसरे मैच में सिंगापुर को 16-1 से करीरी शिकस्त दी। भारत ने शुरुआत से ही मैच में बढ़त बनाकर रखी थी। भारत ने पहले क्वार्टर में 1 गोल के साथ शुरुआत कर दी थी। इसके बाद टीम का गोल करने का सिलसिला रुका ही नहीं और भारत ने एक के बाद एक गोल दागे और शानदार जीत अपने नाम हासिल की। कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने 4 गोल किए। वहीं मनदीप सिंह ने गोल की हैट्रिक लगाई। इससे पहले भारतीय हॉकी टीम ने ग्रुप स्टेज के पहले मैच में उज्बेकिस्तान को 16-0 से करारी शिकस्त दी थी। आज हरमनप्रीत सिंह की कप्तानी वाली टीम इंडिया ने सिंगापुर को 16-1 से रौंद दिया है। मैच में भारत के लिए पहला गोल मनदीप सिंह ने 13 वें मिनट पर किया। पहला क्वार्टर खत्म होने तक भारत ने 1-0 की बढ़त हासिल कर ली थी। फिर दूसरे क्वार्टर की शुरुआत में ललित कुमार ने भारत के लिए 16 वें मिनट पर दूसरा गोल दागा। इसके बाद 22 वें मिनट पर गुजरंत ने टीम के लिए तीसरा और फिर 23 वें मिनट पर विवेक सागर प्रसाद ने टीम के लिए चौथा गोल दागा। फिर कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने स्ट्राइक किया और टीम के खाते में पांचवां गोल डाला दिया। मनदीप सिंह ने 29 वें मिनट पर अपना दूसरा और टीम का छठा गोल स्कोर किया। इस तरह से भारत ने पहले हाफ में 6-0 की बढ़त प्राप्त की थी।

दूसरा सत्र शुरू होने के कुछ देर बाद ही यानी 37 वें मिनट पर मनदीप सिंह ने टीम के लिए 7 वां, शमशेर सिंह ने 38 वें मिनट पर 8 वां गोल किया। फिर 40 वें मिनट पर कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने 2 पेनाल्टी कॉर्नर के ज़रिए गोल किए। इस तरह दूसरे सत्र की शुरुआत के कुछ देर बाद ही भारत ने 10-0 की बढ़त प्राप्त की थी। 42 वें मिनट पर कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने एक और पेनाल्टी कॉर्नर लेते हुए टीम के लिए 11वां गोल दागा। इस तरह तीसरा क्वार्टर खत्म होने तक भारत ने 11-0 की शानदार बढ़त प्राप्त की थी। फिर मनदीप सिंह ने 51 वें मिनट पर और अभिषेक ने 51 वें और 52 वें मिनट पर दो गोल किए। इसके बाद 53 वें मिनट पर सिंगापुर के जकी जुल्करनैन ने टीम के लिए पहला और आखिरी गोल स्कोर किया। इसके 2 मिनट बाद ही भारत के वरुण कुमार ने 55 वें मिनट पर लगातार दो गोल स्कोर कर भारत को 16-1 की बढ़त दिलाई। इस तरह से भारत ने सिंगापुर के खिलाफ शानदार प्रदर्शन करके जीत दर्ज की।

## 2.4 स्वयं–अध्ययन हेतु प्रश्न

**अ) नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

1. समाचार लेखन एक .................... कला है।

   अ) विशिष्ट  ब) सामान्य  क) असामान्य  ड) साधारण

2. समाचार लेखन ............. पद्धति से लिखना चाहिए।

अ) क्रमबद्ध     ब) सामान्य     क) असामान्य     ड) साधारण

3. छात्रों के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से ............ समारोहों का आयोजन किया जाता है।

अ) सामाजिक     ब) धार्मिक     क) महाविद्यालयीन     ड) कार्यालयीन

4. महाविद्यालयीन समारोह लेखन में ............. का होना आवश्यक है।

अ) सत्यता और प्रामाणिकता     ब) अप्रामाणिकता

क) छंदबद्धता     ड) कल्पनाशीलता

5. समाचार पाठकों की........... वृत्ति को जागृत करनेवाला होना चाहिए।

अ) प्रामाणिक     ब) जिज्ञासा     क) आकांक्षा     ड) कल्पना

**ब) नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।**

1. सामाजिक जीवन में हो रहे बदलावों का चित्रण ................ समारोह में किया जाता है।

अ) राजनीतिक     ब) धार्मिक     क) महाविद्यालयीन     ड) सामाजिक

2. प्राकृतिक आपदाओं के प्रकार ............. है।

अ) एक     ब) दो     क) तीन     ड) चार

3. 'भूचाल' ............ आपदा के अंतर्गत आता है।

अ) मानव-निर्मित     ब) प्राकृतिक     क) नैसर्गिक     ड) अनैसर्गिक

4. 'सूखा और अकाल' .............. आपदा के अंतर्गत आता है।

अ) मानव-निर्मित     ब) प्राकृतिक     क) नैसर्गिक     ड) अनैसर्गिक

5. खेल से संबंधित घटनाओं का वर्णन .......... समाचार लेखन में किया जाता है।

अ) कृषि     ब) प्राकृतिक     क) क्रीड़ा     ड) महाविद्यालयीन

## 2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दावली

- जनसंचार - सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाना।
- क्रमबद्धता - सुव्यवस्थित, क्रमानुसार
- मंतव्य - विचार, मत
- ज्ञापन - प्रकट करना
- प्रतियोगिता - प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वंद्विता
- महानुभावों - आदरणीय व्यक्ति, महाशय, महापुरुष
- गुलदस्ता - फूलों का गुच्छा

- महिमा – बड़ाई, गौरव
- प्रस्तुतीकरण – प्रस्तुत करने की क्रिया या भाव।
- समारोह – शुभ आयोजन, शुभ कार्यक्रम, सम्मेलन
- क्रीड़ा – खेल
- आपदा – किसी क्षेत्र में मानव निर्मित या प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न हुई तबाही या दुर्घटना।
- अगुवाई – पथ–प्रदर्शन, अग्रसरता, प्रधानता, नेतृत्व,

## 2.6 स्वयं–अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

अ) 1. (अ) विशिष्ट 2. (अ) क्रमबद्ध

3. (क) महाविद्यालयीन 4. (अ) सत्यता और प्रामाणिकता

5. (ब) जिज्ञासा

ब) 1. सामाजिक जीवन में हो रहे बदलावों का चित्रण सामाजिक समारोह में किया जाता है।

2. प्राकृतिक आपदाओं के प्रकार दो है।

3. 'भूचल' प्राकृतिक आपदा के अंतर्गत आता है।

4. 'सूखा और अकाल' मानव निर्मित आपदा के अंतर्गत आता है।

5. खेल से संबंधित घटनाओं का वर्णन क्रीडा समाचार लेखन में किया जाता है।

## 2.7 सारांश

मानव हमेशा से जिज्ञासू प्रवृत्ति का रहा है। वह जानकारी देने तथा प्राप्त करने की सहज मानवीय प्रवृत्ति से युक्त है। जानकारी उपलब्ध करवानें की प्रणाली को आज समाचार अथवा वृत्तांत लेखन कहा जाता है।

समाचारों में रोचकता, ज्ञान, जिज्ञासा, सत्यता, प्रामाणिकता, असाधारणता आदि महत्त्वपूर्ण बातों का मिलाप रहता है।

महाविद्यालयीन समारोह का समाचार लेखन अत्यंत क्रमबद्ध पद्धति से होना चाहिए। महाविद्यालयीन समारोह का प्रारंभ स्वागत गीत, प्रतिमा पूजन तथा दीप प्रज्वलन या पौधे को पानी डालकर होना चाहिए।

मनुष्य प्रकृति के प्रति लालची हुआ है। वह अपनी विभिन्न लालसाओं की पूर्ति के लिए प्रकृति से खिलवाड़ करता रहता है।

समाज में पारस्परिक सहानुभूति, उदारता, त्याग और सेवा भावना का होना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए समाज में पारस्परिक सद्भावना बढ़ानेवाले समारोहों का आयोजन किया जाता है।

क्रीड़ा समाचार लेखन में क्रीड़ा स्थान, तिथि, आँकडे, समय, खेल में शामिल प्रमुख खिलाड़ियों के नाम आदि बातों का समावेश होना आवश्यक है। क्रीड़ा समाचार खेलों की दुनिया से जुड़े विषयों और घटनाओं पर केंद्रित होते हैं।

## 2.8 स्वाध्याय

**अ) निम्नलिखित दीर्घोत्तरी प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

1. आजरा महाविद्यालय, आजरा में आयोजित 'हिंदी दिवस समारोह' का समाचार लेखन लिखिए।
2. कोल्हापुर में आयोजित डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जयंती समारोह का समाचार लेखन लिखिए।
3. सतारा में आयोजित शिवजयंती समारोह का समाचार लेखन लिखिए।
4. कोल्हापुर में आयी भीषण बाढ़ का समाचार लेखन लिखिए।
5. बालेवाडी पुणे में आयोजित फुटबॉल प्रतियोगिता का समाचार लेखन लिखिए।

**आ) निम्नलिखित लघुत्तरी प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

1. महाविद्यालयीन समारोह का प्रारूप तैयार कीजिए।
2. प्राकृतिक आपदा का प्रारूप तैयार कीजिए।
3. सामाजिक समारोह का प्रारूप तैयार कीजिए।
4. क्रीड़ा समाचार का प्रारूप तैयार कीजिए।

## 2.9 क्षेत्रीय कार्य

1. किसी दुर्घटना का समाचार लेखन कीजिए।
2. सामाजिक समारोह के समाचार लेखन का संकलन कीजिए।
3. प्राकृतिक आपदाओं की घटनाओं के समाचार लेखन का संकलन कीजिए।

## 2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए संदर्भ ग्रंथ :


1. समाचार लेखन – पी. के. आर्य
2. प्रयोजनमूलक हिंदी और पत्रकारिता – डॉ. दिनेश प्रसाद सिंह
3. प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी
4. पत्रकारिता के आयाम – एस. के. दुबे
5. मीडिया लेखन सिद्धांत और व्यवहार – डॉ. चंद्रप्रकाश मिश्र
6. प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध परिदृश्य – डॉ. रमेशचन्द्र त्रिपाठी, डॉ. पवन अग्रवाल


❑❑❑